मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 52 फरवरी, 2012 अंक : 8

प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2012

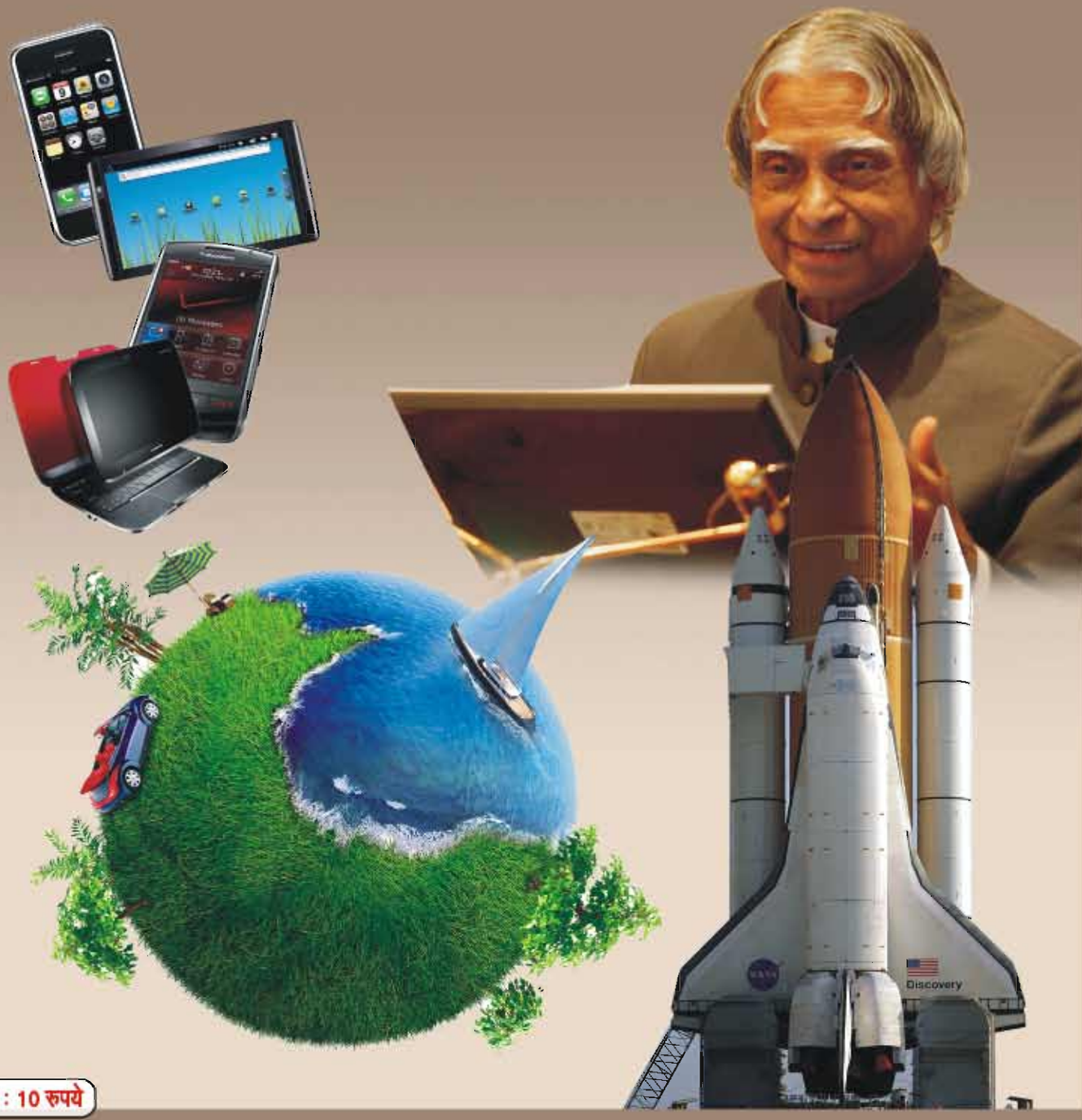

मूल्य : 10 रुपये

19 वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस, जयपुर

दिनांक : 27–31 दिसम्बर, 2011 **स्थान : जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी कैम्पस, जयपुर**

(बाएँ) 19वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के शुभारम्भ अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री शिवराज पाटील एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत। (दाएँ) प्रदर्शनी में प्रोजेक्ट के मॉडल का अवलोकन करते हुए अतिथिगण।

महान वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित करते हुए।

(बाएँ) 19वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के समापन समारोह की मुख्य अतिथि गुजरात की महामहिम राज्यपाल डॉ. कमला, विशिष्ट अतिथि राजस्थान सरकार के माननीय शिक्षामंत्री, श्री बृजकिशोर शर्मा, गृह राज्य मंत्री श्री वीरेन्द्र बेनीवाल तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. राजकुमार शर्मा के साथ अतिथिगण एवं बाल वैज्ञानिक। (दाएँ) समारोह में उपस्थित मंत्रमुग्ध श्रोतागण।

समारोह फोटो सौजन्य : मोहन मितवा, जयपुर

शिविरा पत्रिका

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा का समाचार-विचार मासिक

वर्ष : 52 अंक : 8

फरवरी, 2012

प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2012

प्रधान सम्पादक
आलोक गुप्ता

●

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

●

सहायक
लक्ष्मी नारायण शर्मा
मुकेश व्यास

- एक प्रति 10 रु.
- वार्षिक चंदा
  - शिक्षकों/लिपिकों के लिए 50 रु.
  - संस्थाओं/अन्य व्यक्तियों के लिए 100 रु.
- मनी ऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट **आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय है।
- पोस्टल ऑर्डर/चैक स्वीकार्य नहीं हैं।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –व.सं.

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

इस अंक में

जय विज्ञान	5	**दिशाकल्प**
विशेष रपट		
19वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस विज्ञान के जयघोष से गूँजा गुलाबी शहर	6	**ओमप्रकाश सारस्वत**
19वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस गुलाबी नगरी में रचा बाल वैज्ञानिकों का महाकुम्भ	9	**हरिकृष्ण आर्य**
विज्ञान के साए में शिक्षा और जीवन मूल्य	11	**भगवती प्रसाद गौतम**
झोला पुस्तकालय - 7		
मोन्तेस्सोरी – जीवन और शिक्षा-दर्शन	14	**शिवरतन थानवी**
पुरातन में नयेपन का अहसास	17	**डा. दाऊदयाल गुप्ता**
प्रतिभावान छात्राओं की आदर्श : गार्गी	18	**सोहनलाल प्रजापति**
पहली कक्षा का शिक्षक	19	**लता पाण्डे**
बापू की सीख - 9 अभय	21	**मो.क. गाँधी**
प्रार्थना सभा कैसी हो ?	32	**अलका डॉली पाठक**
कैसे बनाएँ प्रार्थना सभा को प्रभावी	34	**मनीष कुमार गहलोत**
विद्यालयी अनुशासन व शिक्षक की भूमिका	36	**रामवीर सिंह सोलंकी**
प्रारब्ध प्रधान या पुरुषार्थ	37	**किशन कुमार लखाणी**
बालकों को दें, जीवन कौशल शिक्षा	39	**सरदार सिंह चारण**
मानव, ऐसी भी क्या विरक्ति इस जीवन के प्रति ? - पंत	40	**अमरसिंह पाण्डेय**
शिक्षक बने अग्रणी	42	**बालकृष्ण शर्मा**
मूल्य शिक्षा	42	**कमल कुमार जाँगिड़ 'शिक्षक'**
रपट		
39वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता	43	**देवराज जोशी**

स्थाई स्तम्भ

पाठक पीठ - 4/आदेश परिपत्र 23-31/पुस्तक परिचय - 46-47/ चतुर्दिक - 48-49/भामाशाह - 50

मुखावरण

नभांशु श्रीमाली

पाठक पीठ

शिविरा पत्रिका जनवरी 2012 अंक अत्यन्त रोचक और संग्रहयोग्य बनाने हेतु कोटिशः धन्यवाद। माननीय प्रधानमंत्री जी का राष्ट्र के नाम संदेश, मुख्यमंत्री जी एवं शिक्षामंत्री व अधिकारी महानुभावों के संदेश मनन योग्य हैं। बोर्दिया जी का आलेख बहुत सुन्दर प्रस्तुति है। शिक्षा से जुड़े पात्रों का यह कर्तव्य है कि इस कानून का व्यापक प्रचार प्रस्तुत कर शिक्षा की अलख जगाने में सहयोग प्रदान करें।

–रेणु मिश्रा, डाइट, अलवर

शिविरा के माह जनवरी 2012 अंक ने मन मोह लिया। इस लाजवाब अंक ने मुझे पत्र लिखने को मजबूर कर दिया। शिक्षा के अधिकार विषय पर विख्यात शिक्षाविदों एवं लेखकों ने एक से बढ़कर एक लेख लिखे हैं। मेरा कोटि-कोटि नमन्। महान शिक्षाविद् अनिल बोर्दिया साहब की सरल, सटीक व लयबद्ध जानकारी काबिल-ए-तारीफ है। मौर्य साहब द्वारा शिक्षक की तुलना चार्जर से करना दिल को छू गई। सच में एक शिक्षक स्वयं ऊर्जा प्राप्त कर दूसरों को ऊर्जावान करता है।

–जहाँगीर खान, बीकानेर

दिशाकल्प में आयुक्त महोदय ने नव वर्ष के सन्दर्भ में शिक्षक वर्ग हेतु अपने मूल कर्तव्यों की चुनौतीपूर्ण लेकिन सुसंगत व्याख्या की है जिसकी सत्यता समय की सीमा से परे हैं। वस्तुतः शिक्षक को देश-दुनिया में द्रुत गति से परिवर्तित हो रहे नवीन रचनात्मक आयामों से निरन्तर परिचित रहना चाहिए।

–परमिनास मैथ्यू, गोगुन्दा (उदयपुर)

माह जनवरी 2012 की शिविरा बाल शिक्षा का अधिकार विषय पर एक सम्यक ग्रंथ है। इसमें सम्मिलित सद्विचार, आदेश-परिपत्र सभी स्तुत्य हैं। यह विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के लिए भी एक संग्रहणीय अंक है।

–अम्बालाल स्वर्णकार, केकड़ी (अजमेर)

शिविरा पत्रिका जनवरी 2012 का 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009' को समर्पित अंक अपनी नवीन साज-सज्जा के साथ बेहद पसन्द आया। मुखावरण का आकर्षण देखते ही बनता है। इसी को देखकर तेज का उदय होना सकारात्मक सोच का प्रतीक बोर्दिया साहब का शिक्षा के विकास में योगदान हमारी प्रेरणा है। अधिनियम की बिन्दुवार प्रस्तुति गागर में सागर के समान है। वरिष्ठ सम्पादक जी व उनकी टीम बधाई की पात्र है जिन्होंने अथक प्रयासों से इतना बड़ा अंक पहली बार पाठकों के सामने रखा है और वह भी शिक्षा के महत्वपूर्ण विचारों व उम्मीद के साथ।

–रामजीलाल घोड़ेला, लूणकरणसर (बीकानेर)

शिविरा ने शिक्षा के अधिकार जैसे समसामयिक विषय पर विशेषांक देकर अद्भुत कार्य किया है। अब प्रत्येक संस्था प्रधान, शिक्षक और कर्मचारी का नैतिक कर्त्तव्य है कि इस विशेषांक का अध्ययन करें तथा समग्र प्रयत्न करते हुए जन-जन तक इस अधिनियम को पहुँचाएँ तथा सफल बनाएँ ताकि समाज से निरक्षरता का कलंक मिट सके।

–महेन्द्र कुमार शर्मा, भवानी खेड़ा (अजमेर)

शिविरा पत्रिका माह जनवरी, 2012 का अंक शिक्षा का अधिकार अधिनियम को समझने का एक बहुत ही सार्थक प्रयास है। माननीय प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के संदेश से शिक्षकों को नई ऊर्जा प्राप्त होगी। आयुक्त महोदय की विशेष टिप्पणी आत्ममंथन का संदेश दे रही है कि शिक्षक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए नियमित अध्ययन कर विभिन्न प्रसंगों से छात्रों का उत्साह बढ़ाएँ। उनका कहना है कि ज्ञानरूपी पूँजी खर्च करने से कभी कम नहीं होती बल्कि बढ़ती ही है, बड़ा प्रेरणादायी है।

–सालगराम परिहार, बालोतरा (बाड़मेर)

शिविरा पत्रिका का दिसम्बर 2011 अंक देखने-पढ़ने का अवसर मिला। बहुत ही अच्छा लगा। इस अंक में मुझे श्री शिवरतन थानवी का लेख 'भारत में सुकरात' अत्यन्त ही रोचक लगा और इसे पढ़कर Plato's Indian Republic पढ़ने की इच्छा हो गई, पढ़ूँगा। लेख की शैली एवं मैटर सभी अत्यन्त प्रभावी लगा। 'कैसा हो प्राथमिक शिक्षा का अध्यापक' भी अच्छा लेख है, पठनीय चिन्तनीय व आचरण योग्य दिशाबोध है। चतुर्दिक में संकलित सामग्री रोचक और सूचनापरक है।

इधर मुम्बई में वर्षों से कोई ऐसी सम्पूर्ण शैक्षिक पत्रिका देखने को नहीं मिली। मैं शिविरा से प्रभावित हुआ हूँ। 'शिक्षक दिवस प्रकाशन' योजना की जानकारी से भी मैं अत्यन्त प्रभावित महसूस करता हूँ। उत्तम सम्पादन एवं अच्छी-अच्छी रचनाओं के लिए आपका साधुवाद।

–अरुण काबरा, मुम्बई

चिन्तन

विज्ञान और कला का सम्बन्ध विश्व से है और उनके आगे राष्ट्रीयता की सीमाएँ लुप्त हो जाती हैं।

–गेटे

सत्यमेव जयते

आलोक गुप्ता
आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा

"विज्ञान के साथ मानवीयता का होना जरूरी है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने मानवीयताविहीन विज्ञान को एक सामाजिक बुराई माना था। उन्होंने तो यहाँ तक कहा है कि विज्ञान यदि शरीर, मन और आत्मा की भूख मिटाने की ताकत नहीं रखता तो उसे हम विज्ञान नहीं कह सकते। विज्ञान के साथ दर्शन और अध्यात्म की जुगलबंदी आवश्यक है।"

दिशाकल्प

जय विज्ञान

19वीं राष्ट्रीय विज्ञान बाल कांग्रेस का आयोजन 27-31 दिसम्बर 2011 तक राजस्थान की राजधानी जयपुर में हुआ। यह एक विराट आयोजन था। इसे विज्ञान का महाकुम्भ कहा जा सकता है। इसमें सहभागिता करने के लिए बांग्लादेश और आशियान देशों एवं भारत के विभिन्न राज्यों से विज्ञान प्रेमी जयपुर आये जिनमें जिज्ञासु विद्यार्थी, शिक्षक एवं वैज्ञानिक सम्मिलित थे। आयोजन के पाँचवें और अन्तिम दिन महान वैज्ञानिक एवं भारत गणतंत्र के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जयपुर पधारे तथा बाल वैज्ञानिकों से मुखातिब हुए। हकीकत तो यह है कि इस पंचदिवसीय आयोजन के दौरान समूचा जयपुर विज्ञानमय हो गया।

आज हम किसी ऐसे क्षेत्र की कल्पना तक नहीं कर सकते, जो विज्ञान से अछूता रहा हो। विज्ञान ने विभिन्न सुविधाएँ प्रदान कर हमारे जीवन को बहुत सरल बना दिया है। उद्योग धन्धों, परिवहन, सूचना एवं संचार, कम्प्यूटर तथा चिकित्सा के क्षेत्र में हुए वैज्ञानिक चमत्कारों को देखकर विस्मय होता है। हमारे पूर्वज जिन बातों की कल्पना तक नहीं कर सकते थे, उन्हें आज विज्ञान ने साकार कर दिखाया है। इसलिए हम विज्ञान के प्रति ऋणी हैं।

विज्ञान के साथ मानवीयता का होना जरूरी है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने मानवीयताविहीन विज्ञान को एक सामाजिक बुराई माना था। उन्होंने तो यहाँ तक कहा है कि विज्ञान यदि शरीर, मन और आत्मा की भूख मिटाने की ताकत नहीं रखता तो उसे हम विज्ञान नहीं कह सकते। विज्ञान के साथ दर्शन और अध्यात्म की जुगलबंदी आवश्यक है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था कि जहाँ विज्ञान हमें बाहरी दुनिया के निर्माण में सहायता करता है, वही दर्शन हमारे भीतर नैतिक और आध्यात्मिक ताकत प्रदान करता है। भारतीय जीवन दर्शन विज्ञान की इसी मान्यता का समर्थन करता है। इसमें इंसान और इंसानियत को प्रथम स्थान दिया जाता है।

स्कूल शिक्षा के अन्तर्गत प्राथमिक स्तर से ही सामान्य विज्ञान एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक (+2 स्तर) पर विज्ञान के आधारभूत अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी अपने जीवन की भावी दिशा यथा इंजीनियरिंग, मेडिकल, आई.टी. आदि का निर्धारण करता है। इस निर्णायक मोड़ पर उनका उचित मार्गदर्शन आवश्यक है। यह काम हमारे विद्यालय एवं शिक्षक कर सकते हैं।

इस माह 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस है। इसी दिन नोबल पुरस्कार विजेता भारतीय वैज्ञानिक डॉ. सी.वी.रमन ने 'रमन इफेक्ट' की खोज की थी। इस प्रकार भारत के लिए यह एक महान दिन है। यह दिवस हमें यही स्मरण कराता है कि हम नैतिकतायुक्त वैज्ञानिक विकास की दिशा में दो कदम आगे बढ़ाएँ जिसकी परिकल्पना हमारे मनीषी विज्ञानियों एवं चिन्तनशास्त्रियों ने की थी और निःसंदेह यही वह विशेषता है जो भारत को विश्वगुरु कहलाने का गौरव प्रदान करती है।

(आलोक गुप्ता)

विशेष रपट

19वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस

विज्ञान के जयघोष से गूँजा गुलाबीशहर

❑ ओमप्रकाश सारस्वत

वैज्ञानिक गतिविधियों के आयोजन एवं उपलब्धियों की दृष्टि से विगत दो वर्षों ने राजस्थान प्रदेश को विशिष्ट गौरव दिलाया है। वर्ष 2010 के नवम्बर माह में 37वीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी का भव्य आयोजन एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में जयपुर में हुआ। वैज्ञानिक प्रतिभाओं को तलाशने एवं तराशने के लिए भारत सरकार की इंसपायर अवार्ड स्कीम में देशभर में सर्वाधिक एवं सर्वप्रथम प्रस्ताव प्रस्तुत करने पर इस अत्यन्त महत्वाकांक्षी कार्यक्रम का राष्ट्रीय लोकार्पण समारोह गुलाबी नगरी में सम्पन्न हुआ; 14-16 अगस्त, 2011 तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित इंसपायर अवार्ड राष्ट्रीय प्रदर्शनी में राजस्थान के बाल वैज्ञानिक को राष्ट्रस्तर पर सर्वोच्च अवार्ड महामहिम राष्ट्रपति के करकमलों से प्राप्त हुआ। उपलब्धियों के इन्हीं सोपानों के साथ एक नूतन सोपान 27-31 दिसम्बर 2011 को राज्य के नाम लिख गया जब 19वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन जयपुर में हुआ।

बाल विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के कैम्पस में दिनांक 27 दिसम्बर, 2011 को महामहिम राज्यपाल श्री शिवराज पाटील एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने किया। इस अवसर पर राज्यपाल महोदय ने कहा कि विज्ञान की ताकत से देश दुनिया की हर समस्या का समाधान किया जा सकता है। दुनिया में मनुष्य के जीवन से जुड़ी ऐसी कोई चीज नहीं है, जो विज्ञान से प्रभावित न हो। पानी-बिजली जैसी सुविधाओं की सुनिश्चितता विज्ञान से ही हो सकती है। राजस्थान में बिजली की कमी को सौर ऊर्जा के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।

राज्यपाल ने कहा कि बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए बेहतर प्रयास किये जाने चाहिए। बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन इन्हीं प्रयासों में एक है। उन्होंने पुरानी परम्पराओं के अनुरूप बने वैज्ञानिक सिद्धान्तों को भी जीवन में अंगीकार करने तथा उनका उपयोग राष्ट्र के उत्थान में करने की अपील की। आपने वैज्ञानिक शोध को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालयों को अपना योगदान देने का आह्वान किया।

विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन समारोह में अपना उद्बोधन देते हुए माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि किसी भी देश का समुचित विकास बिना विज्ञान के सम्भव नहीं है। वस्तुतः वैज्ञानिक विकास में ही राष्ट्र का विकास निहित है। प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि नेहरूजी ने देश को वैज्ञानिक दृष्टिकोण देने की पहल की थी। उन्होंने इस हेतु केन्द्र में वैज्ञानिक शोध एवं अनुसंधान के लिए आई.सी.ए.आर., एन.पी.एल. और इसरों जैसी शीर्ष संस्थाएँ स्थापित कीं। नेहरू द्वारा स्थापित इस वैज्ञानिक विकास परम्परा को श्रीमती इंदिरा गाँधी और श्री राजीव गाँधी ने आगे बढ़ाया बयालिसवें संविधान संशोधन के द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मूल कर्तव्यों में शामिल किया गया है। मुख्यमंत्री महोदय ने कहा कि प्रतिभाएँ गाँव-ढाणियों में कहीं भी हो सकती हैं, आवश्यकता उनकी पहचान कर समुचित प्रोत्साहन देने की है। विज्ञान प्रतिभाओं की तलाश करने तथा उन्हें प्रोत्साहन हेतु सहयोग प्रदान करने के लिए शुरू की गई इंसपायर अवार्ड योजना का उल्लेख करते हुए श्री गहलोत ने बाल वैज्ञानिकों को हर सम्भव सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। स्वयं अपना उदाहरण देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर वे विज्ञान के छात्र नहीं होते तो पता नहीं, उनकी क्या सोच होती? पहले चमत्कार को नमस्कार करने की अवधारणा थी। बाद में विज्ञान ने यह सिद्ध किया कि चमत्कार तो केवल ट्रिक है।

उद्घाटन समारोह में सूचना एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. राजकुमार शर्मा ने राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन जयपुर में होने को राजस्थान का गौरव बताया। उन्होंने वैज्ञानिक गतिविधियों का प्रसार कर राष्ट्र एवं समाज के विकास में सहयोग करने का आह्वान किया। उद्घाटन के पश्चात अतिथि महानुभावों ने आयोजन स्थल पर लगाई गई विज्ञान प्रदर्शनी का अवलोकन कर बाल वैज्ञानिकों एवं शिक्षकों से बातचीत की।

इस विज्ञान महाकुम्भ ने छात्र-छात्राओं में जोश, उमंग, उत्साह और नवाचार के प्राण फूँक दिए। वहाँ प्रतिभागी बना हर बाल वैज्ञानिक अपने एक्सपेरिमेन्ट को बखूबी समझाने को उतावला

हो रहा था। इस विज्ञान कांग्रेस का केन्द्रीय विषय 'भूमि संसाधन : समृद्धि के लिए उपयोग करें, भविष्य के लिए बचाएं' रखा गया था। इस थीम को आधार बनाकर कोई बाल वैज्ञानिक जमीन को उपजाऊ बनाने का इनोवेटिव आइडिया दे रहा था तो कोई फसलों को पेस्टिसाइड से बचाने का। प्रत्येक राज्य से आये बाल वैज्ञानिकों को यहाँ वृक्षारोपण भी करना था।

बच्चों की आँखों में इनोवेटिव सपने दिखाई दे रहे थे। हर दो बाल वैज्ञानिकों के ऊपर एक शिक्षक लगाया गया था जो उनसे जुड़ी व्यवस्थाओं का समन्वयन कर रहे थे। इस आयोजन में आसियान देशों के 30 से अधिक छात्र एवं समन्वयक शिक्षकों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र के बाद आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग और तकनीकी सत्रों में सक्रिय भागीदारी के साथ ही इन बच्चों ने देश भर के बाल वैज्ञानिकों के साथ चर्चाएँ कीं। समूह के समन्वयक इंडोनेशिया के डीमास ने कहा कि वे यहाँ आकर बहुत उत्साहित हैं। ऐसे आयोजन से परस्पर दोस्ती बढ़ती है तथा विज्ञान को भी पंख लगते हैं।

आयोजन स्थल पर ऐसा लग रहा था जैसे कि समूचा देश आ गया हो। अलग-अलग प्रान्त, तरह-तरह की बोलियाँ और भाँति-भाँति के परिधान और इन सबसे ऊपर विदेशों से आये सम्भागी। यह इन्द्रधनुषीय वातावरण सबका मन मोह रहा था। बिहार की शैलजा श्रीवास्तव कचरे से बनाई ईंटें दिखाने के साथ ही उन्हें बनाने का तरीका समझा रही थी। ये ईंटे प्रदूषणरोधी है। उत्तर प्रदेश की बाल वैज्ञानिक एकता यादव ने नीम की पत्तियों से गोलियाँ बनाई हैं जो जमीन की उर्वरता को बढ़ाती है। किसानों को क्रॉप रोटेशन की जानकारी दिए जाने की वकालात करती एकता ने ऐसे डोमेस्टिक वेस्ट बायोपेस्टिसाइड बनाए हैं जिनसे फसलों को कोई नुकसान नहीं होता।

मुम्बई स्थित एटॉमिक एनर्जी जूनियर कॉलेज के बाल वैज्ञानिक अक्षय और टीम ने गन्ने के टुकड़ों को सीरीज में जोड़कर .67 वोल्ट तक बिजली का प्रवाह दिखाया। चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) के बाल वैज्ञानिक ने लिक्विड नाइट्रोजन के प्रयोग दिखाते हुए बताया कि इस

देश को कुछ देना सीखें : एपीजे अब्दुल कलाम

नमस्कार ! जयपुर आकर आप सबसे मिलकर बहुत खुशी हो रही है। आप सबको नया साल मुबारक हो।

एक पुरानी कविता के जरिए मैं आपको बताता हूँ कि नए साल का जश्न मनाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है। 'मैं समर्थता के साथ पैदा हुआ हूँ, मैं अच्छाई के साथ पैदा हुआ हूँ, मैं विचारों और सपनों के साथ पैदा हुआ हूँ, मैं महानता के साथ पैदा हुआ हूँ, मैं पंखों के साथ पैदा हुआ हूँ, मैं रेंगने के लिए नहीं हूँ, क्योंकि मेरे पंख हैं। मैं 2012 में उड़ने जा रहा हूँ।'

अब मैं आपको बताता हूँ कि विज्ञान क्या दे सकता है। विज्ञान बेहतर दृष्टि देता है। विज्ञान दिमाग से अज्ञान को हटाता है। विज्ञान ने ही बताया कि सूर्य और आकाशगंगा की स्थिति क्या है। विज्ञान ने ही बताया कि चाँद कैसे चमकता है....

आइए, अब बताता हूँ कि डिस्कवर और इंवेंटर कैसे बनें। इसके लिए क्रिएटिव माइंड और इमेजिनेशन जरूरी है। साथ ही टीचर्स और पेरेंट्स में क्रिएटिव और इमेजिंग माइंड्स को विकसित करने की क्षमता होनी चाहिए। अब मैं बताता हूँ कि दुनिया के महान डिस्कवरर और इंवेंटर्स आप बच्चों की उम्र में क्या कर रहे थे। अल्बर्ट आइंस्टाइन ने नौ वर्ष की उम्र में पहला और 12 वर्ष की उम्र में दूसरा सिद्धांत दे दिया था। सी.वी. रमन का जिज्ञासु दिमाग था। उन्हें हर चीज आकर्षित करती थी। एक बार उन्होंने समुद्र और आकाश को देखा तो दोनों नीले नजर आ रहे थे। उनके दिमाग में सवाल आया कि इनका रंग नीला क्यों है। यही साधारण सवाल उन्हें नोबेल पुरस्कार तक लेकर गया। उन्होंने रमन इफैक्ट का आविष्कार किया और 1930 में पहली बार किसी एशियन को यह सम्मान मिला। अब बताता हूँ कि कैसे एक स्ट्रीट बॉय को नोबेल पुरस्कार मिला। चार साल से ज्यादा इटली की गलियों में भटकने के बाद वह नौ साल की उम्र में माँ को वापस मिला। इसके बाद नॉलेज और हार्ड वर्क के दम पर उन्होंने जेनेटिक्स में काम करते हुए नोबेल अवॉर्ड जीता।

एक वैज्ञानिक की विशेषता होती है कि वह कुछ भी असंभव नहीं समझता। दोस्तो, अब मैं अपने बारे में बताता हूँ। मैं जब दस वर्ष का था, तो प्राइमरी स्कूल में एक बार मेरे टीचर सुब्रह्मण्यम अय्यर क्लासरूम में आये। ब्लैक बोर्ड पर एक पक्षी को रेखांकित कर बताया कि पक्षी कैसे उड़ता है। उसी दिन से उन्होंने मेरे जीवन में एक लक्ष्य डाल दिया।

विद्यार्थी - *जिज्ञासा का हल ढूंढें :* "आप जो बनना चाहते हैं, उस पर दृढ़ता से कायम रहें। शिक्षकों से हर जिज्ञासा का समाधान हासिल करें, खुद पर आत्मविश्वास बनाए रखें। मैं सब कुछ कर सकता हूँ, का भाव रखें। छोटा संकल्प लेना अपराध है, नववर्ष में बड़ा संकल्प लें।,,

युवा - *कुछ भी असंभव नहीं :* "कुछ भी असंभव नहीं है। जो असंभव की बात करें उनके पास भी न जाएँ। इतना साहस हो कि खुद सफलता हासिल करें और दूसरों की कामयाबी पर खुश हों। हमेशा सोचें कि देश के लिए क्या कर सकते हैं, क्या दे सकते हैं। देश को देना सीखें।"

महिलाएं - *बेखौफ होकर आगे बढ़ें :* "1910 में सुब्रह्मण्यम लिखित कविता 'इमर्जिंग वीमन' सुनाते हुए बोले, देश की महिला आत्मविश्वास के साथ बगैर डरे सिर ऊँचा किए, अपने सिद्धांतों पर चलते हुए आगे बढ़ें। सुसंस्कारी हो और अज्ञानता दूर करें। देश में हर महिला ऐसी हो।"

जयपुरवासी - *सब 5-5 पौधे लगाएं :* "शहर के 25-30 किमी. आस-पास जाएं। समय मिले वहाँ के 5 अनपढ़ लोगों को पढ़ाने का जिम्मा लें। साथ ही सभी व्यक्ति 5 पौधे लगाएं। शहर के लोग शाम को अस्पताल जाएं और बेसहारों के लिए फल-फूल ले जाएं, उनकी मदद करें।"

गैस को किस तरह दो सैकण्ड में फूलों को सुखाने से लेकर 4 मिनट में आइस्क्रीम बनाने तक के काम में लिया जा सकता है।

कोटा के बाल वैज्ञानिकों ने वैदिक तरीकों से गणित की समस्याओं को आसानी से हल कर दर्शकों को आकर्षित किया। इस अवधि में बाल वैज्ञानिकों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दूसरे शहरों में बैठे वैज्ञानिकों से इंटरेक्शन किया तथा तारामण्डल सम्बन्धी शो में टेलीस्कोप के माध्यम से आकाशीय ग्रह नक्षत्रों की कार्यप्रणाली को समझा विज्ञान कांग्रेस में यह बात निष्कर्ष के रूप में उभर कर आई कि विज्ञान के नियम केवल विकास में ही सहायक नहीं होते बल्कि वे अंधविश्वासों से भी मुक्ति दिलाते हैं। विज्ञान कांग्रेस के दौरान विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से छात्र-छात्राओं ने यह समझाया कि किस तरह विज्ञान के सिद्धान्तों से ढोंगी बाबा सीधे-साधे लोगों को ठगते हैं। सरदारशहर, राजस्थान के बाल वैज्ञानिकों ने बताया कि चुम्बकीय प्रभाव के प्रयोगों से बिजली और ईंधन को बचाया जा सकता है। इसे सिद्ध करने के लिए उन्होंने सीढ़ियों पर चढ़ने से बिजली बनाने और चुम्बकीय प्रभाव से मिसाइल लांच करने जैसे मॉडल प्रदर्शित किए।

हिमाचल प्रदेश की बाल वैज्ञानिक मधुबाला और टीम ने ग्रामीण क्षेत्रों की मिट्टी की कृषि अनुसंधान केन्द्र में जाँच करवाई। फिर वहाँ के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर दलहन फसलों के लिए मिट्टी के हैल्थ कार्ड का प्रारूप तैयार किया। अब यह टीम मिलकर क्षेत्र में मिट्टी की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए जागरूकता अभियान चला रही है। जयपुर के बाल वैज्ञानिक अशोक आसरानी ने पोलियो ग्रसित बच्चों को खड़ा रखने का अभ्यास कराने में मददगार उपकरण बनाकर उनका प्रदर्शन किया। वे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा सम्मानित हो चुके हैं।

महाराष्ट्र के ऐश्वर्या एण्ड टीम ने मंडारा क्षेत्र की भूमि की मिट्टी में जिंक की मात्रा पर प्रयोग कर जिंक डेफिशिएंसी की तरफ किसानों का ध्यान आकृष्ट किया। बाल वैज्ञानिक कीर्ति और आयशा ने घर बैठे पानी की सहायता से मिलावट की जाँच करने की विधि समझाकर सबको हैरान कर दिया। इस प्रकार भाँति-भाँति के प्रयोग इस आयोजन के दौरान दर्शकों को लुभाते रहे।

इस अवसर पर बाल वैज्ञानिकों द्वारा अपने-अपने राज्यों से लाई गई मिट्टी से भारत के नक्शे की रचना की गई। उन्होंने अपने प्रदेश की मिट्टी की विशेषताएँ भी बताईं। भारतीय भूगर्भ संस्थान के वैज्ञानिक सुरेश पारीक ने मृदा के प्रकार और उसकी विशेषताओं के बारे में ऑडियो-विजुअल प्रस्तुति दी। बाल वैज्ञानिकों ने जयपुर भ्रमण किया। जन्तर-मन्तर का अवलोकन करने वाले बाल वैज्ञानिकों की संख्या 1100 से भी ज्यादा थी। इस शानदार वैधशाला को देखकर वे दंग रह गए। आयोजन के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी राष्ट्रीय एकता एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों की चमक सहज ही में दिखाई देती रही।

आयोजन के पाँचवे और अन्तिम दिन का आकर्षण थे– महान वैज्ञानिक पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम सर। वे जैसे ही कार्यक्रम स्थल पर पधारे विज्ञान का जयघोष होने लगा। हर कोई उत्साहित-रोमाञ्चित। सब खड़े हो गए। बीच-बीच में कुछेक तो नाचने लगे। एक घण्टे से भी अधिक समय तक वे बच्चों के बीच रहे, उनके प्रश्नों के जवाब दिए। अपना ओजस्वी उद्बोधन दिया।

पाँचवे दिन समापन समारोह की मुख्य अतिथि गुजरात की महामहिम राज्यपाल डॉ. कमला थीं। विशिष्ट अतिथि माननीय शिक्षामंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा, गृह राज्यमंत्री श्री वीरेन्द्र बेनीवाल एवं विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री डॉ. राजकुमार शर्मा थे। मुख्य अतिथि ने कहा कि बाल वैज्ञानिक उभरते भारत का भविष्य हैं और इन पर पूरे देश की निगाहें टिकी है। गृह राज्यमंत्री श्री बेनीवाल ने मृदा, जल और वन के संरक्षण के लिए कार्य योजना बनाने पर जोर दिया। शिक्षामंत्री श्री बृज किशोर शर्मा ने अपने ओजपूर्ण उद्बोधन में कहा कि भारत आज दुनिया की तीसरी शक्ति के रूप में उभर रहा है। यह विज्ञान और हमारे वैज्ञानिकों की देन है। उन्होंने कहा कि राजस्थान शिक्षा विभाग के अन्तर्गत विज्ञान विषय को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार हर सम्भव सहयोग प्रदान करेगी। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. राजकुमार शर्मा ने कहा कि देश तभी विकास करता है, जब वहाँ की विज्ञान और प्रौद्योगिकी मजबूत हो। विभाग के सचिव श्री संजय मल्होत्रा तथा निदेशक डॉ. अमिता गिल ने स्वागत एवं आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. ज्योति जोशी ने किया। इस अवसर पर राज्यों एवं आसियान देशों से आये बाल वैज्ञानिकों को स्मृति चिह्न तथा सर्वश्रेष्ठ प्रोजेक्ट प्रस्तुत करने वाले 25 बच्चों को सम्मानित करने के साथ ही सभी बाल वैज्ञानिकों को नव वर्ष 2012 के उपहार के रूप में गाँधी डायरी भेंट की गई। अगली राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन दिसम्बर 2012 में बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में किया जाएगा।

–वरिष्ठ सम्पादक के साथ में
श्री महावीर प्रसाद गर्ग, प्रधानाचार्य, जयपुर

राज्यपाल महोदय ने फरमाया : अंतरिक्ष से बड़ा इंसान का दिमाग

उन्नीसवीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री शिवराज पाटील ने स्वयं के केन्द्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के मंत्री के समय का एक किस्सा सुनाया। आपने कहा कि एक दिन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने एक बैठक बुलाई जिसमें प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. धवन भी थे। जब इन्दिरा जी ने कहा कि आपके हिसाब से सबसे बड़ा तो स्पेस ही होता है, तब डॉ. धवन ने कहा था कि मानव मस्तिष्क से बड़ा कुछ नहीं होता। विज्ञान के साथ आदमी का मन बड़ा होना आवश्यक है वरना इसका गलत उपयोग होगा। विज्ञान बाँटने नहीं, जोड़ने का काम करता है।

19वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस

गुलाबी नगरी में रचा बाल वैज्ञानिकों का महाकुम्भ

❑ हरिकृष्ण आर्य

बाल विज्ञान कांग्रेस की शुरुआत 1990 में एक छोटे प्रयोग के रूप में ग्वालियर, मध्यप्रदेश में हुई थी। 1993 में प्रथम बार नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन किया गया था। तब से लेकर हर वर्ष दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में 27 से 31 दिसम्बर तक यह पाँच दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न होता है। इस कार्यक्रम का गुणात्मक एवं परिणात्मक फैलाव विभिन्न देशों के बच्चों के भी आकर्षण का केन्द्र है। पिछले वर्षों में जर्मनी, बांग्लादेश, कतर (बहरीन) के प्रेक्षकों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया है।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का उद्देश्य 10 से 17 वर्ष के बालकों को एक मंच प्रदान करना है जहाँ वे अपनी जिज्ञासा को आगे बढ़ा सकें तथा कुछ नया करने की इच्छा पूरी कर सकें। यह कार्यक्रम बालकों को स्थानीय परिवेश में स्थानीय सवालों को समझने एवं उन्हें हल करने की दिशा में प्रयास/प्रयोग करने का एवं वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग का कौशल सीखने का अवसर प्रदान करता है। यह कार्यक्रम बालकों की खोजी-प्रक्रिया को बढ़ावा देता है, वैज्ञानिक चेतना को झकझोरता है तथा प्रयोग, आंकड़ों का संकलन, शोध, विश्लेषण एवं नवाचारयुक्त प्रक्रिया से परिणाम तक पहुँचने के बाद समुदाय से जुड़कर कार्य करने को प्रेरित करता है।

इस प्रकार राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस बालकों को समाज/परिवेश के महत्वपूर्ण सवालों पर सोचने, इनके कारणों को ढूँढ़ने तथा वैज्ञानिक विधि से हल प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर करता है। बालक सम्पूर्ण प्रक्रिया को लिपिबद्ध करते हैं और उसे निर्णायकों एवं दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। रिपोर्ट लेखन एवं प्रस्तुतिकरण हिन्दी, अंग्रेजी अथवा स्थानीय भाषा में किया जा सकता है। इन सम्पूर्ण क्रियाकलापों के माध्यम से वे अपनी संकल्पनाओं, धारणाओं एवं विचारों को साकार स्वरूप प्रदान करने की व्यावहारिक विधि से अवगत होते हैं यानि वे स्वयं करके सीखते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और बाल विज्ञानी से वैज्ञानिक बनने के रास्ते से अवगत हो जाते हैं। यह कार्यक्रम केवल विद्यालय में पढ़ रहे बालकों के लिए ही नहीं, बल्कि ऐसे बालक जो विद्यालय छोड़ चुके हैं या हाशिए पर खड़े जन-समूह के हैं, भी इस कार्यक्रम में शोध-समूह के सदस्य के रूप में भाग ले सकते हैं।

बाल विज्ञान कांग्रेस हेतु प्रति वर्ष एक मुख्य विषय घोषित किया जाता है। बच्चे मुख्य विषय एवं इसके अन्तर्गत चिह्नित उप-विषयों से जुड़ी प्रोजेक्ट्स पर कार्य करते हैं। बालकों को यह कार्य एक समूह (तीन से पाँच) में करना होता है। बालक अपने प्रोजेक्ट मार्गदर्शक शिक्षक (वैज्ञानिक, विज्ञान क्लब के संयोजक, स्वयंसेवी संस्थाओं के विज्ञानकर्मी आदि) के मार्गदर्शन में सम्पन्न करते हैं। शिक्षकों/मार्गदर्शकों के लिए हर वर्ष राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के मुख्य विषय पर विशेष दिशा-निर्देशन कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।

सामान्यतः जुलाई माह में मार्गदर्शक शिक्षकों की अभिमुखीकरण कार्यशालाओं के पश्चात गतिविधि के लिए विषय चुनकर टीम/समूह का पंजीकरण करवाना होता है। उसे आगामी 2 से 3 माह तक प्रोजेक्ट पर कार्यकर उसे पूर्ण करना होता है। अक्टूबर के अन्त में जिला स्तरीय सम्मेलन, नवम्बर के अन्त में राज्य स्तरीय सम्मेलन तथा 27 से 31 दिसम्बर तक राष्ट्र स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। जिला स्तरीय सम्मेलन में चयनित प्रोजेक्ट्स राज्य स्तरीय सम्मेलन में तथा राज्य स्तरीय सम्मेलन में चयनित प्रोजेक्ट्स राष्ट्र स्तरीय सम्मेलन में प्रस्तुत की जाती है। प्रत्येक स्तर से एक निर्धारित संख्या में प्रोजेक्ट्स चयनित कर आगामी स्तर के लिए भेजी जाती है।

इस बार बाल विज्ञान कांग्रेस का मुख्य विषय 'भूमि संसाधन : समृद्धि के लिए उपयोग करें, भविष्य के लिए बचाएँ' था। उक्त मुख्य विषय के अन्तर्गत निम्न छः उप-विषय रखे गये थे– 1. अपनी भूमि को जानिए। 2. भूमि के कार्य। 3. भूमि की गुणवत्ता। 4. भूमि पर मानवीय गतिविधियाँ। 5. भूमि संसाधनों का टिकाऊ उपयोग। 6. भूमि उपयोग पर समुदाय आधारित ज्ञान।

उक्त विषय एवं उप-विषयों पर आधारित कुल 646 प्रोजेक्ट्स देश एवं विदेशों (बांग्लादेश,

मलेशिया, इण्डोनेशिया) से आये बाल वैज्ञानिकों द्वारा इस बाल विज्ञान कांग्रेस में प्रस्तुत किये गये। इन प्रोजेक्ट्स का मूल्यांकन 41 निर्णायकों द्वारा किया गया जो देश के ख्यातिनाम वैज्ञानिक, प्रोफेसर, शोधार्थी एवं शिक्षाविद थे। बाल वैज्ञानिकों के प्रोजेक्ट्स में उनके देश, राज्य, शहर और गाँव की जरूरत साफ झलकती थी। सभी प्रस्तुत किये गये प्रोजेक्ट्स में से निर्णायकों द्वारा चयनित सर्वश्रेष्ठ 25 प्रोजेक्ट्स को पुरस्कृत किया गया। इनमें से प्रथम रहे तीन प्रोजेक्ट्स 3 से 7 जनवरी 2012 को भुवनेश्वर में आयोजित राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में प्रस्तुत किया गया।

शोध प्रोजेक्ट्स प्रस्तुतिकरण के अलावा इस बाल विज्ञान कांग्रेस में बालकों के लिए और भी अनेक वैज्ञानिक गतिविधियाँ आयोजित हुईं जिनमें वीडियो कांफ्रेंसिंग द्वारा देश के प्रमुख वैज्ञानिकों से संवाद, प्रमुख वैज्ञानिकों से फेस-टू-फेस कार्यक्रम के अन्तर्गत रू-ब-रू होकर सीधे संवाद, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई की ओर से लिखित प्रश्नोत्तरी, पोस्टर प्रदर्शनी, तारामण्डल प्रदर्शन, आसमान दर्शन, तकनीकी भ्रमण आदि प्रमुख हैं। इन सभी कार्यक्रमों में बाल वैज्ञानिकों ने खूब आनन्द लिया तथा ज्ञानार्जन भी किया।

बाल विज्ञान कांग्रेस के अन्तिम दिन मिसाइल मैन के नाम से विख्यात विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम बाल वैज्ञानिकों से मिले। डॉ. कलाम को अपने बीच में पाकर मानों बच्चों की खुशी को पंख लग गए। कुछ बच्चे उनकी फोटो अपने कैमरे में कैद करना चाहते थे, तो कुछेक ऑटोग्राफ लेने के लिए लालायित दिखे। सभी के मन में ढेर सारे सवाल थे, जिनके जवाब डॉ. कलाम ने बड़ी सहजता से दिए। उन्होंने इन बच्चों को विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने की सीख दी। आविष्कार और खोज के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि इनमें अद्वितीय होता है सोचने वाला व रचनात्मक मस्तिष्क तथा निरन्तर सवालों की आदत के साथ ही चीजों को अलग दृष्टिकोण से देखना। उन्होंने सी.वी. रमन, आइन्स्टीन, रामानुजन आयंगर, सर जगदीश चन्द्र बोस और मेरियो कैपेची के प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से समझाया कि अभावों के बावजूद प्रबल आत्म विश्वास हो तो सब कुछ सम्भव है। उन्होंने कहा मैं सब कुछ कर सकता हूँ, का भाव रखें। छोटा संकल्प लेना अपराध है, हमेशा बड़ा संकल्प लें। कुछ भी असम्भव नहीं है। जो असम्भव की बात करें उनके पास भी न जाएँ। इतना साहस हो कि खुद सफलता हासिल करें और दूसरों की सफलता पर भी खुश हों। हमेशा सोचें कि देश के लिए क्या कर सकते हैं, क्या दे सकते हैं। देश को देना सीखें।

डॉ. कलाम ने कहा कि हवाई जहाज के आविष्कार से पूर्व कहा जाता था कि कोई भी चीज उड़ नहीं सकती, लेकिन राइट बन्धुओं ने इस धारणा को मिथ्या साबित कर दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षकों में यह क्षमता होनी चाहिए कि बच्चों में रचनात्मकता एवं कल्पनाशीलता का विकास करें। आज के युग में ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है, जिनसे नॉलेज 'रेडियट' हो तथा उनका जीवन पवित्र और पारदर्शी हो। डॉ. कलाम ने कहा कि जब मैं दस वर्ष का था तो मेरे शिक्षक सुब्रमण्यम अय्यर ने ब्लैक बोर्ड पर डायग्राम की सहायता से समझाया कि एक पक्षी कैसे उड़ता है। इसके बाद वे हमें समुद्र के किनारे ले जाकर उड़ते हुए पक्षी को दिखाकर प्रायोगिक रूप पक्षी के उड़ान की क्रिया को समझाया। इस एक साधारण सी घटना ने मेरे जीवन को एक लक्ष्य दे दिया। मैंने विज्ञान का उच्च अध्ययन किया तथा एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण कर एयरोनोटिकल एवं रॉकेट इंजीनियर बना। इसके बाद तो जैसे मेरे पंख लग गए और मैं पक्षियों की तरह उड़ने लगा। उन्होंने बाल वैज्ञानिकों से कहा कि वे भी ऊँची उड़ान भरने के लिए पंख लगाएँ। उन्होंने कहा कि हम धनवान बनने की बजाए चरित्रवान बनें। कुछ नया करेंगे, सपने पूरे करेंगे तो धन व ख्याति अपने आप पीछे आ जाएगी। डॉ. कलाम ने कहा जो बच्चे यहाँ सवाल नहीं पूछ पाए हैं वो अपना सवाल apj@abdulkalam.com पर मेल कर पूछ सकते हैं। उनके प्रत्येक सवाल का तो जवाब दूँगा ही, साथ ही फोटोग्राफ और ऑटोग्राफ भी भेजूँगा।

–प्रधानाचार्य,
78, गुरुनानक नगर, स्ट्रीट नं. 13, हनुमानगढ़ टाउन

विज्ञान शिक्षा पर जोर दिया जाए – प्रो. व्यास

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में बाल वैज्ञानिकों का हौसला अफजाई करने के लिए उपस्थित सुपरिचित शिक्षाविद्, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर के पूर्व अध्यक्ष एवं स्टेट केरिक्यूलम फ्रेमवर्क कमेटी के चेयरमैन प्रो. पी.सी. व्यास से बातचीत करने पर वे इस आयोजन को राज्य के लिए एक ऐतिहासिक घटना बताते हैं। इस प्रकार के आयोजनों से विद्यार्थियों का विज्ञान शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा। प्रो. व्यास की दृष्टि में राज्य में अभी विज्ञान शिक्षा की स्थिति मजबूत नहीं है। अतः इसे और सुदृढ़ कर विज्ञान शिक्षा के विभिन्न आयामों पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है। शिक्षण गतिविधि आधारित हो तथा विज्ञान शिक्षण में प्रयोगधर्मिता के सिद्धान्त का पालन किया जाना चाहिए।

राज्य की पाठ्यचर्या बाबत चर्चा करने पर प्रो. व्यास कहते हैं कि बालकेन्द्रित शिक्षा ही प्रभावशाली शिक्षा होती है। शैक्षिक प्रशासन में इंटरएक्शन से शिक्षकों, शिक्षाधिकारियों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के मध्य समझ पैदा होती है जो सहज शिक्षा का पथ प्रशस्त करती है। हमारी पाठ्यचर्या में हम इस बात पर जोर दे रहे हैं कि राज्य में ऐसा माहौल बने जिसमें बच्चा अपने ज्ञान की स्वयं संरचना कर सके। वह स्वयं अपने स्तर का मूल्यांकन कर सके। उसके लिए किसी प्रकार की परीक्षा की जरूरत ही न रहे।

शिक्षा क्षेत्र में शोध एवं अनुसंधान पर बल दिया जाना आवश्यक है। औसत अध्यापक को केन्द्र में रखकर इसकी व्यूहरचना की जानी चाहिए। इस हेतु एस.आई.ई.आर.टी. से लेकर जिलास्तरीय डाइट संस्थाओं को पुष्ट किया जाना जरूरी है। संस्था प्रधानों की वाक्पीठें मजबूत हों तथा उनकी रपटों को एक्सचेंज किया जाए। शिक्षक शिक्षा के गुणवत्ता पक्ष पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। शिक्षकों में विश्वास किया जाए। उनके सुझावों को व्यवस्था में शुमार किया जावे। शिक्षकों को शिक्षण कार्य के अलावा अन्य कार्यों से मुक्त रखा जावे। विद्यालयों के निरीक्षणों में शैक्षिक एवं सहशैक्षिक पक्षों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। विज्ञान के प्रायोगिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए समुचित प्रयोगशालाएँ होनी तो निहायत जरूरी है। सरकार तो प्राथमिकता के साथ अपने वित्तीय स्रोतों का नियोजन शिक्षा क्षेत्र में कर ही रही है; हमारे शिक्षकों, विशेषकर संस्था प्रधानों को उदारमना भामाशाहों का सहयोग प्राप्त करने के लिए भी प्रयास करना चाहिए।

–व.सं., शिविरा

विज्ञान के साए में शिक्षा और जीवन मूल्य

❑ भगवती प्रसाद गौतम

केरल विश्वविद्यालय, जो 1937 में त्रावणकोर विश्वविद्यालय के नाम से स्थापित हुआ था, इस वर्ष अपनी 'हीरक जयंती' आयोजित कर रहा है। दशकों पूर्व त्रावणकोर में राजशाही हुआ करती थी। यद्यपि वह उस दौर का एक छोटा-सा राज्य था, फिर भी यह बात किसी को भी आश्चर्यचकित कर सकती है कि उच्च शिक्षा के मूल्यों एवं मानदंडों को दृष्टिगत रखते हुए त्रावणकोर के अंतिम शासक चिथिरा तिरुणाल बलराम वर्मा ने नोबल पुरस्कार (1921) से विभूषित विश्वविख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन को छह हजार रुपये मासिक वेतन पर कुलपति पद को सुशोभित करने के लिए आमंत्रित किया था। उस कालखंड में प्रशासनिक कौशल के धनी और मूल्यपरक शिक्षा के प्रबल पक्षधर तत्कालीन दीवान सर सी.पी. रामास्वामी अय्यर राज्य में आधुनिक विज्ञान समेत अनेक क्षेत्रों में होने वाले विकास कार्यों पर सतत दृष्टि जमाए रखते थे। उनके द्वारा ही आइंस्टीन को विश्वविद्यालय में पदस्थापित किए जाने का प्रयास किया गया था, किंतु आइंस्टीन ने विनम्रता पूर्वक असहमति व्यक्त करते हुए इतना ही कहा कि वे अमेरिका की 'प्रिंसटन यूनिवर्सिटी' से जुड़ने का मानस बना चुके हैं। (जनसत्ता, 03.01.2012)

सापेक्षता के सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाले भौतिकशास्त्री आइंस्टीन उन वैश्विक हस्तियों में प्रतिष्ठित थे जो विज्ञान के साए में सार्थक शिक्षा के प्रसारण के साथ-साथ मानवीय जीवन मूल्यों के भी जबरदस्त समर्थक रहे। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964-66) के अध्यक्ष डॉ. दौलत सिंह कोठारी (पद्म विभूषण) उन्हें एकलव्य के द्रोणाचार्य-सम गुरु मानते थे। दिल्ली विश्वविद्यालय में नव भौतिकी प्रयोगशाला की स्थापना के अवसर पर उन्होंने अपने शुभकामना संदेश (24.02.1940) में प्रेम, सौहार्द्र और पूर्वाग्रह-मुक्त विचारों को उजागर करते हुए लिखा था– "This the sentence expressing my good wishes for your new Physics Laboratory : Keep good comradeship and work with love and without pre-conceived ideas and you will be happy and successful in your work."

यह भी जग-जाहिर है कि आइंस्टीन सत्य एवं अहिंसा जैसे नैतिक मूल्यों के अद्वितीय उपासक महात्मा गाँधी और उनके त्याग भरे दर्शन से इतने प्रभावित थे कि जीवन के अंतिम दौर में अपनी बैठक में उन्हें केवल बापू का चित्र ही सुख-सुकून प्रदान करता था। शायद इसी आस्था के चलते ही उन्होंने कहा था– 'भावी पीढ़ियाँ विश्वास भी नहीं कर पाएँगी कि हाड़-माँस वाला दुबला-पतला एक ऐसा इंसान भी कभी इस पृथ्वी पर जन्मा था।'

वस्तुतः अल्बर्टन आइंस्टीन जहाँ आधुनिक विज्ञान के प्रखर प्रतिनिधि हस्ताक्षर थे, वहीं बापू बालकों में अंतर्निहित शक्तियों के समग्र विकास में जीवन मूल्यों के अप्रतिम उद्घोषक रहे। बापू ने जब '3 एच' अर्थात् 'head, heart and hand' के रूप में मस्तिष्क, हृदय और हाथ (दस्तकारी) के प्रशिक्षण पर बल दिया तो उसमें उस व्यक्तित्व-निर्माण का भाव निहित रहा, जिसमें शिक्षा के साथ-साथ विज्ञान और जीवन मूल्य अपरिहार्य एवं अविच्छिन्न रह सकें। इसीलिए आइंस्टीन की मान्यता रही– 'धर्म के बिना विज्ञान पंगु है और विज्ञान के बिना धर्म अंधा।'

इसी प्रकार के चिंतन से प्रभावित होने के कारण शिक्षा आयोग (कोठारी कमीशन) की रिपोर्ट प्रस्तुत हो जाने के कुछ समय पश्चात् डॉ. डी.एस. कोठारी (जिन्हें शिक्षाविद एवं पूर्व शिक्षा निदेशक, राजस्थान – अनिल बोर्दिया ने 'शिक्षा का संत विज्ञानी माना है) ने कहा था– 'यदि यह रिपोर्ट पुनः प्रस्तुत करनी पड़े तो मैं इसका शीर्षक 'शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास' से बदलकर 'शिक्षा एवं चरित्र निर्माण (Education and Character-Building) रखना चाहूँगा। (अनौपचारिका, फरवरी 2011)

यों भी शिक्षा कोरा स्कूली पठन-पाठन और सूचनाओं का संग्रह मात्र नहीं है। वह तो आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है; अनुभवों का सतत विस्तार है। कबीर जैसे संत ने भी कहा था– 'अनभै साँचा' अर्थात् अनुभव ही सत्य है, वही सच्चा गुरु है, वही सच्ची शिक्षा है। सभ्यता की शुरुआत से लेकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस पड़ाव तक अनुभवों का ही एक लम्बा इतिहास रहा है। अभी-अभी देश के जाने-माने पत्रकार और कई पुस्तकों के प्रणेता एस.पी. सिंह का एक आलेख 'Science and Technology : Trigger Social Change' (Sulabh India) पढ़ने को मिला, जिसमें उन्होंने विज्ञान के साथ-साथ प्रौद्योगिकी की अवधारणा को भी सरल शब्दों में 'प्रस्तुत करते हुए लिखा है'– Technology is the systematic study of techniques for making and doing things; science is the systematic attempt to understand and interpret the world. While technology is concerned with the fabrication and use of artefacts, science is devoted to the more conceptual enterprise of understanding the world which depends on the sophisticated skills of literacy and knowledge....."

इसी परिप्रेक्ष्य में देखें तो दुनिया में विज्ञान का आगमन पहले हुआ, जबकि प्रौद्योगिकी का बाद में। हाँ, इन दोनों की पारस्परिक अंतःक्रिया का प्रभाव मध्यकाल (500–1500 AD) में विशेष रूप से दिखाई देने लगा। कालांतर में जेम्सवाट (स्टीम एंजिन), एलेग्जेंडर फ्लेमिंग (एंटीबायोटिक्स), ग्रेगर जोहान मेंडल (जेनेटिक्स), चार्ल्स डारविन (विकासवाद का सिद्धांत), चार्ल्सबेबाज (मैकेनिकल कम्प्यूटर) अल्बर्ट आइंस्टीन (सापेक्षता का सिद्धांत), जे.

रॉबर्ट्स ऑपेनहीमर (परमाणु बम), जोनाज सॉक (पोलियोवेक्सिन), जेम्स वाट्सन (डीएनए), एड मॉसेज़ (न्यूक्लीयर फ्यूज़न) जैसे वैज्ञानिकों की उपलब्धियों के क्रम में अब स्टीव जॉब्स (एप्पल), बिलगेट्स (माइक्रोसॉफ्ट), लेरीपेज़ (गूगल), मार्क जकर बर्ग (फेसबुक) जैसी हस्तियों के साथ ही ऐसी क्रांति का दौर भी आ गया कि सम्पूर्ण विश्व सिमटकर मनुष्य की अंगुलियों के नीचे आ पहुँचा। वैसे यात्रा यहीं थमने वाली नहीं है। वर्ष 2011 में नए-नए स्मार्ट फोन्स, टेबलेट्स और नई-नई तकनीकों का बोलबाला रहा.... और आगे आने वाले समय में तो ऐसा बहुत कुछ होने वाला है कि जीने का अंदाज ही बदल जाएगा।

.....मगर इसी के साथ अब यह सवाल भी उठना स्वाभाविक ही है कि क्या आज की यही शिक्षा वह शिक्षा है जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ आगे बढ़ते हुए श्रेष्ठ चरित्र अथवा व्यक्तित्व निर्माण का वास्तविक दावा कर सकती है? यों भी किसी बालक, किशोर या प्रौढ़ के व्यक्तित्व का स्वयं में कोई स्वतंत्र अस्तित्व या प्रभाव नहीं होता। उसमें विभिन्न आयामों (dimensions) या पक्षों (aspects) का समन्वय होता है। उनमें प्रमुख हैं– शारीरिक (physical), मानसिक (mental), भाषिक (linguistic), सृजनात्मक (creative) और भावात्मक (emotional) पक्ष। स्वास्थ्य (health) का सम्बन्ध शारीरिक एवं मानसिक दोनों पक्षों से होता है। इस दृष्टि से वर्तमान शिक्षा व्यक्तित्व की पूर्णता या उसके सर्वांगीण विकास का दावा केवल सैद्धांतिक चर्चाओं-परिचर्चाओं में ही कर सकती है, व्यावहारिक क्रियाकलापों में नहीं, क्योंकि ज्ञान (knowledge) अपने चरम पर भी हो आये, तब भी नैतिकता और मानवीय मूल्यों के अभाव में वह अधूरी ही रहेगी।

महाविद्यालयी दौर के पाठ्यक्रम में एक पुस्तक पढ़ने का मौका मिला था, वह थी 'Some Tasks for Education' लेखक थे (शायद) सर लिविंगस्टोन। उसकी तीन बातें आज भी अनायास ही याद हो आती हैं– पहली, आधुनिकता का सम्बन्ध किसी तिथि या काल से नहीं, बल्कि मानवीय सोच या दृष्टिकोण से होता है। दूसरी, अर्द्धशिक्षित व्यक्ति समाज के लिए एक अशिक्षित व्यक्ति से भी कहीं ज्यादा घातक सिद्ध हो सकता है और तीसरी यह कि विज्ञान संसार में किसी भी वस्तु या प्राणी के शरीर का भौतिक विश्लेषण तो कर सकता है किन्तु वह उपवन में खिले किसी पुष्प की खूबसूरती अथवा किसी महाकाव्य के अंतर्निहित आनंदकारी भाव-लोक का रस-बोध कराने में कभी समर्थ नहीं हो सकता। इस प्रकार की बातों का सम्बन्ध व्यक्तित्व के भावनात्मक पक्ष के विकास से है, जीवन से जुड़े नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना से है। क्या हैं ये जीवन मूल्य? किन्हीं सैद्धान्तिक या दार्शनिक फेर में न पड़कर सीधे-सरल शब्दों में कहें तो... वे गुण या तत्व अथवा वे प्रवृत्तियाँ और मान्यताएँ जिनके कारण किसी व्यक्ति या व्यक्तित्व के विशिष्ट महत्व का अनुभव होता है, वे ही हैं जीवन मूल्य या मानवीय मूल्य। इन्हें नैतिक-आध्यात्मिक अथवा सही-गलत के बोध या स्वीकृति से जोड़कर भी देखा जा सकता है।

श्री प्रकाश समिति (1959-60) के अनुसार भी कोई ऐसी प्रवृत्ति या धारणा जो हमें 'स्व' के लाभ अर्थात् स्वार्थ के घेरे से मुक्त कर परहित अथवा परोपकार (परमार्थ !) की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती है, वह नैतिक या आध्यात्मिक मूल्य है। ऐसे कतिपयमूल्य हैं– अहिंसा, अनुराग, आनंद, आस्था, एकता, करुणा, कल्याण, कृतज्ञता, त्याग, निर्भीकता, न्याय, परोपकार, प्रेम, भक्ति, ममता, मान, मित्रता, राष्ट्रीयता, विनम्रता, शांति, शौर्य, श्रम, सत्य, सद्भाव, समता, स्नेह, सम्मान, सहयोग, सहिष्णुता, स्वच्छता, स्वाभिमान, स्वाध्याय... आदि।

अद्वितीय शिक्षाविद, दार्शनिक एवं भारतीय गणतंत्र के दूसरे राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् ने एक विशेष उद्बोधन (कोटा, 18 फरवरी 1961) में युद्ध की प्रासंगिकता-अप्रासंगिकता के प्रश्न पर शांति के मूल्य को रेखांकित करते हुए कहा था– "It is easy for us to say that it is one world or no world; either we must abolish war or war will abolish us." इसी वक्तव्य के क्रम में उन्होंने बढ़ती हुई हिंसक प्रवृत्ति और आतंकवाद की ओर संकेत करते हुए सवाल भी उठाया– "Why do we think that when a man of my own community does a wrong, it is no wrong; but if a man of another community does it, is a grave wrong. When I throw an Atom Bomb, it is no wrong; when another man throws an Atom Bomb, it is a grievious sin. Why is it that we have developed this type of compartmental ethics?

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी तो सत्य-अहिंसा को ही वास्तविक धर्म मानते थे और केवल विद्यार्थियों में ही नहीं, शिक्षकों में भी ऐसे ही जीवन मूल्यों के दर्शन करना चाहते थे। उन्हीं के शब्दों में– "Therefore anything that promotes the practice of these virtues is a means for imparting religious education and the best way to do this, in my opinion, is for the teachers rigorously, to practise these virtues in their own person." (Young India, 6.12.1928).

आइंस्टीन ने भी विज्ञान, धर्म और सभी कलाओं को एक ही वृक्ष की विभिन्न शाखाएँ माना। उन्होंने शिक्षा को कभी अलग खाँचे में डालने की कल्पना नहीं की और विज्ञान में भी नैतिक मूल्यों को ही सर्वोपरि रखा।

वैसे इसमें संदेह नहीं कि औद्योगिक क्रांति के सूत्रपात के साथ ही विज्ञान के वरदान बरसने लगे। मानव-जीवन में सुख-सुविधाओं के अंबार लग गये। अब तो जहाँ देखो, विज्ञान के साए में ही जीवन-व्यापन अपरिहार्य हो चला। समाज, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, अध्यात्म.... ऐसा कौन सा क्षेत्र है जहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने अपनी उपस्थिति सिद्ध नहीं कर दी हो, किन्तु इसी के साथ विचारणीय बिन्दु यह भी है कि सहज सुलभ सुविधाओं से भरी-पूरी दुनिया में एक खास तरह के भटकाव का उदय भी हुआ, जिसका प्रभाव पड़ा आज के मनुष्य के जीवन-कौशल पर। हम देखते-देखते कुदरत से दूर जाने

लगे। नैसर्गिक परिवेश को तिलांजलि देकर हम कंकरीट के जंगलों को गले लगा बैठे। सीधी-सच्ची संस्कृति को धता बताकर महानगरीय सभ्यता के मकड़जाल में जा फँसे। वैज्ञानिक और तकनीकी आविष्कारों-उपकरणों से सजे 'जिम्स' को स्टेटस सिंबल बना दिया और सहज सक्रियता वाली दिनचर्या से मुँह मोड़ लिया। योग के नाम पर बड़े-बड़े ताम-झाम तो खड़े कर लिए, किन्तु 'योग से बड़े कर्मयोग' को यानी अपने ही वैयक्तिक कार्यों को भी हम, विशेषकर नई पीढ़ी के लोग हेय दृष्टि से देखने लगे। उन्होंने बरबस ही आलस्य और निष्क्रियता को आभूषण बना डाला। और तो और स्कूली संस्कृति से जुड़ा बच्चा भी सिनेमा, टीवी, कम्प्यूटर और मोबाइल जैसे चार परदों को ही सब कुछ मान बैठा और एक अपरिहार्य बुराई (Compulsory evil) का शिकार हो चला। शनैः-शनैः सहज-सरल मातृभाषा से पलायन कर अंग्रेजी (या इंगलिश) को ही ओढ़ने-बिछाने लगा। छोटे से छोटे काम के लिए भी उसके कदम बहुप्रचारित एवं जग-मग करते बाजार की ओर लपकने-दौड़ने लगे।

इस भयावह स्थिति में अद्भुत अभिनेता चार्ली चेपलिन की एक व्यंग्य-फिल्म की ओर ध्यान चला जाता है जिसमें एक बालक कुर्सी पर बैठा हुआ है। अनायास ही उसका टूथब्रश अपने स्थान से झुकता है, पेस्ट स्वतः उससे जा लगती है और फिर वह बालक के दाँतों तक पहुँचकर उनकी सफाई शुरू कर देता है।... आश्चर्य तो यह है कि फिर भी दर्शक मुस्कराकर-खिलखिलाकर इस आलसी किरदार पर सहमति की मुहर लगा देते हैं। हम शारीरिक विकास एवं संतुलन की बात तो जोर-शोर से करते हैं मगर साथ ही अपने बच्चों को सहज आनंद देने वाले पारम्परिक खेलों से दूर भी करते जाते हैं और आक्रामक बनाने वाले तथा थैलेट्स जैसे विषैले रसायन युक्त चीनी खिलौने दे-देकर उनकी मानसिकता को कुत्सित-प्रदूषित करने से भी बाज नहीं आते। खान-पान में फास्ट फूड के नाम पर जंकफूड (रद्दी आहार) हावी हो चुका है जिसका परिणाम है अपच, मोटापा, सुस्ती, रक्तचाप जैसी शारीरिक और तनाव, अवसाद, नशाखोरी तथा आत्महत्या की स्थिति तक की मानसिक विकृतियाँ। कभी-कभी तो ऐसे बच्चे एवं किशोर आपराधिक आचरण करते हुए हिंसक रूप भी धारण कर बैठते हैं।

हकीकत यह भी है कि जहाँ हर चीज मोबाइल या कम्प्यूटर में कैद हो, वहाँ संवेदनाएँ तो समाप्त होनी ही हैं। प्रेम व सद्भाव भरे पत्रों-संदेशों की तो बात दूर, अब तो श्रेष्ठ-पठनीय पुस्तकों-पत्रिकाओं की ओर भी किसी की नजर ही नहीं उठती। यद्यपि दुनिया में अब तक हुए सवा-डेढ़ लाख आविष्कारों की भीड़ में भी पुस्तक का कोई विकल्प हो ही नहीं सकता, फिर भी स्वाध्याय की प्रवृत्ति समाप्त होती जा रही है। फलस्वरूप भाषा का लालित्य दम तोड़ने लगा है और संप्रेषण की राह में भी अनैतिकता व अश्लीलता की हद तक विकृतियाँ आती जा रही हैं। संवाद हीनता तो बढ़ ही रही है और इसका प्रभाव पारिवारिक-सामाजिक सम्बन्धों पर भी पड़ रहा है।

ध्यातव्य है कि नई पीढ़ी के आदर्श में वे लोग हो गए हैं जो 'ग्लेमर वर्ल्ड' में जीते हैं और अपने क्षेत्र में अपने लिए ही उपलब्धियाँ अर्जित करते हुए यश-लिप्सा में आकंठ तक डूबे रहते हैं। और तो और धर्म एवं राजनीति के ऐसे क्षेत्र, जिनकी भूमिका आध्यात्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय आंदोलनों में अग्रणी एवं अनुकरणीय रही, वे भी अब वैचारिक एवं भावनात्मक प्रदूषण के साए से बच नहीं पा रहे हैं। ऐसे में सवाल उठ ही सकता है, कि इन सब विपरीत स्थितियों तथा अप्रिय विसंगतियों की जड़ कहाँ है।

यों शिक्षा एवं विज्ञान में हमें अनुभवों का आकाश और ज्ञान का अथाह समंदर दिया, मगर इसी के साथ नैतिकता की साँसें उखड़ने लगीं और जीवन मूल्यों का अधोपतन होने लगा। अभी-अभी नए साल की शुरुआत में ही एक दैनिक पत्र में नई दिशा देने वाले सवालों-जवाबों से गुजरने का मौका मिला, जिनमें एक ओर सबसे अमीर लोगों, रणजी ट्रॉफी विजेता टीमों, मिस इंडिया खिताब, नॉबल या पुलित्जर पुरस्कार और ऑस्कर एवार्ड विजेताओं के पाँच-पाँच नाम पूछे गए, जब कि दूसरी ओर स्कूली पढ़ाई में मदद करने वाले कुछ शिक्षकों के, बुरे वक्त में काम आने वाले तीन दोस्तों के, जिंदगी का बहुमूल्य सबक सिखाने वाले पाँच व्यक्तियों के, साथ ही जिनके साथ वक्त गुजारना अच्छा लगता है ऐसे भी पाँच लोगों के नाम बताए जाने थे। पहली स्थिति में निष्कर्ष यह रहा कि निजी स्तर पर सुर्खियों में रहने और बड़े-बड़े पुरस्कार, प्रशस्तियाँ अथवा वाहवाही पाने जैसी उपलब्धियों का अन्य लोगों से कोई दीर्घकालिक सरोकार नहीं होता, जबकि दूसरी स्थिति के सवालों के जवाब बड़े महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय होते हैं क्योंकि उनके सरोकार खुद से नहीं, दूसरों से होते हैं। छोटी हैसियत के चलते भी वे लोग हमेशा याद रहते हैं जो निस्वार्थ भाव से दूसरों को प्रेरणा देते हैं, दिल से दूसरों का ख्याल रखते हैं और उन्हें सच्ची खुशियाँ प्रदान करते हैं।

डॉ. डी.एस. कोठारी का एक उल्लेखनीय कथन है– "We stand at the crossroad of history where the choice is between education and disaster."

जाहिर है, हमारे सामने विकल्प तो शिक्षा ही है, विध्वंस या अन्यान्य भयावह दुर्घटनाएँ नहीं। मगर आज की शिक्षा जिस मोड़ पर ठहर गई है, वहाँ सवाल भी मुँह बाए खड़े हैं और चुनौतियाँ भी।... और ऐसे में इन सबका एक ही समाधान है– जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना, सूक्ष्मता से व्यापकता की ओर, साथ ही वैयक्तिकता से समग्रता की ओर प्रस्थान का उपक्रम। तब काका कालेलकर के चिंतन के अनुरूप शिक्षा खुद-ब-खुद बोल उठेगी कि वह मनुष्य की बुद्धि और समस्त इंद्रियों की स्वामिनी है, कला और कारीगरी उसके हाथ हैं, विज्ञान उसका मस्तिष्क और धर्म उसका हृदय है।

–1-त-8, अंजलि दादाबाड़ी,
कोटा (राज.)-324009

गांधीजी की शिक्षा योजना देश-काल के अनुरूप थी और उसमें उच्च कोटि के शिक्षात्मक तत्वों का समावेश था। यह संभव इसलिए बना कि उनके शिक्षा-विचारों का आधार परिस्थितियों की वास्तविकता, मूल्यों की शाश्वतता और जीवन से सम्बद्धता थी।

झोला पुस्तकालय – 7

मोन्तेस्सोरी – जीवन और शिक्षा-दर्शन

❑ शिवरतन थानवी

शिक्षक की शिक्षा– केवल प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र या डिग्री प्राप्त कर लेने से किसी शिक्षक की व्यावसायिक शिक्षा पूरी नहीं हो जाती है। शिक्षा-प्रबंधकों ने और शिक्षकों ने यह भ्रम पाल रखा है कि एक बार एस.टी.सी. या बी.एड कर लेने मात्र से कोई शिक्षक योग्य शिक्षक बन जाता है। वास्तविकता यह है कि बिना किसी प्रशिक्षण के भी साधारण से साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति, पढ़ाने की पूरी योग्यता रखता है। दो-चार कक्षा पढ़ा हुआ व्यक्ति भी जानता है कि किसी को प्रारम्भिक शिक्षा देनी हो तो कैसे दे और क्या दे। यह वह पढ़ता-पढ़ता स्वतः सीखता है। कोई सिखाता नहीं है। उसे उसका अनुभव सिखाता है। बड़े-बड़े शिक्षाविदों, शिक्षाधिकारियों, शिक्षा-प्रबंधकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों को यह साधारण सी बात समझने में अभी देर लगेगी, लेकिन इसे समझना बहुत जरूरी है।

सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षण– समझना है यह कि कोई भी पढ़ा-लिखा व्यक्ति जब भी जहाँ भी है वह पढ़ाने की योग्यता रखता है। किसी प्रशिक्षण की जरा भी जरूरत नहीं किसी भी स्तर पर शिक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व। दूसरी बात यह समझनी है कि जो पढ़ाता है, चाहे प्रशिक्षित होकर या अप्रशिक्षित होते हुए भी, उसे अपनी व्यावसायिक योग्यता को बढ़ाने के लिए हर समय हर स्तर पर नया ज्ञान प्राप्त करने को सदैव उत्सुक और उद्यत रहना चाहिए। औपचारिक या अनौपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने का उपाय करते रहना चाहिए। अनौपचारिक प्रशिक्षण स्वयं के स्तर पर भी जब जैसी सुविधा हो जारी रह सकता है और बाहरी स्रोतों से भी यह यथासुविधा अल्पकालीन, दीर्घकालीन या पत्राचार से प्राप्त किया जा सकता है।

नया ज्ञान नई तैयारी– आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक स्वयं स्वेच्छा से प्रयत्नशील रहे तथा सरकार या शिक्षा प्रबंधक इसमें उसकी मदद करे। सरकार या शिक्षा-प्रबंधक पाठ्यक्रमों का आयोजन भी करे और यह भी देखें कि हर विद्यालय में शिक्षकोपयोगी साहित्य हमने कितना और किस स्तरीयता का दिया है। सरकार में शिक्षा से जुड़े जितने भी लोग कार्यरत हैं चाहे वे शिक्षाधिकारी हों या शिक्षा सचिव और शिक्षामंत्री, उनका यह कर्तव्य है कि वे शिक्षा-साहित्य की श्रेष्ठता समझने में पारंगतता प्राप्त करें। शिक्षा-साहित्य में शिक्षकोपयोगी साहित्य जितना मूल्यवान है उतना ही मूल्यवान बालोपयोगी और किशोरोपयोगी साहित्य भी है। इनके विषय में हम जितना कुछ जानते हैं उतने से संतुष्ट होकर न बैठें। जानकार लोगों की संगत करके और स्वाध्याय द्वारा अपने आप को समयानुकूल बनाने की चेष्टा नहीं करेंगे तो हम शिक्षा-तंत्र का सही संचालन कभी नहीं कर सकेंगे। हम चाहे किसी भी कितने ही ऊँचे-नीचे पद पर क्यों न हो, हममें यह योग्यता तो होनी ही चाहिए कि हम ग्रहणशील बनें, विनयभाव से नया से नया सीखते रहने को उद्यत रहें। यह उद्यतता ही अर्थात् नया ज्ञान प्राप्त करने की हमारी तैयारी और इच्छा ही हमें हमारे पद के योग्य बनाएगी और हमें अच्छे शिक्षकों और अच्छे शिक्षा संस्थानों के गुणों की परख करना सिखाएगी। अच्छे शिक्षा साहित्य की पहचान कराएगी।

शिक्षकोपयोगी तीन प्रकाशन– शिक्षा सम्बन्धी श्रेष्ठ पुस्तकों पर विशेष ध्यान देने वाले कुछ ही प्रकाशक नजर आयेंगे आपको। आप उन्हें पहचानिए और उनका उपयोग कीजिए। मेरी नजर में अभी तीन प्रकाशक ऐसे हैं जिन्हें सही शिक्षा दृष्टि की पहचान भी है और शिक्षकोपयोगी श्रेष्ठ लेखकों-पुस्तकों में भी जिनकी रुचि है वे हैं– ग्रंथ शिल्पी (दिल्ली), एकलव्य (भोपाल) और मोन्तेस्सोरी बाल शिक्षण समिति (राजलदेसर)। एकलव्य की पुस्तक 'मेरी ग्रामीण शाला की डायरी' (जूलिया वेबर गॉर्डन) की चर्चा मैं शिविरा (मई-जून, 2011) में कर चुका हूँ। जॉन होल्ट और ए.एस. नील की कालजयी कृतियों के अलावा कई अच्छी शिक्षकोपयोगी व बाल-किशोर पुस्तकों का प्रकाशन भी एकलव्य ने किया है। ग्रंथशिल्पी के प्रकाशनों में पाओलो फ्रेरे, कृष्णकुमार, अनिल सद्गोपाल, जॉर्ज डेनीसन, जोनाथोल कोजोल, मूनिसरजा, सिल्विया, एश्टन वार्नर, अंतोन मकारेंको, मरीया मोन्तेस्सोरी, रोहित धनकर आदि के शिक्षा पर कई मूल्यवान ग्रंथ हैं। कुछ की चर्चा हम अगले अंकों में करेंगे।

शिक्षासेवी श्रीबैद– आज हम लेते हैं 'मोन्तेस्सोरी बाल शिक्षण समिति', राजलदेसर का प्रकाशन 'मरीया मोन्तेस्सोरी जीवनी और शिक्षादर्शन', जिसके लेखक हैं संजीव मिश्र। हर पृष्ठ पर रंगीन चित्रों सहित इसका भव्य मुद्रण किया है सांखला प्रिंटर्स, बीकानेर ने और अभूतपूर्व तकनीक से युक्त कलात्मक आवरण और साज-सज्जा से सजाया है प्रसिद्ध कलाकार और कला शिक्षक-लेखक श्री रामकिशन अडिग ने (मूल्य है 150 रु.) हिन्दी पाठकों-शिक्षकों को यह श्री बैद की अत्यन्त मूल्यवान सेवा है। पहले उन्होंने गिजुभाई लिया था, अब मोन्तेस्सोरी को लिया है। पहली पुस्तक ली है मोन्तेस्सोरी का जीवन और शिक्षा-दर्शन। समिति के ऋषितुल्य सचिव श्री कुंदनमल बैद वर्षों से शिक्षा जगत को गिजुभाई का साहित्य दे रहे हैं। अब वे मोन्तेस्सोरी का साहित्य पाठकों-शिक्षकों को देने का संकल्प ले रहे हैं। उन्होंने इस पुस्तक की

भूमिका में लिखा है– 'एक विनम्र पहल हमने की थी माँ मोन्तेस्सोरी बाल शिक्षण समिति खोलकर। इस समिति ने सबसे पहले गिजुभाई बधेका के सम्पूर्ण बाल शिक्षा-दर्शन की 17 पुस्तकों का प्रकाशन किया था। गिजुभाई हमारे कहीं ज्यादा करीब थे (मोन्तेस्सोरी का साक्षात् भारतीय संस्करण बनकर और यों 'मूँछों वाली माँ' रूप में प्रसिद्धि पा कर। –*लेखक*)। उनकी रचनाएँ भी पिछले तमाम बरसों में हमें अनुप्राणित करती रही थी। हम उनके ऋणी रहे हैं। उनकी 17 पुस्तकों का हिन्दी में सामान्य सी कीमत पर प्रकाशन थोड़ा सा कर्जा उतार देने का सिर्फ एक प्रयास मात्र था। अब हम मरीया मोन्तेस्सोरी की सभी महत्वपूर्ण पुस्तकों के प्रकाशन का काम हाथ में ले रहे हैं।

योग्य लेखक संजीव मिश्र– श्री कुंदनमल बैद लगभग 60 वर्ष पहले स्वयं श्री भामरा जैसे मोन्तेस्सोरी शिक्षा पद्धति का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे। उन्हें पता है कि मरीया मोन्तेस्सोरी पूरी दुनिया में बालक-बालिकाओं के बचपन के लिए एक आशा बनकर उभरी थीं। श्री बैद जैसे दुनिया के लाखों लोगों का नजरिया बदल दिया था। दुनिया भर के तमाम शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान उस अनन्त वात्सल्य माँ के लिए ऋणी हो गए थे। श्री बैद ने अनुभव किया कि मरीया मोन्तेस्सोरी के जीवन और शिक्षा-दर्शन को समझने के लिए अब तक कोई भी सुचिन्तित एवं सुलिखित पुस्तक हिन्दी में उपलब्ध ही नहीं है। उन्होंने श्री संजीव मिश्र को इस कार्य के लिए उपयुक्त पाया। श्री मिश्र मूलतः कवि थे, कलाप्रेमी थे, साहित्यानुरागी थे और लेखक व पत्रकार भी थे। शिक्षा में भी उनकी गहरी रुचि थी। उनकी पत्नी श्रीमती अंजु ढड्ढा भी साहित्यानुरागी हैं और वे भी शिक्षा में गहरी रुचि रखती हैं– अध्यापिका हैं। कुंदनमल जी ने मोन्तेस्सोरी पर ग्रंथ रचना का काम सृजनधर्मी लेखक संजीव जी को सौंपा। संजीव जी ने मोन्तेस्सोरी की तमाम कृतियों का निचोड़ निकाल कर परम मनोयोग से बहुत सुंदर रूप में यह कार्य सम्पन्न किया। दुःखद संवाद यह है कि पुस्तक तैयार तो उन्होंने कर दी किन्तु पुस्तक के प्रकाशन से पूर्व उनका आकस्मिक निधन हो गया। मात्र 46 वर्ष की कच्ची उम्र में ही अपने पाठकों को उनकी व्यावसायिक उन्नति का इतना मूल्यवान और उत्तम साधन देकर वे अलविदा कह गए।

डॉक्टर से टीचर– मरीया मोन्तेस्सोरी का जन्म 31 अगस्त 1870 के दिन इटली में हुआ था। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में इटली तो क्या पूरे यूरोप में कोई औरत डॉक्टर होने की कल्पना नहीं कर सकती थी। औरतों का काम था घर सम्हालना। आधुनिकता की थोड़ी शुरुआत हुई तो बहुत हुआ तो औरतों को अध्यापन की छूट मिली। मरीया मोन्तेस्सोरी की स्कूली पढ़ाई पूरी हुई तो उसने फैसला किया कि वह कुछ भी करेगी पर टीचर नहीं बनेगी। मरीया को तब टीचर का काम एकदम बेकार लगता था। वह चाहती थी कि डॉक्टर बने। लेकिन घर में, समाज में, सब जगह उसके इस निर्णय का विरोध हुआ। भले ही वह दृढ़ निश्चयी थी। पूरे इटली में वह पहली लड़की थी जिसे मेडिकल कॉलेज में प्रवेश मिला। पिता इतने नाराज हुए कि उससे बोलना छोड़ दिया। कदम-कदम पर उसे संघर्ष करना पड़ा और अंततः वह डॉक्टर बन गई। और नियति का विचित्र खेल देखो कि एक भिखारिन के बच्चे को रंग-बिरंगे कागजों के टुकड़ों से खेलते हुए अद्भुत आनंद में मगन देखा तो उस बच्चे की निश्छलता ने मरीया का जीवन ही बदल दिया। टीचर का जो काम उसे बेकार लगता था वही काम उसे इतना स्वर्गिक आनन्द दे गया कि वह डॉक्टर तो बनी किन्तु मन बच्चों की खुशियों का खजाना खोजने की तरफ मुड़ गया। पहले बालश्रमिकों की मुक्ति का अभियान चलाया। और फिर धीरे-धीरे उनकी आनन्दमयी शिक्षा के अभियान में जुट गई। संसार में बच्चों की सर्वश्रेष्ठ टीचर बन गई।

मोन्तेस्सोरी पद्धति– कक्षा में प्रवेश करते ही शिक्षक का जिन बच्चों से सामना होता है उनमें कमजोर बच्चों की समस्या उसे सबसे अधिक परेशान करती है। मोन्तेस्सोरी ने इसी समस्या के लिए ऐसे-ऐसे साधनों और सिद्धान्तों की खोज की जिनके सहारे प्रारम्भिक कक्षाओं के विद्यार्थियों की शिक्षा प्राप्त करने की क्षमता और गति में अभूतपूर्व वृद्धि होने लगी। मोन्तेस्सोरी शिक्षण पद्धति और मोन्तेस्सोरी शिक्षण सामग्री का उपयोग करने वाले विद्यालय खुलने लग गए और धड़ाधड़ उनकी संख्या बढ़ती चली गई।

मोन्तेस्सोरी का शिक्षादर्शन या शिक्षा-शास्त्र यह है कि बालमन को समझो, भरपूर स्नेह दो और उसे कोई ऐसी रंग-बिरंगी वस्तुएँ दो जिनको छूकर, देखकर, हिला-डुलाकर, उन पर काम कर सके और अपने मस्तिष्क का भी उपयोग कर सके। बच्चों को ऐसी शिक्षण-सामग्री दो जो उनकी शारीरिक-मानसिक प्रवृत्तियों को सक्रिय कर सके, उनकी इंद्रियों के विकास में सहायक हो सके। ध्यान दें हम, समझें हम, इनके सिद्धान्तों को, तो हमारा

शिक्षण कार्य और अधिक प्रभावकारी दिशाएँ ग्रहण कर सकता है। इनके सिद्धान्त के अनुसार एक शिशु से वयस्क होने की प्रक्रिया में जिन पूर्ण परिवर्तनों के दौर से मानव गुजरता है वे 'संवेदनशील काल' होते हैं। हरेक ऐसे काल के दौरान बालक के व्यक्तित्व में किन्हीं विशेष गुणों-अवगुणों का समावेश होता जाता है जो अंततः उसके वयस्क व्यक्तित्व के अंग बनते जाते हैं। हर 'संवेदनशील काल' में किन्हीं विशेष कार्यों की ओर बच्चे की सहज रुचि होती है। अतः अगर बच्चे की उम्र के इस काल को ध्यान में रखकर तैयार किया परिवेश उसे दिया जाए तो वह उसमें रुचिपूर्वक भाग लेगा और विकास करेगा। शिक्षक या अभिभावक को प्रोत्साहन, दण्ड या भय से यहाँ काम नहीं लेना है। इनका काम बालक को केवल सही परिवेश देना और उस परिवेश में स्वतंत्र गतिविधि की छूट देना भर रहेगा।

उनके इस सिद्धान्त को सामान्यतया विश्वभर के शिक्षाशास्त्री और मनोवैज्ञानिक स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक में संजीव कहते हैं कि 'एक मुक्त, संभावनाशील और सक्षम व्यक्तित्व के विकास का आधारभूत काल जन्म से छह वर्ष तक की अवस्था से है और इसको लेकर मरीया मोन्तेस्सोरी के सिद्धान्त का महत्त्व निर्विवाद है।' बड़े बच्चों में यह प्रक्रिया इतनी नैसर्गिक नहीं होती जितनी छह साल तक के बच्चों में। लेकिन यह ज्ञान हर शिक्षक के लिए अनमोल है।

मोन्तेस्सोरी स्कूल– मोन्तेस्सोरी शिक्षण पद्धति को अपनाने वाले स्कूल का परिवेश छह साल तक के बच्चों की आवश्यकताओं-अपेक्षाओं के अनुसार होता है। विद्यालय में चारों ओर ऐसी सामग्री और सजावट होती है जो इस शिक्षण पद्धति की अपेक्षाओं के अनुकूल होती है। वहाँ अध्यापक नहीं, हर गतिविधि के केन्द्र में बच्चा होता है। ऐसे स्कूल का नक्शा, फर्नीचर, शिक्षण-सामग्री आदि से लेकर दीवारों का रंग, ब्लैकबोर्ड की ऊँचाई, टॉयलेट में कमोड और वाशबेसिन के आकार और ऊँचाई, झूले, खिड़की-दरवाजे आदि सब कुछ ऐसे होते हैं कि जिनका छोटा बच्चा बिना बड़ों की मदद के उपयोग कर सके और खुद को या किसी और बच्चे को अनजाने में चोट न पहुँचाए। ऐसी स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षकों का तैयार किया हुआ कार्यक्रम ज्यों का त्यों लागू नहीं होता बल्कि हर बच्चे की क्षमता व रुचि के अनुसार उसके विकास पर नजर रखी जाती है। शिक्षक परोक्ष रूप से नियंत्रित दिशा देता रहता है।

प्रचार, प्रसिद्धि और मान्यता– जब लोगों को पता चला उनके इस नए प्रयोग और पद्धति की सफलता का तो रोम के सान लोरेन्जो की बस्ती में घटित इस घटना को देखने दुनिया भर के लोग आने लगे। अनेक अध्यापकों और संस्थाओं ने उनकी पद्धति और सिद्धान्तों को समझा और अनेक देशों में अनेक जगहों पर उनकी विधि से शिक्षण के केन्द्रों की स्थापना होने लगी। अद्भुत तीव्रता से प्रचार हुआ, प्रसिद्धि मिली और विश्वव्यापी मान्यता प्राप्त हुई। 'इंटरनेशनल मोन्तेस्सोरी कांग्रेस' की स्थापना हुई (1925) और हेलसिंकी, नीस, एम्सटर्डम, रोम, ऑक्सफर्ड, कोपेनहेगन, एडिनबरा आदि कई स्थानों पर इसके अधिवेशन हुए जिनकी अध्यक्षता खुद मोन्तेस्सोरी ने की। चीन और भारत में उन्होंने बहुत समय बिताया, स्थान-स्थान पर प्रशिक्षण दिए। चेन्नई से कश्मीर तक उन्होंने सैकड़ों शिक्षक प्रशिक्षित किए। इन स्कूलों के बारे में अनेक लेख पत्र-पत्रिकाओं में छपे। दो-तीन साल में ही कई पुस्तकें अध्यापकों, समाजशास्त्रियों और शिक्षाविदों ने लिखीं। स्कूल वालों ने देखा कि इस प्रणाली में बंधन से नहीं, स्वतंत्रता से अनुशासन का जन्म हो रहा था।

मोन्तेस्सोरी की पद्धति उनसे पूर्व के शिक्षाविदों हॉब्स, रूसो, पेस्तालोजी व फ्रोबेल से भिन्न थी। स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व पर इनका खास जोर था जो इनके पूर्ववर्ती शिक्षाविदों की परम्परा के प्रभाव का रूप हो सकता है किन्तु उनकी प्रमुख कार्यपद्धति के मूल में मुख्य प्रेरणा तीन चिकित्सकों की थी। ये चिकित्सक थे परेरा, ईटार्ड तथा सेग्वें। इन तीनों ने गूँगे-बहरों तथा मंदबुद्धि लोगों को सिखाने के प्रयोग किए थे।

मोन्तेस्सोरी की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। अमरीका में 'मोन्तेस्सोरी सोसायटी' बन गई जिसके संस्थापक और अध्यक्ष बने टेलीफोन के आविष्कारक अलेक्जेंडर ग्राहम बैल तथा सोसायटी की सचिव बनी अमरीकी राष्ट्रपति की पुत्री मार्गरेट विल्सन। और वे अमरीका पहुँची तो मेहमान बनी बल्ब समेत सैकड़ों वस्तुओं के आविष्कारक टामस अल्वा एडिसन की। वे भारत भी आईं। चीन भी गईं। अमरीका, यूरोप, भारत और चीन समेत अनेक देशों में उन्होंने व्याख्यान दिए और शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया। शायद श्री कुंदनमल बैद के मोन्तेस्सोरी पद्धति के गुरु श्री भामरा ने भी स्वयं मोन्तेस्सोरी से प्रशिक्षण लिया था। मोन्तेस्सोरी की पहली पुस्तक 'द मैथड ऑव् साइन्टिफिक पेडेगजी ऐज अप्लाइड टू इन्फैण्ट एजूकेशन एण्ड द चिल्ड्रन्स हाउसेज' प्रकाशित हुई। दुनिया भर में इसका स्वागत हुआ। अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ। पूरे विश्व से सैकड़ों चिट्ठियाँ इनके पास आने लगीं। जिनमें प्रशंसा भी होती थी और जिज्ञासा भी होती थी। इनकी शिक्षण पद्धति एक आंदोलन बनकर पूरी दुनिया में छा गई। ध्यान देने की बात है कि मोन्तेस्सोरी कोई प्रशिक्षित शिक्षाविद् नहीं थी। मात्र मंदबुद्धि बच्चों के संदर्भ में उन्होंने शिक्षा-विधि का सामान्य परिचयात्मक अध्ययन किया। मौलिक चिंतन, सूझ-बूझ और गहरी निष्ठा के कारण बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के बारे में इनकी खोज एकदम नई और अनूठी थी। इनकी विशेष चर्चित पुस्तकें हैं 'सीक्रेट ऑव् चाइल्डहुड' तथा 'द आब्जर्वेंट माइन्ड'। 81 वर्ष की अवस्था में 8 मई 1952 के दिन हॉलेंड में उनका निधन हो गया। दुनिया के समस्त शिक्षाप्रेमियों के हृदय में उन्होंने जो स्थान बनाया है वह अमर रहेगा।

हर शिक्षक और शिक्षाप्रेमी को इनके कार्य और सिद्धान्तों की सूचना रहे तो कैसा रहे? श्री कुन्दनमल बैद ने मोन्तेस्सोरी बाल शिक्षण समिति, राजलदेसर (चूरू, राजस्थान) के माध्यम से इस महान् शिक्षाविद् मरीया मोन्तेस्सोरी की सभी महत्वपूर्ण पुस्तकों को हिन्दी में प्रकाशित करने का जो बीड़ा उठाया है उसका सर्वत्र स्वागत होगा। हमें विश्वास है, श्रेष्ठ शिक्षा साहित्य को पढ़ने का शौक रखने वाले शिक्षक, अभिभावक और शिक्षा प्रबंधक उन्हें जरूर पढ़ेंगे और अपने निजी पुस्तकालय में उन्हें रखना भी पसंद करेंगे।

–मोची स्ट्रीट, फलोदी-342301
जोधपुर (राजस्थान)

पुरातन में नयेपन का अहसास

❑ डा. दाऊदयाल गुप्ता

हमने हजारों बार दिल को यह कहकर समझाया कि नया नौ दिन का तो पुराना सौ दिन का। पर, दिल है कि मानता ही नहीं। कहता है– नया तो नया ठहरा, पुराना तो हुआ बहरा। पुराना अर्थात् बासी। तरोताजा नहीं तो कौन करेगा पसन्द कहीं। तब ही कथन की गूढ़ता को समझने का प्रयास करते हुए बालक बोला– तो क्या नानी भी पुरानी है? नानी तो कहानी कहती है तो हमें पसन्द आती है। एक बार तो हमें निर्वाक रहना पड़ा। पर, फिर प्रत्युत्पन्न बुद्धि का सहारा लेते हुए कहा– क्या आपकी नानी नित्य एक ही कहानी कहती है? इस बार फिर बालक बोला– नहीं वह तो आये दिन नई कहानी कहती है। नई-नई कहानियों का खजाना है, नानी के पास। मेरी समझ में आ गया– नानी पुरानी है तो क्या ! उसकी सोच तो पुरानी नहीं है न! नयेपन का अहसास कराने में उम्र आड़े नहीं आती। नया सोच हो तो पुरातन पोच नहीं कहलाता है।

ईद हो या दीपावलि का त्यौहार, सभी के मन में कुछ नया पाने की इच्छा होती है। बच्चे हों या जवान अथवा बूढ़े ही क्यों न हों सभी नये कपड़े और नई सौगातें खरीदना चाहते हैं। विशेषतः बालमन तो नयेपन का कायल होता ही है। जब तक नवीनता का अहसास नहीं होता वह बेचैन रहता है। इस नयेपन की खुमारी उसे बड़े-बड़े कार्य करने को तत्पर बनाती है। दरअसल यह नयापन हमारी पुरातन संस्कृति में घुला हुआ है। अतः पुरातन से ही नवाँकुर की आशा होती है बशर्ते वह नितान्त ठूँठ न ले गया हो। नया सवेरा, नई कोंपल, नई दूब, नया गाना, नई किरण, नवजात शिशु, नई फसल, नया घर, नई भाभी, नई सब्जी, नई चुहल, नई पहल, नया साथी आदि किसे नहीं सुहाता। बालकों के मन को नया रंग, नया ढंग, नया खेल, नई रेल, नई पुस्तक आदि किस कदर आकर्षित करती है, अनुभव की चीज है।

नयेपन की नई बात हमारे मन में गहराई से उमड़ती घुमड़ती रही। इतनी कि हम अपनी ही नजरों में बौने बन गये। इसलिए भी कि हम पुरातन की प्रीति में नयेपन की रीति भूल गये। ताजा बने रहने का मौका खोते रहे। शिक्षक होने के नाते, पढ़ाने तो जाते थे। किन्तु, अपने कार्य में नयेपन का अहसास कदापि नहीं करा पाते थे।

विचार जब मस्तिष्क में आते-जाते हैं तो अतीत एक चलचित्र की तरह नजरों के सामने घूम जाता है। यही वाकया हमारे साथ घटा। एक प्रशिक्षित शिक्षक होने के नाते हमने हर पाठ के विकास के लिए हरबर्ट की पंचपदी पकड़ रखी है। उस पंचपदी के सोपानों पर चढ़कर ही हम इठलाते रहे हैं। क्या मजाल कि उस पुख्ता पैबन्द में थोड़ी सी भी दरकन आ जाये। पर, जिस निस्सार को पारस समझकर हमने बालकों को संस्पर्शित करते हुए स्वर्ण बनाना चाहा वह तो संवेदना शून्य प्रस्तर निकला जिससे बालक भयभीत होकर हमसे किनारा करता रहा।

पुरातन के प्रति अनुराग नहीं। न ही अधुनातन के प्रति विराग। हाँ, मन की जड़ता को समाप्त करने के लिए परिवर्तन का दौर जरूरी है। परिवर्तन में आकर्षण है। जिज्ञासा है, इसमें। इसीलिए ताज़गी है। किसी कवि ने खूब लिखा है– *'नई सोच का नया जोश गर भर जाए इन बाँहों में,/नई उमंगें नई रवानी रम जाए इन श्वासों में।/नए स्वप्न की धड़कन लेकर चले हमारा काफिला, पंखों में आकाश समेटे बढ़े हमारा काफिला॥'*

पश्चाताप के आँसू पीना उचित नहीं। नवजीवन के नये दौर की शुरुआत जब हो जाए तभी सही है। नये-नये प्रयोगों से परहेज कैसा? पहले भी श्रेष्ठ शिक्षकों ने ऐसा ही किया है। तब अपने मन में ही अटकाव क्यों? विकासोन्मुख 21वीं सदी की नई साल का नया सवेरा हमारे समक्ष हैं। अस्तु, बच्चों की बगिया में मोतियों की फसलें उगाने के लिए अपना किंचित प्रयास अपेक्षित है– *'नील गगन में उड़ने वाले पंछी नया सवेरा है,/ बरसे मोती आँगन-आँगन पल-पल रूप सुनहरा है।/नूतन मृदु उल्लास लिये, अब चले हमारा काफिला,/मन में इक विश्वास संजोए, बढ़े हमारा काफिला॥'*

बच्चों के साथ नये प्रयोगों का सिलसिला प्रार्थना सभा से बखूबी किया जा सकता है। आये दिन नवगीतों का गुंजन, हास्य की फुहारों का बिखरन तथा नये-नये स्वप्नों की धड़कन यहीं से पैदा की जा सकती है। प्रार्थना सभा का रम्य आयोजन शिक्षक और शिक्षार्थी के होठों की फड़कन के साथ शुरू हो तो दिनभर के लिए नई ऊर्जा का संचरण तथा नई सोच का स्फुरण सहज ही बटोरा जा सकता है। दस-पन्द्रह मिनट का यह अन्तराल विद्यालय को नयेपन का अहसास कराएगा, यह प्रयोग-सिद्ध तथ्य है। एक बार परिवर्तन का चस्का लग जाने पर इसमें कितने ही रंग भरे जा सकते हैं। इसे सप्ताह भर के लिए इन्द्रधनुषी बना लेने पर अलौकिक आनन्द की सृष्टि कर पाना सुलभ ही है।

आइए, अब कक्षा की ओर मुखातिब हों जो शिक्षक का अभीष्ट लक्ष्य है। पाठ पुराना है या नया, यह अपने चिन्तन का विषय नहीं। चूँकि पहली बार पाठ से साक्षात्कार होना है अतः ज्ञान की दृष्टि से वह नया ही है। बशर्ते हम शिक्षक अपनी पाठ-प्रस्तुति से उसे बासी न बना दें। पुस्तक में पाठ अनेक हैं। हर पाठ का मिजाज एक जैसा नहीं है। अतः शिक्षक तथा शिक्षार्थी के बीच पाठ को लेकर अन्तःक्रिया एक जैसी नहीं हो सकती। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि पाठ को रुचिकर बनाने एवं उसे जीवन्त कहलाने के लिए हम शिक्षकों ने क्या तैयारी की। पाठ को हँसते-हँसते पढ़ाना है या फिर रुलाते हुए रटाना है। पाठ को प्रत्यक्ष जगत से जोड़ना है या फिर दीन-दुनिया से सम्बन्ध तोड़ना है। ज्ञान के किस सोपान पर शिक्षार्थी को पहुँचाना है, यह पाठ-प्रस्तुति के नये ढंग को तलाशना है। कक्षा-कक्ष से बँधे रहकर पाठ को पढ़ा देना अभीष्ट नहीं। प्रयोगों की विविधता तथा शिक्षक-शिक्षार्थियों की क्षमता ज्ञानोपार्जन की दकियानूसी चट्टान को तोड़ती है। वहीं से ज्ञान का नया निर्झर प्रवाहित होगा जो आकर्षण का केन्द्र तो बनेगा ही, साथ ही नितान्त उपादेय भी साबित होगा।

दिमागी बातायन में नई बयार का संचार हो, इसके लिये स्वाध्याय की सहजता परमावश्यक है। रोग के कारगर निदान एवं निदानात्मक उपचार के लिए आपके पास उपलब्ध पुस्तकों का झोला आपका मित्र साबित होगा। प्राचीन गुरुओं के अजमाये हुए नुस्खे, विभिन्न परिस्थितियों में तलाशे गये शोधपरक तरीके तथा शिक्षकों में आत्मविश्वास जगाने वाली युक्तियाँ हमें इन अमूल्य पुस्तकों में नसीब हो सकती हैं। आवश्यकता है इस ओर संचेतना की।

कार्य और कारण का अत्यन्त गहरा और पुराना सम्बन्ध है। यदि 'कारण' की उत्पत्ति हुई तो तद्नुसार कार्य की परिणिति होगी। यदि दर्द नहीं तो दवा कैसी? जिसमें दर्द नहीं, वह तो जड़ ही हो सकता है। शिक्षक में दर्द न हो, उसमें संवेदना की शून्यता हो तो उसके शिक्षकत्व पर तो प्रश्नचिह्न लगा ही रहेगा। निःसंदेह नई सदी निर्माण की है। इसमें सड़न-गलन के लिए स्थान नहीं। सृजन ही सृजन है। जहाँ सृजन है वहीं परिवर्तन है। चिन्तन-मनन का नित्य नव नर्तन है। अस्तु, नये दौर के नये शिक्षक का जागरण तभी सफल है। जब हर दिन नयेपन का अहसास हो। इस नये सवेरे की लालिमा में शिक्षक और शिक्षार्थी के मुख से अन्ततः यही स्वर गुंजरित हो– *'लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल।/ लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल।'*

–दही वाली गली, ब्यानियान मौहल्ला, भरतपुर-321001

प्रतिभावान छात्राओं की आदर्श : गार्गी

❑ **सोहनलाल प्रजापति**

राजस्थान शिक्षा विभाग हर वर्ष दसवीं-बारहवीं कक्षा में अच्छे अंक अर्जित करने वाली मेधावी छात्राओं को गार्गी पुरस्कार प्रदान कर, उनको प्रोत्साहित करता है। प्रतिभावान छात्राएँ गार्गी पुरस्कार तो प्राप्त कर लेती हैं, परन्तु यह नहीं जानती कि गार्गी कौन थीं? इसके नाम से यह पुरस्कार प्रारम्भ क्यों किया गया? गार्गी पुरस्कार देने का उद्देश्य क्या है?

वैदिक वाङ्मय में गार्गी का वर्णन मिलता है। वृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार ब्रह्मज्ञातिनी, विदुषी गार्गी के पिता का नाम वचक्नु था। वचक्नु की पुत्री होने से उसका दूसरा नाम वाचक्नवी था। वचक्नु गर्ग गोत्र से सम्बद्ध थे। गर्ग गोत्र में उत्पन्न होने के कारण उनका नाम गार्गी पड़ गया। गार्गी कठिन मेहनत कर विदुषी बनी। शास्त्रों का अध्ययन कर आध्यात्मिक तत्त्वों की ज्ञाता बनी। गार्गी विदुषी होने के साथ-साथ स्वाभिमानी एवं निर्भय स्वभाव की थी। आत्मतत्त्व की ज्ञाता थीं। विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करने के वर्णन उपनिषदों में मिलते हैं।

मिथिलानरेश विदेहराज जनक ने एक बार एक यज्ञ का आयोजन किया था। उस यज्ञ में दूर-दूर के अनेक ऋषि-मुनि एवं विद्वानगण सम्मिलित हुए थे। राजा जनक ने यज्ञ के साथ-साथ विशाल पांडाल में विद्वानों की शास्त्रार्थ प्रतियोगिता भी रखी। राजा जनक ने सोने से मँढ़े सीगों वाली, रेशमी झूलों से सजी हुई एक सहस्र दुधारू गाएँ अपनी गोशाला में एकत्र की। जनक ने घोषणा कर रखी थी कि शास्त्रार्थ में जो विद्वान ब्रह्मज्ञान, तत्त्वज्ञान में श्रेष्ठ माना जाएगा उसे ये गायें पुरस्कार स्वरूप दी जाएगी।

वहीं आगत विद्वानों में याज्ञवल्क्य भी उपस्थित थे। याज्ञवल्क्य शास्त्रों के ज्ञाता थे। उन्हें अपने ज्ञान पर गर्व था। श्रेष्ठ विद्वान को एक सहस्र गायें देने की राजा जनक की घोषणा सुनकर याज्ञवल्क्य ने बिना शास्त्रार्थ के ही एक सहस्र गायें ले जाने का आदेश अपने शिष्यों को दे दिया। शिष्यगण गायें ले गए।

याज्ञवल्क्य के उस कृत्य से उपस्थित विद्वानगण एवं ऋषिगण क्रुद्ध हो गए। वे कहने लगे याज्ञवल्क्य ने बिना शास्त्रार्थ के ही अपने-आप को श्रेष्ठ विद्वान कैसे मान लिया? सारे विद्वान याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने के लिए सन्नद्ध हो गए। शास्त्रार्थ शुरु हुआ। अश्वल, आर्तभागा, आरुणि, उद्धालक, शाकल्य आदि विद्वानों ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। उन विद्वानों में गार्गी भी सम्मिलित थीं। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से पंचतत्वों जल, वायु, आकाश एवं चन्द्रलोक, गन्धर्वलोक, इन्द्रलोक, प्रजापति लोक, ब्रह्मलोक, द्युलोक एवं अक्षर से संबद्ध अनेक प्रश्न पूछे। अन्य विद्वान भी उन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहते थे। याज्ञवल्क्य ने गार्गी के प्रश्नों के उत्तर देते हुए बताया कि जल वायु में, वायु अंतरिक्ष में, अन्तरिक्ष गंधर्व लोक में, चन्द्रलोक नक्षत्रलोक में, नक्षत्र लोक देवलोक में, इन्द्रलोक प्रजापतिलोक में, प्रजापतिलोक ब्रह्मलोक में ओतप्रोत हैं। वायु द्वारा ही लोक, परलोक व सारा भूत समुदाय संचालित हैं। इनका आधार वायु है।

पंचतत्वों से बने प्राणी के मरने पर उसके अवयव प्रकृति में लय हो जाते हैं। शरीर पृथ्वी में, मन चन्द्रमा में, वाणी अग्नि में, प्राण वायु में, रक्त और वीर्य जल में, हृदय आकाश में लय हो जाते हैं। गार्गी के पूछने पर याज्ञवल्क्य ने बताया कि आत्मा का विलय पुरुष के कर्मों के अनुसार होता है।

इस प्रसंग से यह प्रमाणित होता है कि गार्गी विदुषी थी, शास्त्रों की ज्ञाता थीं। तत्त्ववेत्ता थीं। ब्रह्मज्ञाता थीं। शास्त्रों के गूढ़ तत्त्वों की जानकार थीं। अपने समय के प्रकाण्ड विद्वान, ब्रह्मज्ञानी, शास्त्रज्ञ याज्ञवल्क्य से भला कोई साधारण व्यक्ति शास्त्रार्थ करने का साहस कैसे कर सकता है?

आज के प्रवंचनापूर्ण भौतिक युग में आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों की अत्यन्त आवश्यकता है। विशेषकर महिलाओं में। गार्गी पुरस्कार पाने वाली मेधावी छात्राओं की विदुषी एवं ब्रह्मवादिनी गार्गी के आदर्शों को व्यावहारिक जीवन में अपनाना चाहिए। तभी शिक्षा विभाग द्वारा प्रदत्त गार्गी पुरस्कार का उद्देश्यपूर्ण होगा।

'ज्ञान पवित्र होता है, परन्तु आत्मज्ञान के बिना वह अधूरा होता है।'

–कारगवाल कुटीर, पो. छापर-331502, चूरू

पहली कक्षा का शिक्षक

❑ लता पाण्डे

*(**माँ** की गोदी से निकलकर बच्चा जब पहली बार स्कूली जीवन में कदम रखता है, तो उसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ आ खड़ी होती हैं। नए-नए लोगों से सामंजस्य स्थापित करना, नए परिवेश में स्वयं को ढालना आदि। पहली कक्षा के शिक्षक के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। स्कूली दुनिया में पहली बार कदम रखने वाले बच्चे को स्कूल में बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। लेकिन शिक्षक कुछ बातों के प्रति सजग रहे तो इन सभी चुनौतियों का सामना कर सकता है। कैसा हो पहली कक्षा का शिक्षक? जानने के लिए पढ़िए यह लेख।)*

पहली कक्षा ही वह कक्षा है जिसमें अधिकतर बच्चे स्कूली दुनिया में पहला कदम रखते हैं। और पहली कक्षा ही वह कक्षा है जो अधिकतर बच्चों को किताबों की दुनिया से परिचय कराती हैं। यही वह कक्षा है जो बच्चों के मन में पढ़ाई-लिखाई, किताबों, स्कूल और शिक्षकों के प्रति एक नज़रिया विकसित करती है। यह नज़रिया अगर सकारात्मक होता है तो पढ़ने की दहलीज पर कदम रखने वाला बच्चा स्कूली दुनिया में प्रविष्ट होकर सफलता की सीढ़ियाँ लाँघता चला जाता है। इसके विपरीत स्कूल के प्रति बच्चे का रवैया यदि पहली कक्षा में नकारात्मक बन जाता है तो बच्चे को शाला त्यागते देर नहीं लगती और कई बार तो पहली कक्षा ही आखिरी कक्षा बनकर रह जाती है।

घर की बोली को कक्षा में स्थान– बच्चे को स्कूल में बनाए रखने में शिक्षक की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रहती है। पहली कक्षा के शिक्षक की जिम्मेदारी अन्य कक्षाओं के शिक्षकों के मुकाबले काफी चुनौतीपूर्ण है। माँ की ममतामयी गोद से निकलकर विद्यालय में कदम रखने वाले इन नन्हे-मुन्नों को परिवार के सदस्यों का सा स्नेह देना, उसके साथ घुल-मिल जाना पहली चुनौती है। अक्सर बच्चे जब अपने घर की बोली में कक्षा में कोई बात कहते हैं तो शिक्षक द्वारा उसे तुरन्त टोक दिया जाता है। भाषा की कक्षा में तो शिक्षक इस बात पर विशेष रूप से जोर देता है कि बच्चे मानक भाषा का व्यवहार करें। मानक भाषा तो बच्चे धीरे-धीरे सीख ही लेंगे पर पहली कक्षा में बच्चे पर मानक भाषा में ही बात करने के दबाव का दुष्परिणाम यह होता है कि बड़े ही उत्साह से अपनी बात कहने को तत्पर बच्चे चुप हो जाते हैं। मानक भाषा में बात करने में असमर्थ बच्चे का आत्मविश्वास लड़खड़ा जाता है। लड़खड़ाते आत्मविश्वास वाले बच्चे फिर कभी मुखर होने का साहस नहीं जुटा पाते। हमारी बहुभाषिक संस्कृति हमारी पहचान है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने की सिफारिश करती है। बच्चे की घर की बोली को सम्मान देकर ही बच्चे के आत्मसम्मान को बनाए रखा जा सकता है। पहली कक्षा का शिक्षक बच्चे को अपने शब्दों, अपनी बोली में बोलने का अवसर देकर अत्यंत सहजता से उसके मन को भी स्पर्श कर सकता है।

पूर्वग्रहों से मुक्त शिक्षक– कई बार पूर्वग्रहों से युक्त होने के कारण शिक्षक अनजाने में बच्चे के साथ नाइंसाफी कर जाते हैं। शिक्षक का पक्षपातपूर्ण रवैया बच्चे को स्कूल से विमुख कर देता है। इसलिए उसे जाति, धर्म, वर्ग आदि के किसी भी पूर्वग्रह से स्वयं को मुक्त रखते हुए कक्षा के प्रत्येक बच्चे के करीब पहुँचना है।

प्यार, भरोसा और आत्मीयता– शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की, चाहे वह किसी धर्म-जाति, वर्ग का हो, क्षमता पर भरोसा जताना है। हर बच्चे को विश्वास दिलाना है कि हाँ, मैं सीख सकता हूँ, मैं पढ़-लिख सकती हूँ। बच्चे के सिर पर रखा शिक्षक का प्यार भरा हाथ उसे भरोसा दिलाएगा कि हाँ, मेरे शिक्षक मुझे प्यार करते हैं, मुझ पर विश्वास करते हैं।

शारीरिक/मानसिक चुनौती वाले बच्चे यदि कक्षा में हैं तो उन्हें भी हर गतिविधि में अन्य बच्चों के साथ सम्मिलित कर ही समेकित शिक्षा को सही मायनों में अर्थ दिया जा सकता है। ऐसे बच्चों के लिए कक्षा में बाकी बच्चों का दोस्त बनने के मौके पैदा करें ना कि सहानुभूति का पात्र। ऐसे बच्चों की मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था करने का हर संभव प्रयास करें।

कक्षा का वातावरण– कक्षा का वातावरण बच्चों के मनमुताबिक होगा तो बच्चों का मन लगेगा। शिक्षक के सामने एक बड़ी चुनौती है बच्चों के अनुकूल वातावरण निर्माण करने की। अकसर विद्यालय परिसर में तथा कक्षा के भीतर बड़े-बड़े सूक्ति वाक्य लिखे रहते हैं– विद्या ददाति विनयम्, अहिंसा परमो धर्मः आदि। इन वाक्यों का बच्चों की वास्तविक जिंदगी से कोई मतलब नहीं है। ऐसी लिखित जिंदगी से कोई मतलब नहीं है। ऐसी लिखित सामग्री बच्चों को अपनी ओर नहीं खींचती। बच्चों की रुचि की मुद्रित सामग्री चारों ओर लगी रहेगी तो बच्चे उसे देखेंगे, अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश करेंगे और पढ़ने की दुनिया में कदम रखेंगे। सुंदर चित्र, कोई अच्छा-सा कार्टून, अच्छी-सी कविता, मज़ेदार-सा वाक्य कुछ भी हो सकता है। कोई भी चार्ट या मुद्रित सामग्री लगाते समय ध्यान रखें कि बच्चे उसे आसानी से देख और पढ़ सकें। वह बच्चों की पहुँच के भीतर हो। मुद्रित सामग्री ही नहीं कक्षा में रखी किताबें, ब्लैकबोर्ड, डस्टर, चॉक सब कुछ ऐसे स्थान में रखे हों जहाँ बच्चों का हाथ आसानी से पहुँचे।

कहानी का खज़ाना– बच्चों को कहानी सुनने, कविता गाने में बहुत आनंद आता है। पहली कक्षा के शिक्षक के पास बच्चों के मनपसंद विषयों की कहानियों, कविताओं का अच्छा-खासा ज़खीरा होना चाहिए। कितना अच्छा हो यदि प्रतिदिन कक्षा की शुरुआत रोचक किस्से-कहानी से हो। कहानी का आनंद बच्चों को दिनभर के लिए उमंग तथा उत्साह से लबालब कर देगा। कहानी का विषय बच्चों की पसंद का और उनके परिवेश से जुड़ा हो।

भाषा बच्चों की अपनी हो और कहानी सुनाने का तरीका रोचक हो। बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर कहानी सुनाएँ। प्रतिदिन एक कहानी न केवल बच्चे को विद्यालय की ओर आकर्षित करेगी बल्कि शिक्षक से उसका स्नेहिल नाता भी बड़ी सरलता से बन जाएगा। कहानी के बाद बच्चों से संवाद करें। विभिन्न भाषायी कौशल कहानी के माध्यम से बड़ी सहजता से बच्चों में विकसित किए जा सकते हैं। साथ ही बच्चों से भी कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है।

कविता का आनंद– लय, गति, तुक के कारण कविता बच्चे बहुत जल्दी याद कर लेते हैं और गाते हैं। बच्चों की रुचि के विषयों पर आधारित कविता सुनाएँ और बच्चों को साथ में दोहराने के लिए कहें। कविता की दो-चार पंक्तियाँ सुनाने के बाद बच्चों से उसे आगे बढ़ाने की गतिविधि करवाई जा सकती है जैसे–

पैसा पास होता
तो चार चने लाते
चार चने में से एक
कौवे को खिलाते
तो बड़ा मज़ा आता
बड़ा मज़ा आता
जब काँव-काँव चिल्लाता
पैसा पास होता
तो चार चने लाते
चार चने में से एक
मुर्गे को खिलाते
मुर्गे को खिलाते
तो बड़ा मज़ा आता
बड़ा मज़ा आता
जब ...
बच्चा अपने आप जोड़ देगा
कुकड़ूँ कूँ चिल्लाता।

समय-सारिणी में लचीलापन– कविता-कहानी सुनाने के दौरान इनका भरपूर आनंद बच्चों को लेने दें। अगर बच्चे कहानी पर चर्चा जारी रखना चाहते हैं तो ऐसा करने दें। इसका मतलब है कि उन्हें कहानी में रस मिला। यह सोचकर तुरंत गणित पढ़ाना न शुरू कर दें कि भाषा की घंटी खत्म हुई, अब गणित की घंटी में गणित ही पढ़ाना है। समय सारिणी में लचीलापन बरतना जरूरी है।

ज़रूरी है धीरज– नन्हे-मुन्ने जब पहली बार स्कूल जाते हैं तो कभी-कभी उनका मन नहीं लगता, रोना शुरू कर देते हैं, कक्षा में पढ़ाई में उनका ध्यान नहीं लगता, अपनी बात कहने में कुछ बच्चे काफी वक्त लगाते हैं, इन सबसे आसानी से वही शिक्षक पार पा सकता है जिसमें धीरज का गुण हो। बच्चों की बात को पूरी तन्मयता और धैर्य से सुनें। गतिविधि कराते समय आपने गोले में खड़े होने के लिए कहा और बच्चे आपके अनुसार बताए गोले में न खड़े होकर आड़े-तिरछे हों तो डाँटिए नहीं। नन्हे बच्चे धीरे-धीरे स्वतः सीख जाएँगे। बच्चे की बात सुनें, अपनी बात मनवाने का उतावलापन ठीक नहीं।

बच्चे की प्रतिभा की परख– हर बच्चे में कोई न कोई हुनर जरूर होता है। कई बच्चे ऐसे परिवारों से आते हैं जहाँ कई बार माता-पिता के पास इतना समय नहीं होता है कि वे बच्चों की प्रतिभा को पहचानें, तो कई बार अभिभावक के पास पारखी नज़रिए का अभाव होता है। कक्षा में प्रत्येक बच्चे के हुनर की पहचान करने तथा विकसित करने की चुनौती का सामना भी शिक्षक को करना है।

जेंडर का मुद्दा– कक्षा में प्रत्येक बच्चे को चाहे वह लड़का हो या लड़की किसी-न-किसी गतिविधि में नेतृत्व का मौका जरूर दें। कार्य में अगुवाई करने से बच्चे में बचपन से ही निर्णय लेने तथा नेतृत्व की क्षमता का विकास होगा।

कक्षा में प्रत्येक गतिविधि में लड़के-लड़की दोनों को समान अवसर दें। जेंडर का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण है। कक्षा की व्यवस्था, कक्षा में दीवारों पर लगी सामग्री तथा शिक्षण के दौरान भी इस बात के प्रति सजग रहना होगा कि लड़के-लड़की दोनों के साथ समानता का व्यवहार हो रहा है, उन्हें समान गरिमा और अवसर दिए जा रहे हैं।

बच्चे की भागीदारी– राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता की संस्तुति करती है। वास्तव में सीखने के दौरान बच्चों की भागीदारी निरंतर बनी रहे तो सीखना बच्चों को नीरस और उबाऊ नहीं लगता है बल्कि सीखने की प्रक्रिया उनके लिए आनंदमय बन जाती है और कुछ करते-करते वे कब सीख लेते हैं, उन्हें इसका भान भी नहीं होता है।

अनुशासन का बदलता पैमाना– अनुशासन के नाम पर बच्चों को हैंड्स डाउन, फिंगर ऑन योर लिप्स, हाथ बाँधकर चुपचाप बैठा देने से कक्षा में निष्क्रियता और बोझिलता पसर जाएगी। सक्रियता बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उन्हें स्वयं कुछ करने, बाहर जाकर पेड़-पौधों आदि का अवलोकन करने, आपस में बातचीत करने के अवसर देने से ही तो वे स्वयं ज्ञान की रचना कर पाएँगे। बच्चे सक्रिय रहेंगे तो कुछ न कुछ करेंगे, सीखेंगे। सीखने की दशा में अनुशासनहीनता का तो सवाल ही नहीं उठता है। अनुशासन को मापने का पैमाना बदलना होगा।

प्रगति की जाँच– बच्चों की प्रगति की जाँच सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। पहली कक्षा में बच्चों की प्रगति की तुलना अन्य बच्चों से करने की भूल कदापि नहीं करें। इससे बच्चों में हीन भावना जन्म लेगी और वह हतोत्साहित हो जाएँगे बच्चों की प्रगति की जाँच उनकी पहले की प्रगति से तुलना करते हुए करें। जानने का प्रयास करें कि उन्होंने पहले से कुछ ज्यादा अच्छा किया है या वह पहले की तुलना में पिछड़ गए हैं। कहाँ पर सुधार की जरूरत है? अच्छा करने पर बच्चों की सराहना जरूर करें। अच्छा न करने पर उन्हें डाँटे नहीं, बल्कि सहारा दें, आगे अच्छा करने को प्रोत्साहित करें। आपसे मिला सहारा ही आगे अच्छे प्रदर्शन के लिए उसका संबल बनेगा।

अभिभावकों से संवाद– पहली कक्षा के शिक्षक के लिए बहुत जरूरी है कि बच्चों के अभिभावकों से भी उसका संवाद लगातार बना रहे। गृह शिक्षक के रूप में अभिभावक की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। बच्चों के सम्बन्ध में शिक्षक और गृह शिक्षक यानी अभिभावक दोनों सजग रहें और दोनों का ही पर्याप्त स्नेह और उचित मार्गदर्शन बच्चे को मिले तो पहली कक्षा बच्चे के लिए विद्यालयी जीवन का एक सुखद अहसास बन सकती है।

–एसोसियेट प्रोफेसर, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016

(प्राथमिक शिक्षक/जुलाई-अक्टूबर-2010 से साभार)

बापू की सीख-9

अभय

❑ मो. क. गाँधी

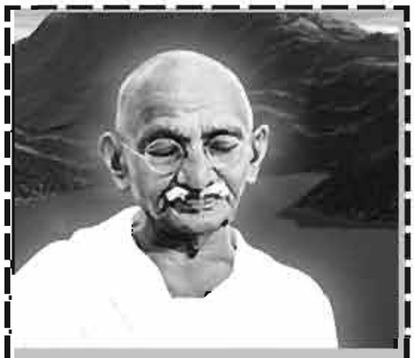

महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति एवं शिक्षा सभी क्षेत्रों में उनके विचार बहुत उपयोगी हैं। वस्तुतः वे एक मनोवैज्ञानिक शिक्षक थे। उनकी शिक्षा सम्बन्धी 21 रचनाएं 'बापू की सीख' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। शिविरा के सुधि पाठकों के लिए उन्हें शृंखलाबद्ध प्रकाशित किए जाने का निर्णय लिया गया है। आशा है पाठक इन विचारों को पठन, मनन के साथ आचरण में लाने का प्रयास करेंगे। —शरिद्ध सम्पादक

अभय के बिना दूसरी संपत्तियाँ नहीं मिल सकतीं। अभय के बिना सत्य की खोज कैसे हो सकती है? अभय के बिना अहिंसा का पालन कैसे हो सकता है? हरि के मार्ग पर चलना खांडे की धार पर चलना है, वहाँ कायर का काम नहीं है। सत्य ही हरि है, वही राम है, वही नारायण है, वही वासुदेव है। कायर अर्थात् भयभीत, डरपोक। वीर के मानी हैं भययुक्त तलवारादि लटकाने वाला नहीं। तलवार शूरता का चिह्न नहीं, बल्कि भीरुता की निशानी है।

अभय के मानी हैं बाहरी भयमात्र से मुक्ति— मौत का भय, धन-दौलत लुट जाने का भय, कुटुम्ब-परिवार-विषयक भय, रोगभय, शस्त्रप्रहार का भय। प्रतिष्ठा का भय, किसी के बुरे मानने का भय। भय की यह पीढ़ी चाहे जितनी लम्बी बढ़ाई जा सकती है। साधारणतः कहा जाता है कि सिर्फ एक मृत्युभय को जीत लिया तो सब भयों को जीत लिया; परंतु यह यथार्थ नहीं जान पड़ता। बहुतेरे मौत का भय छोड़ देते हैं, तथापि अन्य प्रकार के दुःखों से भागते हैं। कुछ मरने को तैयार होने पर भी सगे-सम्बन्धियों का वियोग सहन नहीं कर सकते। कोई कंजूस इनकी परवाह नहीं करेगा, देह छोड़ देगा; पर बटोरा हुआ धन छोड़ते घबरायगा। कोई होगा जो अपनी कल्पित मान-प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए बहुत कुछ सियाह-सफेद करने को तैयार हो जाएगा और कर डालेगा। कोई संसार की निंदा के भय से, जानते हुए भी, सीधा मार्ग ग्रहण करने में हिचकिचायगा। सत्य की खोज करने वाले का तो समस्त भयों की तिलांजलि दिये ही निस्तार है। उसकी हरिश्चंद्र की भाँति मिट जाने की तैयारी होनी चाहिए। भले ही हरिश्चंद्र की कथा कल्पित हो; पर आत्मार्थी मात्र का यह अनुभव है। अतः उस कथा की कीमत किसी भी ऐतिहासिक कथा से अनंत गुनी अधिक है और वह सबके लिए संग्रहणीय तथा माननीय है।

अभयव्रत का सर्वथा पालन लगभग अशक्य है। भयमात्र से मुक्ति तो वही पा सकता है जिसे आत्म-साक्षात्कार हो गया हो। अभय मोहरहित स्थिति की पराकाष्ठा है। निश्चय करने से—सतत प्रयत्न से और आत्मा पर श्रद्धा बढ़ने से अभय की मात्रा बढ़ सकती है। मैंने आरम्भ में ही कहा है कि हमें बाहरी भयों से मुक्ति पानी है। भीतर जो शत्रु मौजूद हैं उनसे तो डरकर ही चलना है। काम-क्रोधादि का भय वास्तविक भय है। इसे जीत लेने से बाहरी भयों का उपद्रव अपने-आप मिट जाता है। भय-मात्र देह के कारण है। देहविषयक राग दूर हो जाने से अभय सहज में प्राप्त हो जा सकता है। इस दृष्टि से मालूम होता है कि भयमात्र हमारी कल्पना की उपज है। धन से, परिवार से, शरीर से 'अपनापन' हटा दें तो फिर भय कहाँ? 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'—यह रामबाण वचन है। कुटुंब, धन, देह ज्यों-के-त्यों रहें, कोई आपत्ति नहीं, इनके बारे में अपनी कल्पना बदल देनी है। यह 'हमारे' नहीं, वह 'मेरे' नहीं हैं; यह ईश्वर के हैं, 'मैं' उसी का हूँ; 'मेरी' कहलाने वाली इस संसार में कोई भी वस्तु नहीं है, फिर मुझे भय किसके लिए हो सकता है। इसलिए उपनिषदकार ने कहा है कि 'उसका त्याग करके उसे भोग।' अर्थात् हम सके रक्षक बनें। वह उसकी रक्षा करने भर की ताकत और सामग्री दे देगा। इस प्रकार स्वामी न रहकर हम सेवक हो जाएँ, शून्यवत् होकर रहें तो सहज में भयमात्र को जीत लें, सहज में शांति पा जाएँ, सत्यनारायण के दर्शन प्राप्त कर लें।

'मंगल-प्रभात' से

बालक बाबू राजेन्द्र प्रसाद की निडरता

उस किशोर को घरेलू कार्यवश गाँव से शहर की ओर जाना था। उसकी माँ ने उसे पाँच सौ रुपये हाथ में थमाकर बड़े प्यार से विदा करते हुए माँ ने कहा— 'बेटा, यह संसार सत्य पर ही टिका है, झूठ-कपट का मुँह काला है। इसीलिए सत्य को कभी मत छोड़ना, तो तेरी विजय होगी।' किशोर ने माँ के चरणों का स्पर्श किया और आशीर्वाद लेकर शहर की ओर हँसी-खुशी से चल पड़ा। मार्ग में बीहड़ वन था। वहाँ लुटेरे छिपकर यात्री को लूट लेते थे। उसे थोड़ा बहुत इस बारे में पता था। फिर भी वह निर्भीकता से रास्ता पार कर रहा था तो लुटेरों ने उसे घेरकर कहा— 'तेरे पास जो कुछ भी है, वह सब निकाल।' उसे माँ के सबक याद आये और किशोर ने बिना किसी भय, हिचकिचाहट के पाँच सौ रुपये निकाल कर दिखा दिये। लुटेरों ने उसकी तब भी तलाशी ली। लेकिन, उन्हें तलाशी में कुछ नहीं मिला। तब लुटेरे मन मसोसकर रह गये। एक लुटेरे ने कहा— 'इसे तो अपने बड़े सरदार के पास ले चलो, वहीं सच बताएगा।' तब वे उसे अपने सरदार के पास ले गए। सारा वाकया सुनकर लुटेरों के सरदार को भी हैरानी हुई। उसने उस किशोर को गले लगाकर पीठ थपथपाते हुए कहा— 'धन्य है वह माँ, जिसने तुम जैसे सच्चे, निर्भीक व ईमानदार गुणवान बालक को जन्म दिया।' उस दिन के बाद से उन लुटेरों ने लूटपाट करना, लोगों को सताना छोड़ और सामान्य जीवन जीने की दृढ़ प्रतिज्ञा की।

वह किशोर आगे चलकर स्वतंत्रता सेनानी, देशरत्न, अजातशत्रु व देश का प्रथम राष्ट्रपति बना, जिसका नाम था— डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद।

—साँवलाराम नामा, सदर बाजार रोड़, निकट बड़ा चौहरा, भीनमाल-343029, जालौर (राज.)

पढ़ना-लिखना सीखो

पढ़ना-लिखना सीखो ओ मेहनत करने वालों।
पढ़ना-लिखना सीखो ओ भूख से मरने वालों।

क ख ग घ को पहचानो अलिफ़ को पढ़ना सीखो।
अ आ इ ई को हथियार बना कर लड़ना सीखो॥

पढ़ना-लिखना सीखो ओ मेहनत करने वालों।
पढ़ना-लिखना सीखो ओ भूख से मरने वालों।

पढ़ो कि हर मेहनतकश को उसका हक दिलवाना है।
ओ सड़क बनाने वालों ओ बोझा ढोने वालों।

पढ़ो अगर इस देश को अपने हक में चलवाना है।
ओ बोझा ढोने वालों ओ हल चलाने वालों।

क ख ग घ को पहचानो अलिफ़ को पढ़ना सीखो।
अ आ इ ई को हथियार बना कर लड़ना सीखो॥

पढ़ना-लिखना सीखो ओ मेहनत करने वालों।
पढ़ना-लिखना सीखो ओ भूख से मरने वालों।

पूछो मजदूरी की खातिर लोग भटकते क्यों हैं?
पढ़ो तुम्हारी सूखी रोटी गिद्ध लपकते क्यों हैं?

पूछो माँ-बहनों पर यूँ बदमाश झपटते क्यों हैं?
पढ़ो तुम्हारी मेहनत का फल सेठ गटकते क्यों हैं?

पढ़ो लिखा है दीवारों पर मेहनतकश का नारा।
पढ़ो कायदे राहत बन जाएगा बोझ तुम्हारा।

पढ़ो अगर अंधे विश्वासों से पाना है छुटकारा।
पढ़ो किताबें कहती हैं सारा संसार तुम्हारा।

क ख ग घ को पहचानो अलिफ़ को पढ़ना सीखो।
अ आ इ ई को हथियार बना कर लड़ना सीखो॥

पढ़ना-लिखना सीखो ओ मेहनत करने वालों।
पढ़ना-लिखना सीखो ओ भूख से मरने वालों।

– सफ़दर हाशमी

शिविरा पंचांग माह फरवरी, 2012

कार्य दिवस 23 • रविवार 04 • अवकाश 02 • उत्सव 03 – 2–4 फरवरी– तृतीय परख कक्षा 9 से 12 तक, गृह कार्य का द्वितीय मूल्यांकन (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं हेतु)। **04 फरवरी–** बारावफात (अवकाश चन्द्रदर्शनानुसार)। **9 फरवरी–** अभिभावकों एवं शिक्षकों की संयुक्त बैठक आयोजित कर तृतीय परख के प्रगति पत्र का विद्यार्थियों/अभिभावकों को वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार–विमर्श। **16 फरवरी–** स्वामी दयानन्द जयन्ती (उत्सव)। **20 फरवरी–** महाशिव रात्रि (अवकाश–उत्सव) **28 फरवरी–** राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव)।

नोट :– 1. तृतीय सप्ताह में दो दिवसीय द्वितीय संस्था प्रधान वाक्पीठ का आयोजन। 2. कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में सम्बलन के लिए अधिकारियों द्वारा विद्यालयों का अवलोकन करना। (प्रारम्भिक) 3. माह के अन्त में निर्माण कार्यों व अन्य गतिविधियों के उपयोगिता प्रमाण पत्र प्रेषित करना। (प्रारम्भिक) 4. लिंग्वालैब प्रशिक्षण। 5. प्रत्येक पाठ पढ़ाने के पश्चात कार्य पुस्तिकाओं में अभ्यास कार्य कराना।

तुम समय को लाँघ जाओ

शब्द की उंगली पकड़ कर
अर्थ की पगडंडियों पर
चेतना के पंख ले कर
तुम समय को लाँघ जाओ।

धूप का आँचल उठाये
कथ्य की किरणें बिछाये
अनुभवों की गूँज ले कर
तुम सृजन को लाँघ जाओ।

रंग का आवेग भर कर
कल्पना के गुरु शिखर पर
लोक का विश्वास ले कर
तुम क्षितिज को लाँघ जाओ।

प्रश्न का उत्तर जगाते
लहर को सागर बनाते
जागरण के शंख लेकर
तुम स्वयं को लाँघ जाओ॥

–वेदव्यास
अध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

आदेश परिपत्रः फरवरी, 2012

☐ 1. सामाजिक आर्थिक एवं जाति आधारित जनगणना-2011 के कार्य हेतु नियुक्त कर्मचारियों/अधिकारियों के सम्बन्ध में। ☐ 2. हितकारी निधि का वर्ष 2011-12 का वार्षिक अंशदान राज्य कर्मचारियों से अनिवार्य रूप से वसूल कर भिजवाने बाबत। ☐ 3. हितकारी निधि कल्याणकारी योजना में वर्ष 2011-12 के लिए वार्षिक अंशदान की राशि एवं अन्य योजनाओं बाबत। ☐ 4. अध्यापकों को प्रथम नियुक्ति तिथि से वरिष्ठता एवं आर्थिक परिलाभ दिये जाने के क्रम में। ☐ 5. कक्षा 1 से 8 तक में एन.सी.ई.आर.टी. की उर्दू विषय की पाठ्यपुस्तकों को लागू करने के सम्बन्ध में। ☐ 6. प्राथमिक कक्षाओं के द्वारा बॉल पैन के स्थान पर पेन्सिल का उपयोग करने के आदेश प्रसारित कराने के क्रम में। ☐ 7. गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं को शैक्षणिक सत्र 2012-13 में प्राथमिक विद्यालय की मान्यता एवं प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्तर हेतु दी जाने वाली मान्यता/क्रमोन्नति के सम्बन्ध में। ☐ 8. लोक प्राधिकरणों की सुविधा के लिए पूछे जाने वाले समान प्रश्नों के उत्तर/मार्गदर्शन ☐ 9. अधिनियम के महत्वपूर्ण प्रावधानों की पूर्ण पालन की ओर ध्यानाकर्षण ☐ 10. सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 की धारा 7 व 19 की ओर ध्यानाकर्षण ☐ 11. नियमों में आवश्यक परिवर्तन हेतु सुझाव ☐ 12. कलैण्डर वर्ष 2012 में सार्वजनिक अवकाश/ऐच्छिक अवकाशों की सूची ☐ 13. शिविरा पंचांग, 2011-12 में संशोधन ☐ 14. डा. आर.के. भवन बीकानेर में विभागीय कार्मिकों के ठहरने की व्यवस्था के सम्बन्ध में।

1. सामाजिक आर्थिक एवं जाति आधारित जनगणना-2011 के कार्य हेतु नियुक्त कर्मचारियों/अधिकारियों के सम्बन्ध में।

• राजस्थान सरकार, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग • क्रमांक प.6(5)प्राशि/2011-पार्ट जयपुर, दिनांक 22.11.2011 • विषय : सामाजिक आर्थिक एवं जाति आधारित जनगणना-2011 के कार्य हेतु नियुक्त कर्मचारियों/अधिकारियों के सम्बन्ध में। • संदर्भ : ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग के पत्रांक एफ 2(1)ग्राविवि/14/SECC/2011 दिनांक 02.11.11 एवं पत्रांक : एफ 2(1)ग्राविवि/SECC/DLB/14/11 पार्ट-8 दिनांक 02.11.11 • उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं संदर्भित के क्रम में निर्देशानुसार लेख है कि सामाजिक आर्थिक एवं जाति आधारित जनगणना-2011 के कार्य में प्रगणकों की नियुक्ति प्रारम्भिक शिक्षा (कक्षा 1 से 8 तक) के विद्यालयों में से नहीं की जानी है। इनके अतिरिक्त उक्त जनगणना कार्य हेतु जिन कर्मचारियों/अधिकारियों को प्रगणक एवं सुपरवाइजर्स के रूप में नियुक्त किया गया है, उन्हें तत्काल कार्यमुक्त किया जाए ताकि जनगणना कार्य समयबद्ध एवं सुचारु रूप से सम्पादित किया जा सके। इस आशय के निर्देश अपने अधीनस्थों को तत्काल जारी करें। • ह., प्रमुख शासन सचिव। • कार्यालय आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा/माध्य/अभिलेख/5911/2011/ दिनांक 13.12.11

2. हितकारी निधि का वर्ष 2011-12 का वार्षिक अंशदान राज्य कर्मचारियों से अनिवार्य रूप से वसूल कर भिजवाने बाबत।

•कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/हिनि/28203/2011-12 दिनांक 18.11.2011 • विषय : हितकारी निधि का वर्ष 2011-12 का वार्षिक अंशदान राज्य कर्मचारियों से अनिवार्य रूप से वसूल कर भिजवाने बाबत। • राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.21(ग)2/95 दिनांक 02.08.2002 के द्वारा हितकारी निधि में वर्ष 2011-2012 का अंशदान राज्य के समस्त अधिकारियों/व्याख्याताओं/वरिष्ठ अध्यापकों/शारीरिक शिक्षकों/उद्योग शिक्षकों/पुस्तकालयाध्यक्षों/कला अध्यापकों/प्रयोगशाला सहायकों/कार्यालय अधीक्षक/कार्यालय सहायक/वरिष्ठ लिपिकों/कनिष्ठ लिपिकों/जमादार एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों (समस्त वर्ग के राज्य कर्मचारी) से वार्षिक अंशदान की निर्धारित दर से अनिवार्य रूप से वसूल कर भिजवाये जाने का प्रावधान किया हुआ है।

हितकारी निधि हेतु अंशदान की निर्धारित दरें : 1. समस्त राजपत्रित अधिकारी (स्कूल व्याख्याता सहित) – 50/- प्रति वर्ष। 2. व.अ./अधीक्षक/कार्यालय सहायक एवं समकक्ष – 30/- प्रति वर्ष, 3. अध्यापक/व.लि./क.लि./प्र.शा.स./प्र.शा.से./जमादार/च.श्रे.क. एवं समकक्ष – 20/- प्रति वर्ष।

हितकारी निधि कल्याणकारी योजना का मुख्य उद्देश्य : इस कल्याणकारी योजना के राज्य कर्मचारियों से प्राप्त अंशदान राशि से कर्मचारियों के निधन पर उनके आश्रितों को रुपये 7000/- एवं दुर्घटना में निधन होने पर रुपये 10000/-, गम्भीर बीमारी पर उनको तथा परिवार के किसी भी सदस्य की बीमारी पर रुपये 5000/- तक की सहायता दी जाती है। शिक्षा विभागीय राज्य कर्मचारी/अध्यापकों के 100 बच्चों को जो व्यावसायिक शिक्षा में प्रथम वर्ष में अध्ययनरत होने पर रुपये 1500/- से रुपये 2500/- तक की सहायता दिये जाने का प्रावधान किया हुआ है।

दान स्वरूप राशि का संकलन : इस कल्याणकारी योजना में दान स्वरूप भी राशि लिये जाने का प्रावधान है, दान की कोई सीमा नहीं है। दानदाताओं से सम्पर्क करके दान स्वरूप राशि दिये जाने हेतु प्रेरित किया जाये ताकि कोष में राशि की बढ़ोत्तरी होकर अन्य कल्याणकारी योजनाओं में इसका उपयोग किये जाने में सहायता मिल सके। राज्य कर्मचारियों को भी अंशदान के अतिरिक्त दान का भी अधिकाधिक सहयोग दिए जाने हेतु प्रेरित किया जावे। दानस्वरूप राशि भिजवाते समय दानदाता का नाम, पता एवं राशि का उल्लेख अवश्य करें ताकि दानदाता को धन्यवाद का पत्र भेजा जा सके।

गत वर्ष उत्साहवर्द्धक सहयोग : गत वर्ष इस कल्याणकारी योजना में आपका सहयोग उत्साहवर्द्धक रहा जिससे हितकारी निधि कोष में वृद्धि हो सकी। इसके लिए आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

अंशदान एवं दान स्वरूप प्राप्त राशि निम्न पते भेजी जाये : प्राप्त राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा ही भिजवाई जावे। राशि का बैंक ड्राफ्ट, अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के नाम से बनवाकर भिजवाया जावे।

अतः आप राज्य के समस्त वर्ग के अधिकारियों, अध्यापकों, मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों से वर्ष 2011-2012 का अंशदान जनवरी 2012 से अनिवार्य रूप से लेकर एवं दानदाताओं से दान स्वरूप राशि प्राप्त कर राशि का बैंक ड्राफ्ट बनवाकर भिजवायें तथा इस कल्याणकारी योजना को सफल बनाने में आप सभी सहयोगी बनें। • ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

3. हितकारी निधि कल्याणकारी योजना में वर्ष 2011-12 के लिए वार्षिक अंशदान की राशि एवं अन्य योजनाओं बाबत।

•कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/हिनि/28803/2011-12 दिनांक 13.12.2011 • विषय : हितकारी निधि कल्याणकारी योजना में वर्ष 2011-12 के लिए वार्षिक अंशदान की राशि निर्धारित दर से राजपत्रित/अराजपत्रित कर्मचारी से अनिवार्य रूप से प्राप्त कर राशि का बैंक ड्राफ्ट अध्यक्ष, हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, बीकानेर के नाम से भिजवाने एवं अंशदान रजिस्टर के संधारण एवं अन्य योजनाओं बाबत। • राज्य सरकार के आदेश क्रमांक : प21(ग)-2/95 दिनांक 02.08.2002 द्वारा हितकारी

निधि में राज्य के समस्त अधिकारियों/व्याख्याताओं/अध्यापिकाओं/शारीरिक शिक्षकों/पुस्तकालयाध्यक्षों/मंत्रालयिक कर्मचारियों/च.श्रे.क. (छात्र/छात्रा) विद्यालयों में कार्यरत समस्त वर्ग के (पु.म.) कर्मचारियों से 2011-2012 का वार्षिक अंशदान निर्धारित दर से जनवरी माह से अनिवार्य रूप से लिया जाना निश्चित किया हुआ है। अंशदान राशि लिये जाने एवं राशि भिजवाएँ जाने बाबत शिविरा पंचांग 2011-12 में भी प्रतिवर्ष तद्विषयक सूचना प्रकाशित होती है कृपया अवलोकन करें। कर्मचारियों से प्राप्त अंशदान से निम्नलिखित योजनाओं में सहायता दी जाती है।

कल्याणकारी योजनाएँ (निधन एवं बीमारी पर सहायता) : कर्मचारियों की इस कल्याणकारी योजनान्तर्गत, राज्य कर्मचारी के सामान्य निधन पर उनके आश्रितों को रुपये 7000/- एवं दुर्घटना में निधन होने पर रुपये 10000/- तथा गम्भीर बीमारी पर स्वयं तथा परिवार के किसी सदस्य के बीमार होने पर कैन्सर, हृदय रोग, ब्रेन ट्यूमर, पक्षाघात, एड्स, टीबी, किडनी खराब आदि जैसी गम्भीर बीमारी पर रुपये 5000/- तक की सहायता दी जाती है।

व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत कर्मचारियों के बच्चों को सहायता : राज्य कर्मचारियों के 100 बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर प्रतिवर्ष 1500 से 2500 तक की एकमुश्त सहायता दी जाती है। इसके लिए निर्धारित फार्म में आवेदन तथा अंशदान जमा कराना अनिवार्य है। फार्म का प्रारूप एवं भरे जाने की अंतिम तिथि की सूचना समस्त उपनिदेशक (माध्यमिक/प्रारम्भिक) समस्त जिले के जिला शिक्षा अधिकारियों (माध्यमिक/प्रारम्भिक) एवं ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों को भिजवाई जाती है। प्रार्थना पत्र के साथ ट्यूशन फीस, लेबोरेटरी एवं पुस्तकालय शुल्क की मूल रसीदें लगाना आवश्यक है।

वार्षिक अंशदान की राज्य सरकार द्वारा निर्धारित दरें : 1. समस्त राजपत्रित अधिकारी (स्कूल व्याख्याता सहित) – 50/- प्रतिवर्ष, 2. व.अ./अधीक्षक/कार्यालय सहायक एवं समकक्ष/शा.शि. – 30/- प्रतिवर्ष, 3. अध्यापक/वलि/क.लि.प्र.शा. सहायक/सेवक/जमादार/च.श्रे.क. एवं समकक्ष – 20/- प्रतिवर्ष।

दानस्वरूप राशि एकत्रित करना : दानदाताओं से दान भी प्राप्त किया जाये। दान राशि की कोई सीमा नहीं है। दान राशि भिजवाये जाते समय दानदाता का नाम व पूरा पता अवश्य लिखें ताकि धन्यवाद का पत्र भिजवाया जा सके।

1. अंशदान रजिस्टर का संधारण : कार्यालयों/विद्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों एवं अधिकारियों से प्राप्त अंशदान का एक रजिस्टर बैंक लेजर के अनुसार एक पृष्ठ पर एक ही नाम अंकित कर आवश्यक रूप से संधारित किया जावे ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग हो सके।

2. हितकारी निधि अंशदान रजिस्टर संधारण हेतु प्रोफार्मा :
कार्यालय/विद्यालय का नाम .....
कर्मचारी का नाम ..... पद ..... नियुक्ति तिथि .....

क्र.सं.	अंशदान वर्ष	राशि	ड्राफ्ट सं.	दिनांक	निदेशालय से प्राप्त जी.ए. क्रमांक व दिनांक
1	2	3	4	5	6

3. हितकारी निधि अंशदान राशि, निदेशालय माध्यमिक शिक्षा बीकानेर को भिजवाने वाला प्रोफार्मा

क्र.सं.	अंशदान वर्ष	अधिकारी/अध्यापक का नाम	पद	खाता सं.	कुल राशि	ड्राफ्ट सं.	दिनांक
1	2	3	4	5	6	7	8

अतः इस वर्ष भी आप अपने अधीन समस्त उ.मा.वि./मा.वि./प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक (छात्र/छात्रा) एवं कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों से उक्त वर्णित दर से वर्ष 2011-12 का वार्षिक अंशदान की राशि प्राप्त कर राशि का बैंक ड्राफ्ट अध्यक्ष, हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम बनवाकर भिजवायें तथा अंशदान रजिस्टर का संधारण करवाएं ताकि इस कल्याणकारी योजना में राशि की वृद्धि होकर अन्य कल्याणकारी योजनाओं को प्रारम्भ किया जा सके। धन्यवाद। गतवर्ष आपका सहयोग उत्साहवर्द्धक रहा, इसके लिए धन्यवाद।
• ह., उपनिदेशक (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

4. संविदा अध्यापकों को प्रथम नियुक्ति तिथि से वरिष्ठता एवं आर्थिक परिलाभ दिये जाने के क्रम में।

• राजस्थान सरकार, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग • क्रमांक : प5(13)/प्राशि/2009 जयपुर, दिनांक 4.11.11 • विषय : संविदा अध्यापकों को प्रथम नियुक्ति तिथि से वरिष्ठता एवं आर्थिक परिलाभ दिये जाने के क्रम में। • संदर्भ : आपका पत्रांक : शिविरा/प्रारं/पंराज/डी/वो-3/संविदा/10 दिनांक 05.05.2010 • उपरोक्त विषयान्तर्गत संदर्भित पत्र के क्रम में निर्देशानुसार लेख है कि जिन अध्यापकों की प्रथम नियुक्ति संविदा के आधार पर हुई तथा प्रशिक्षण प्राप्त किये जाने के पश्चात् नियमित प्रक्रिया के तहत दो वर्ष के परिवीक्षाकाल पर नियुक्ति की गई, ऐसे अध्यापकों को प्रथम नियुक्ति तिथि से सेवा की गणना कर उन्हें वरिष्ठता एवं चयनित वेतनमान का लाभ प्रदान किये जाने या उनके प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् नियमित रूप से की गई तिथि से सेवा की गणना की जाकर उन्हें चयनित वेतनमान का लाभ प्रदान किये जाने के सम्बन्ध में प्रकरण राय हेतु वित्त (नियम) विभाग को प्रेषित किया। इस सम्बन्ध में वित्त (नियम) विभाग ने अपनी आई.डी. संख्या 101103300 दिनांक 18.10.2011 द्वारा यह अवगत कराया है कि एसीपी स्वीकृत करने के लिए सेवा की गणना करने के सम्बन्ध में वित्त विभाग के ज्ञापन संख्या प.14(88)वित्त/नियम/2008 पार्ट-I दिनांक 31.12.2009 के पैरा 2(7)(I) में उल्लेखित प्रावधानों के अनुसार कार्यवाही की जावे।

अतः तद्नुसार आप अपने अधीनस्थ कार्यालयों को सूचित कर कार्यवाही सुनिश्चित करावें। • ह., शासन उप सचिव • कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/पंराज/डी/वो.3/संविदा/08/493 दिनांक 29.11.11

5. कक्षा 1 से 8 तक में एन.सी.ई.आर.टी. की उर्दू विषय की पाठ्यपुस्तकों को लागू करने के सम्बन्ध में

• राजस्थान सरकार, स्कूल एवं संस्कृत शिक्षा विभाग, प्रारम्भिक शिक्षा (आयोजना) अनुभाग • क्रमांक : प.15(2)/प्रा.शि./आयो./2011 जयपुर, दिनांक : 05.10.2011 • कार्यालय आदेश • कक्षा 1 से 8 तक में एन.सी.ई.आर.टी. की उर्दू विषय की पाठ्यपुस्तकों को लागू करने के सम्बन्ध में निम्नानुसार आदेश प्रसारित किये जाते हैं– 1. कक्षा 1 से 5 तक में उर्दू भाषा विषय की एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकें लागू की जाएँगी, जिसके क्रम में कक्षा 1, 3 एवं 5 की उर्दू विषय की एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकें शैक्षिक सत्र 2013-14 से तथा कक्षा 2 एवं 4 की पाठ्यपुस्तकें शैक्षिक सत्र 2014-15 से लागू की जाएँगी। 2. कक्षा 6 से 8 तक में उर्दू विषय की एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकें शैक्षिक सत्र 2012-13 से लागू की जावेंगी। • ह., शासन उप सचिव, प्रारम्भिक शिक्षा (आयोजना) • कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी-एफ/19510/11-12/नवीन पाठ्यक्रम/11-12 दिनांक : 1.12.11

6. प्राथमिक कक्षाओं के द्वारा बॉल पैन के स्थान पर पेन्सिल का उपयोग करने के आदेश प्रसारित कराने के क्रम में।

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/गुण सुधार/11-12 दिनांक : 11/01/12 • विषय : प्राथमिक कक्षाओं के द्वारा बॉल पैन के स्थान पर पेन्सिल का उपयोग करने के आदेश प्रसारित कराने के क्रम में। • प्रसंग : अतिरिक्त आयुक्त राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद जयपुर का पत्रांक :– राप्राशिप/जय/आरईआई/प-11/10/12574-75 दिनांक 03.01.12 • उपरोक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि राजकीय विद्यालयों के कक्षा 2 से 5 के विद्यार्थी विद्यालयों में सामान्यतः बॉल पैन का उपयोग करते हैं। इस स्तर के विद्यार्थियों द्वारा बॉल पैन का उपयोग करने से उनके लेखन कौशल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः आप अपने अधीनस्थ समस्त विद्यालयों के संस्था प्रधानों एवं अध्यापकों को यह निर्देश देवें कि वे कक्षा 1 से 5 के विद्यार्थियों को बॉल पैन का उपयोग नहीं करने एवं उसके स्थान पर केवल पेन्सिल का ही उपयोग कराना सुनिश्चित करावें। • ह., अतिरिक्त निदेशक (शैक्षिक), प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

7. गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं को शैक्षणिक सत्र 2012-13 में प्राथमिक विद्यालय की मान्यता एवं प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्तर हेतु दी जाने वाली मान्यता/क्रमोन्नति के सम्बन्ध में।

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी/19626/मूल मान्यता/11-12 दिनांक : 13.01.2012 • विज्ञप्ति • विषय : गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं को शैक्षणिक सत्र 2012-13 में, प्राथमिक विद्यालय की मान्यता एवं प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्तर हेतु दी जाने वाली मान्यता/क्रमोन्नति के सम्बन्ध में। • राजस्थान राज्य में सबके लिए शिक्षा के लक्ष्य एवं गैर सरकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों द्वारा इस लक्ष्य की प्राप्ति में निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिका के दृष्टिगत गैर सरकारी क्षेत्र में कार्यरत गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं को प्राथमिक स्तर की मान्यता एवं प्राथमिक विद्यालय से उच्च प्राथमिक विद्यालय में मान्यता/क्रमोन्नयन हेतु निम्नांकित शर्तों के अध्यधीन आवेदन करना होगा– **1.** प्राथमिक स्तर की मान्यता एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर मान्यता/क्रमोन्नयन प्राप्त करने हेतु निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एवं राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम 2011 के अनुसरण में राज्य सरकार द्वारा दिनांक 21 जून 2011 को राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था नियम 1993 में विद्यालयों की मान्यता से सम्बन्धित प्रावधानों में विस्तृत संशोधन अधिसूचित किये जा चुके हैं जिसके अनुरूप सम्बन्धित गैर सरकारी शैक्षणिक संस्था को फार्म नं. 1 यथानिर्दिष्ट सक्षम प्राधिकारी को आवेदन करना होगा। **2.** इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा राज्य सरकार/इस कार्यालय द्वारा समय-समय पर जारी किये जाने वाले आदेशों/निर्देशों व अनुदेशों का तत्परता से पालन करने एवं उनसे समय-समय पर माँगी जाने वाली अन्य सूचनाएँ देने बाबत सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा को इस कार्यालय द्वारा निर्धारित प्रारूप में अंडरटेकिंग प्रस्तुत करना होगा। **3.** राज्य सरकार के आदेश दिनांक 8.2.11 के द्वारा मूक बधिर एवं दृष्टिहीन छात्रों हेतु संचालित निजी विद्यालयों के क्रमोन्नयन के लिए किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जायेगा। **4.** विद्यालय भवन में मोबाईल टावर नहीं होने का तथा विद्यालय परिसर से हाईटेन्शन विद्युत तार नहीं गुजरने सम्बन्धी प्रमाण-पत्र संस्था से लेना होगा। **5.** प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी किसी अन्य गैर सरकारी शिक्षण संस्था अथवा सरकारी विद्यालय में प्रवेश पा सकते हैं। **6.** क्रमोन्नति की इच्छुक प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्तर की निजी शिक्षण संस्थाओं को आवेदन के साथ निम्नानुसार क्रमोन्नयन शुल्क एवं आरक्षित कोष राशि भी जमा करानी होगी–

निर्धारित कार्यक्रम–

क्र.सं.	स्तर	आवेदन की अंतिम तिथि	सम्पूर्ण कार्यवाही (आक्षेप पूर्ति इत्यादि) सम्पन्न कर क्रमोन्नयन आदेश जारी करने की अंतिम तिथि
1.	प्राथमिक/उच्चप्राथमिक (हिन्दी/अंग्रेजी)	29 फरवरी, 2012	30 मार्च, 2012

निर्धारित शुल्क–

क्र.सं.	स्तर	मान्यता शुल्क की राशि (रुपयों में)	आरक्षित कोष की राशि (रुपयों में)
1.	प्राथमिक/उच्चप्राथमिक (हिन्दी/अंग्रेजी)	1000/-	10,000/-

संस्थाओं को मान्यता शुल्क का बैंक ड्राफ्ट सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा के नाम से निर्धारित तिथि तक बनवाना होगा। राशि बैंकड्राफ्ट से ही जमा करवानी होगी। आरक्षित कोष की राशि का बैंकड्राफ्ट बालिका शिक्षा फाउण्डेशन, जयपुर के नाम से बनवाकर संस्था को आवेदन-पत्र के साथ सक्षम प्राधिकारी (जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा) को प्रस्तुत करना होगा। **7.** अग्निशमन संयंत्रों की स्थापना करवाने के लिए भी संस्था द्वारा शपथ पत्र देना होगा। **8.** विद्यालयों को क्रमोन्नति से पूर्व पैनल निरीक्षण की पुरानी व्यवस्था लागू की जावे। **9.** जिस गैर सरकारी शैक्षणिक संस्था को जिस सत्र से मान्यता/क्रमोन्नति स्वीकृति जारी की गई है उसी सत्र में विद्यालय प्रारम्भ करना

होगा। विद्यालय शुरू नहीं करने की स्थिति में वह मान्यता/क्रमोन्नति स्वीकृति स्वतः ही समाप्त मानी जावेगी तथा संस्था को अगले सत्र प्रारम्भ से पूर्व मान्यता/क्रमोन्नयन के लिए विधिवत नियमानुसार पुनः शुल्क आदि जमा करवाकर आवेदन करना होगा। **10.** राजस्थान गैर शैक्षणिक संस्था अधिनियम 1993 की मान्यता सम्बन्धी शर्तों की पूर्ति नहीं करने पर सशर्त मान्यता प्रदान नहीं दी जावेगी। **11.** निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में वर्णित मान एवं मानदण्डों की पूर्ति करना आवश्यक होगा अन्यथा आवेदन अस्वीकृत कर दिया जावेगा। **12.** मान्यता/क्रमोन्नयन हेतु आवेदन करने की अंतिम तिथि में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जायेगा। **13.** प्राथमिक स्तर से उच्च प्राथमिक स्तर की मान्यता/क्रमोन्नति की इच्छुक गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं को क्रमसंख्या 1 से 12 तक निर्दिष्ट शर्तों की पालना कर आवेदन पत्र, शपथ पत्र, अंडरटेकिंग, मान्यता शुल्क एवं आरक्षित कोष की राशि सक्षम प्राधिकारी (सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा) को प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 29.02.2012 होगी। **14.** विद्यालयों को क्रमोन्नति से पूर्व पैनल निरीक्षण की पुरानी व्यवस्था लागू की जावे। **15.** सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालय द्वारा उन्हीं निजी शिक्षण संस्थाओं के आवेदन-पत्र को स्वीकार किया जावेगा जिन संस्थाओं द्वारा उपरोक्तानुसार सभी शर्तों की पूर्ति कर दी गई हों। सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा इस आशय का प्रमाण-पत्र सम्बन्धित गैर सरकारी शिक्षण संस्था के सम्बन्ध में दिनांक 30.03.2012 तक निश्चित रूप से जारी कर दिया जायेगा। **16.** प्राथमिक विद्यालय की मान्यता हेतु आवेदन करने वाली संस्था को संस्था के नाम से 50000/- अक्षरे रुपये पचास हजार मात्र की सावधि जमा (एफडी) खाते में जमा रखने होंगे जिसकी छाया प्रति जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालय में आवेदन के साथ प्रस्तुत करनी होगी। **17.** आवेदन करने वाली संस्था फार्म नं. 1 व चैकलिस्ट-ए की प्रति सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालय से प्राप्त कर एवं उसकी पूर्ति कर संस्था सचिव के हस्ताक्षरयुक्त आवेदन पत्रावली के साथ निर्धारित तिथि से पूर्व सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा के कार्यालय में प्रस्तुत करेंगे। **18.** सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी निम्न वचनपत्र में संस्था से अंडरटेकिंग लेने की कार्यवाही सम्पादित करावें–

वचन पत्र (अंडरटेकिंग)

मैं ..... (नाम) ..... (पद) वचन देता हूँ कि संस्था द्वारा राज्य सरकार/निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा/आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा/जिला एवं ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी द्वारा समय-समय पर जारी किये जाने वाले आदेशों, निर्देशों व अनुदेशों का पालन किया जायेगा एवं उनके द्वारा समय-समय पर माँगी जाने वाली प्रत्येक सूचना समय पर प्रेषित की जायेगी। **हस्ताक्षर एवं मोहर (अध्यक्ष/सचिव, प्रबंधन समिति)**

ह., आयुक्त, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

निजी (गैर सरकारी) प्राइमरी एवं मिडिल स्कूल/संस्था खोलने/क्रमोन्नत करने के लिए

आवेदन पत्रावली के साथ संलग्न किये जाने वाले दस्तावेजों की सूची की चैकलिस्ट-ए

संस्था का नाम व पता .....

(1) प्राइमरी से मिडिल स्कूल क्रमोन्नत करने के लिए आवेदन करने पर पूर्व आदेशों की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(2)** पंजीयन प्रमाण-पत्र की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(3)** प्रबन्ध समिति का संविधान की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(4)** प्रबंध समिति के सदस्यों की सूची (मय विभागीय प्रतिनिधि का नाम) की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(5)** कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(6)** भवन के नक्शे के ब्ल्यू प्रिन्ट की सार्वजनिक निर्माण विभाग के सहायक अभियन्ता से प्रमाणित की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(7)** यदि भवन व स्कूल खेल मैदान की भूमि निजी नहीं है तो किरायेनामे की सत्यापित प्रति (नोट– स्थायी मान्यता हेतु स्कूल भवन व खेल मैदान की भूमि के निजी मालिकाना हक के रजिस्टर्ड दस्तावेजों की प्रमाणित प्रति अथवा 30 वर्षीय किरायेनामे की रजिस्टर्ड लीज डीड की सत्यापित प्रति आवश्यक है।) – है/नहीं **(8)** कुल निर्मित कमरों की संख्या, इनका माप (नार्म्स के अनुसार) एवं उपयोग का विवरण की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(9)** स्कूल भवन की भूमि एवं खेल मैदान की भूमि का (अकृषि प्रयोजनार्थ/शैक्षिक प्रयोजनार्थ) रूपान्तरित करवाने बाबत् ग्रामीण क्षेत्रों में सक्षम राजस्व अधिकारी/तहसीलदार/एस.डी.एम./जिला कलक्टर/राजस्व विभाग द्वारा तथा शहरी क्षेत्रों में नगर पालिका/नगर परिषद्/नगर निगम/विकास प्राधिकरण के सक्षम अधिकारी से जारी रूपान्तरण Conversion आदेश की सत्यापित प्रति संलग्न/यदि भूमि पहले से ही आबादी क्षेत्र में स्थित हो तो स्कूल की भूमि/खेल मैदान की भूमि को शैक्षणिक प्रयोजनार्थ उपयोग में परिवर्तन करने के सक्षम अधिकारी के आदेश की सत्यापित प्रति – है/नहीं **(10)** विद्यालय में छात्र/छात्राओं के पृथक-पृथक शौचालय की व्यवस्था है, प्रमाण की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(11)** आवेदन पत्र के बिन्दु सं. 22(2) के अनुसार विद्यालय/संस्था के आसपास के वातावरण का प्रदूषण रहित होने का संस्था के अध्यक्ष के घोषणा की प्रति संलग्न – है/नहीं **(12)** ग्रामीण क्षेत्र में स्कूल/संस्था होने पर स्वच्छ पेयजल व एहतियात के तौर पर अग्निशमन की पर्याप्त व्यवस्था होने का संस्था प्रधान/सचिव के घोषणा पत्र की सत्यापित प्रति संलग्न अथवा शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल व अग्निशमन उपकरण होने के सम्बन्ध में नगरपालिका/नगर परिषद्/नगर निगम/विकास प्राधिकरण के सक्षम अधिकारी व अग्निशमन अधिकारी के प्रमाण पत्र की सत्यापित प्रति संलग्न यदि किसी स्थानीय निकाय में अग्नि शमन अधिकारी पदस्थापित नहीं हो तो संस्था सचिव का स्वयं का घोषणा पत्र ही मान्य होगा। – है/नहीं **(13)** आवेदन पत्र के बिन्दु सं. 23(1) के अनुसार संस्था का साम्प्रदायिक तथा राजनैतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेने के सम्बन्ध में प्रबन्ध समिति द्वारा पारित प्रस्ताव के प्रमाण की सत्यापित प्रति तथा इस सम्बन्ध में सचिव का शपथ पत्र संलग्न – है/नहीं **(14)** भवन का नवीनतम सुरक्षा प्रमाण-पत्र सार्वजनिक निर्माण विभाग के सहा. अभियन्ता से प्रमाणित की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(15)** कुल छात्र संख्या के बराबर सिंगल सीटेड फर्नीचर उपलब्ध होने के सम्बन्धित स्थायी स्टॉक रजिस्टर के पृष्ठ की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(16)** छात्र/छात्राओं के लिए स्वास्थ्य प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध हैं के घोषणा पत्र की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(17)** बालिका फाउण्डेशन की रसीद की फोटोप्रति (राजकीय नियमानुसार जमा है) की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(18)** शिक्षक पूर्णरूपेण योग्यताधारी रखे जाने के सम्बन्ध में घोषणा पत्र की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(19)** आवर्तक/अनावर्तक खर्चे का विवरण की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(20)** आरक्षित राशि जमा कराने के साक्ष्य की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(21)** संस्था के आय के स्रोत एवं प्राप्त आय के विवरण की सत्यापित प्रति संलग्न – है/नहीं **(22)** राज्य सरकार/बोर्ड

को देय शुल्क/पैनल्टी आदि बकाया राशि को राजस्व भूराजस्व अधिनियम 1956 के तहत् वसूल करने के लिए चल/अचल सम्पत्तियों का शाला प्रधान/सचिव के हस्ताक्षर युक्त विवरण पत्र की मूल प्रति संलग्न – है/नहीं **(23)** बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 के अनुसार सभी शर्तों/निर्देशों की पालना कर ली गई का शपथ-पत्र संलग्न – है/नहीं **(24)** शाला भवन खेल मैदान की वीडियोग्राफी की सी.डी. एवं आवेदन-पत्र, वाँछित शपथ पत्र तथा उक्तानुसार समस्त दस्तावेजों की सॉफ्ट कॉपी की सी.डी. (मार्कर पेन से संक्षिप्त विवरण सहित) संलग्न – है/नहीं **(25)** राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था (मान्यता, सहायता, अनुदान और सेवा शर्तें आदि) नियम, 1993 की पालना में समस्त भौतिक एवं वित्तीय शर्तों की पूर्ति कर ली गई है। – है/नहीं

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त विवरण एवं आवेदन-पत्र में वर्णित तथ्य सही हैं और यदि विभाग द्वारा जाँच के दौरान कोई गलत तथ्य पाया जाता है। तो मान्यता शुल्क एवं आरक्षित कोष की राशि को जब्त कर आवेदन पत्र को निरस्त कर दिया जावे।

हस्ताक्षर संस्था सचिव

पूरा नाम ..... पूरा पता .....
.....मो.नं. .....

विद्यालय का स्थायी/अस्थायी मान्यता शुल्क रु. ..... एवं बकाया ..... माह का विलम्ब शुल्क ..... वार्षिक शुल्क .....
कुल राशि ..... बैंक में जमा कराकर डी.डी. प्रस्तुत करें।

चैक लिस्ट के अनुसार दस्तावेजों की सक्षम जाँचकर्ता अधिकारी के हस्ताक्षर
(हस्ताक्षर जाँचकर्ता अधिकारी)

पूरा नाम ..... पदनाम .....
मो.नं. .....

जाँच करने के बाद सभी दस्तावेजात एवं सी.डी. संलग्न पाये गये अतः आवेदक को आवेदन शुल्क/मान्यता फीस बैंक डिमाण्ड ड्राफ्ट से जमा कराने की स्वीकृति दी जाती है।

हस्ताक्षर जाँचकर्त्ता सक्षम अधिकारी .....

नोट :- घोषणा पत्र व शपथ पत्र सभी सम्बन्धित तथ्यों का एक-एक ही प्रस्तुत किया जा सकता है।

विशेष नोट :- अस्थायी/स्थायी मान्यता की पत्रावली में निर्धारित चैक लिस्ट-ए के अनुसार बिन्दुवार प्रलेख नम्बर डालकर समेकित करें तथा समस्त बिन्दुओं की पूर्ति होने के पश्चात् मान्यता हेतु आवेदन करें। अन्यथा पत्रावली स्वीकार नहीं की जावेगी।

8. लोक प्राधिकरणों की सुविधा के लिए पूछे जाने वाले समान प्रश्नों के उत्तर/मार्गदर्शन

• राजस्थान सरकार प्रशासनिक सुधार विभाग, सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ • क्रमांक : प.22(16)प्रसु/सूअप्र/2010 जयपुर, दिनांक 16.12.2011 • परिपत्र • सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 को लागू हुए 6 वर्ष पूरे हो गये हैं। सूचना के अधिकार ने देश के नागरिकों को समस्त लोक प्राधिकरणों के नियंत्रण में मौजूद सूचनाएँ अधिकार पूर्वक प्राप्त करने का संवैधानिक अधिकार प्रदान किया है। सूचना के अधिकार के अन्तर्गत प्राप्त आवेदनों/अपीलों की समीक्षा कर देखा गया है कि राजस्थान सूचना आयोग में भारी संख्या में अपील/परिवाद दायर हो रहे हैं व लम्बित हैं। इससे यह आभास होता है कि सूचना के अधिकार के अन्तर्गत नागरिकों को या तो सूचना समय पर प्राप्त नहीं हो रही है अथवा आवेदकों को प्रदत्त सूचना से संतुष्टि नहीं हो रही है। प्रशासनिक सुधार विभाग में लिखित व मौखिक रूप से सूचना के अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत सूचना प्रदान करने के विषय में कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं व जिज्ञासा प्रकट की जाती रही है। सभी लोक प्राधिकरणों की सुविधा के लिए पूछे जाने वाले समान प्रश्नों के उत्तर/मार्गदर्शन निम्नानुसार अंकित किये जा रहे हैं–

प्रश्न 1. सूचना प्राप्त करने का अधिकार किसे प्राप्त है?

अधिनियम की धारा 3 के अनुसार भारत का नागरिक सूचना प्राप्त करने का अधिकार रखता है। अधिनियम में निगम, संघ, कम्पनी, समूह या पदाधिकारी को, जो वैध हस्तियों/व्यक्तियों की परिभाषा के अन्तर्गत आते हैं किन्तु नागरिक की परिभाषा में नहीं आते, सूचना देने का प्रावधान नहीं है। फिर भी यदि किसी निगम, संघ, कम्पनी, संस्था, समूह या गैर सरकारी संगठन आदि के किसी ऐसे कर्मचारी या अधिकारी द्वारा प्रार्थना पत्र दिया जाता है जो भारत का नागरिक है तो उसे सूचना दी जायेगी बशर्ते वह अपना नाम अंकित करें। ऐसे मामले में यह प्रकल्पित होगा कि एक नागरिक द्वारा निगम आदि के पते पर सूचना माँगी गई है।

प्रश्न 2. सूचना का अर्थ ?

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 2(च) एवं झ (क से घ तक) के तहत किसी भी स्वरूप में कोई भी सामग्री सूचना है। इसमें किसी भी इलेक्ट्रोनिक रूप में धारित अभिलेख, दस्तावेज, ज्ञापन, ई-मेल, मत, सलाह, प्रेस विज्ञप्ति, परिपत्र, आदेश, लॉग-बुक, संविदा, रिपोर्ट, कागज पत्र, नमूने, मॉडल, आँकड़ों सम्बन्धी सामग्री शामिल है। इसमें किसी निजी निकाय से सम्बन्धित ऐसी सूचना भी शामिल है जिसे लोक प्राधिकरण तत्समय लागू किसी कानून के अन्तर्गत प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 3. एक आवेदन में कितनी सूचनाएँ माँगी जा सकती हैं?

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत आवेदक द्वारा एक आवेदन पत्र में कितनी ही सूचनाएँ माँगी जा सकती है।

प्रश्न 4. क्या सूचना माँगने के लिए कारण बताना आवश्यक है?

सूचना चाहने के लिए नागरिक को कारण बताने की आवश्यकता नहीं है कि उसे सूचना क्यों चाहिए व प्राप्त सूचना का वह किस प्रकार उपयोग करेगा।

प्रश्न 5. क्या सूचना प्राप्त करने के अधिकार में फाइल नोटिंग शामिल है?

कार्मिक, लोक शिकायतें एवं पेंशन मंत्रालय, भारत सरकार के कार्यालय ज्ञापन क्रमांक 1/20/2009–आईआर दिनांक 23.06.2009 के अनुसार सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अन्तर्गत ऐसी फाइल नोटिंग जिसमें अधिनियम की धारा 8 के तहत प्रकटन से छूट प्राप्त सूचना निहित है, को छोड़कर नोटिंग का प्रकटन लोक सूचना अधिकारी द्वारा किया जा सकता है।

प्रश्न 6. सूचना प्राप्ति के प्रार्थना-पत्र में चाही गई सूचना देने से मना किया जा सकता है?

(क) यदि माँगी गई सूचना अधिनियम की धारा 8(1) में दी गई छूटों से आच्छादित होती हो। धारा 8 में ऐसी छूटों का विवरण दिया गया है जिसके आधार पर माँगी गई सूचना को देने से मना किया जा सकता है। फिर भी धारा 8(2) में यह प्रावधान है कि उप-धारा (1) के अन्तर्गत छूट प्राप्त सूचना का प्रकटीकरण किया जा सकता है यदि प्रकटीकरण से संरक्षित हित को होने वाले नुकसान की अपेक्षा वृहतर लोक हित सधता हो। (ख) जिन मामलों में राज्य के अलावा यदि व्यक्ति के कॉपीराईट अधिकार का उल्लंघन होता हो, यह व्यवस्था धारा 9 में दी गई तथा कॉपीराईट का अधिकार प्रभावी माना गया है।

प्रश्न 7. अधिनियम की धारा 8(1) के तहत किस प्रकार की सूचना प्रकट नहीं की जा सकती है?

(क) सूचना, जिसके प्रकटन से भारत की प्रभुता और अखण्डता, राज्य की सुरक्षा, रणनीति, वैज्ञानिक या आर्थित हित, विदेश से सम्बन्ध पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो या किसी अपराध को करने का उद्दीपन होता हो, (ख) सूचना जिसके प्रकाशन को किसी न्यायालय या अधिकरण द्वारा अभिव्यक्त रूप से निषिद्ध किया गया है या जिसके प्रकटन से न्यायालय का अवमान होता है। (ग) सूचना, जिसके प्रकटन से संसद या किसी राज्य के विधान-मण्डल के विशेषाधिकार का भंग कारिता होगा, (घ) सूचना, जिसमें वाणिज्यिक विश्वास, व्यापार गोपनीयता या बौद्धिक संपदा सम्मिलित है, जिसके प्रकटन से किसी व्यक्ति की प्रतियोगी स्थिति को नुकसान होता है, जब तक कि सक्षम प्राधिकारी का यह समाधान नहीं हो जाता है कि ऐसी सूचना के प्रकटन से विस्तृत लोक हित का समर्थन होता है। (ङ) किसी व्यक्ति को उसकी वैश्वासिक नातेदारी में उपलब्ध सूचना, जब तक कि सक्षम प्राधिकारी का यह समाधान नहीं हो जाता है कि ऐसी सूचना के प्रकटान से विस्तृत लोकहित का समर्थन होता है। (च) किसी विदेशी सरकार से विश्वास में प्राप्त सूचना, (छ) सूचना जिसको प्रकट करना किसी व्यक्ति के जीवन या शारीरिक सुरक्षा को खतरे में डालेगा या जो विधि प्रवर्तन या सुरक्षा प्रयोजनों के लिए विश्वास में दी गई किसी सूचना या सहायता के स्रोत की पहचान करेगा, (ज) सूचना, जिससे अपराधियों के अन्वेषण, पकड़े जाने या अभियोजन की क्रिया में अड़चन पड़ेगी, (झ) मंत्रिमण्डल के कागज पत्र, जिसमें मंत्रिपरिषद, सचिवों और अन्य अधिकारियों के विचार विमर्श के अभिलेख सम्मिलित हैं, परन्तु यह कि मंत्रिपरिषद के विनिश्चय, उनके कारण तथा वह सामग्री जिसके आधार पर विनिश्चय किये गये थे, विनिश्चय किये जाने और विषय के पूरा या समाप्त होने के पश्चात् जनता को उपलब्ध कराए जाएँगे लेकिन यह (ञ) सूचना, जो व्यक्तिगत सूचना से सम्बन्धित है, जिसका प्रकटन किसी लोक क्रियाकलाप या हित से सम्बन्ध नहीं रखता है या जिससे व्यक्ति की एकांतता पर अनावश्यक अतिक्रमण होगा, जब तक कि, यथास्थिति, केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी या राज्य लोक सूचना अधिकारी या अपील प्राधिकारी का यह समाधान नहीं हो जाता है कि ऐसी सूचना का प्रकटन विस्तृत लोक हित में न्यायोचित है, परन्तु ऐसी सूचना के लिए, जिसको यथास्थिति, संसद या किसी विधान-मण्डल को देने से इंकार नहीं किया जा सकता है, किसी व्यक्ति को इंकार नहीं किया जा सकेगा।

प्रश्न 8. क्या सूचना 'क्यों' के रूप में माँगी जा सकती है?

अधिनियम की धारा 2(च) में परिभाषित शब्द सूचना में **क्यों** प्रश्न के उत्तर सम्मिलित नहीं है। रिट पीटिशन संख्या 419/2007 डा. सेल्सा पिण्टो बनाम गोवा राज्य सूचना आयोग के प्रकरण में गोवा स्थित बम्बई उच्च न्यायालय ने अपने निर्णय दिनांक 03.04.2008 में यह स्पष्ट किया है कि सूचना की परिभाषा अपने दायरे में क्यों वाले प्रश्नों के उत्तर सम्मिलित नहीं कर सकती है जिनका अर्थ किसी मामले विशेष के औचित्य के बारे में पूछने जैसा ही होगा। लोक सूचना अधिकारी से कोई नागरिक सूचना माँग सकता है, किन्तु इस बात का कारण संसूचित किये जाने की अपेक्षा नहीं कर सकता कि किसी निश्चिंत कार्य का क्या औचित्य था या वह क्यों किया गया या क्यों नहीं किया गया। औचित्य पर निर्णय ऐसा मामला है जो न्यायिक प्राधिकरणों के दायरे में आता है। और इसे यथोचित रूप से सूचना के रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता है।

कार्मिक, लोक शिकायतें एवं पेंशन मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने कार्यालय ज्ञापन क्रमांक 1/7/2009–आईआर दिनांक 01.06.2009 में उक्त निर्णय को उद्धृत किया है व यह अपेक्षा की है कि लोक प्राधिकरण उपरोक्त निर्णय की पालना करे।

प्रश्न 9. क्या एक लोक प्राधिकरण से दूसरे लोक प्राधिकरण को सूचना चाहने के आवेदन पत्र अन्तरण संभव है?

हाँ। सूचना का अधिकार अधिनियम में यह प्रावधान है कि यदि किसी लोक प्राधिकरण से किसी ऐसी सूचना के लिए आवेदन किया गया है कि जो किसी अन्य लोक प्राधिकरण के पास उपलब्ध है या जिसकी विषय-वस्तु किसी अन्य लोक प्राधिकरण के कार्यों से अधिक सम्बद्ध है तो आवेदन करने वाले लोक प्राधिकरण को आवेदन या उसके संगत भाग को आवेदन की प्राप्ति के 5 दिन के भीतर सम्बद्ध लोक प्राधिकरण को धारा 6(3) के अन्तर्गत स्थानान्तरित कर देना चाहिए। स्थानान्तरण के समय सम्बद्ध लोक प्राधिकरण को यह सूचित किया जाना चाहिए कि आवेदन शुल्क प्राप्त कर लिया गया है। स्थान्तरण की सूचना आवेदनकर्ता को भी दी जानी चाहिए।

प्रश्न 10. सूचना प्रदान करते समय लोक सूचना अधिकारी से क्या अपेक्षित नहीं है?

सूचना का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत केवल ऐसी सूचना प्रदान करना अपेक्षित है जो लोक प्राधिकरण के पास पहले से मौजूद है या उसके नियंत्रण में है। लोक सूचना अधिकारी द्वारा सूचना सृजित करना या सूचना की व्याख्या करना या आवेदक द्वारा उठाई गई समस्याओं का समाधान करना या काल्पनिक प्रश्नों के उत्तर देना अपेक्षित नहीं है। सूचना का सृजन करना अधिनियम के कार्यक्षेत्र में हों, को एकत्र किया जाना सूचना का सृजन किया जाना माना जाता है। आवेदन प्राप्त करने वाले लोक प्राधिकरण से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह आवेदक को सूचना प्रदान करने के लिए अलग-अलग लोक प्राधिकरणों से सूचना एकत्र करे।

आवेदक को सूचना सामान्यतः उसी रूप में प्रदान की जानी चाहिए जिसमें वह माँगता है। तथापि यदि किसी विशेष स्वरूप में माँगी गई सूचना की आपूर्ति से लोक प्राधिकरण के संसाधनों का अनपेक्षित ढंग से विचलन होता है तो अधिनियम की धारा 7(9) के तहत उस रूप में सूचना देने से मना किया जा सकता है।

प्रश्न 11. लोक सूचना अधिकारी यदि सूचना के अनुरोध को नामंजूर करे तो उसे क्या कार्यवाही करना अपेक्षित है?

जब सूचना के लिए अनुरोध को नामंजूर किया जाए तो लोक सूचना अधिकारी को अनुरोध करने वाले व्यक्ति को निम्नलिखित जानकारी देनी चाहिए– 1. अस्वीकृति

के कारण। 2. अविधि जिसमें अस्वीकृति के विरुद्ध अपील दायर की जा सके व 3. उस प्राधिकारी के नाम पदनाम व पूर्ण पते का ब्यौरा जिसे प्रथम अपील की जा सकती है।

प्रश्न 12. अपील

(क) आवेदक को सूचना निर्धारित 30 दिवस में प्राप्त न होने अथवा प्राप्त सूचना से सन्तुष्ट न होने की स्थिति जैसी भी हो आवेदक को प्रथम अपीलीय अधिकारी के समक्ष अपील प्रस्तुत करने का अधिकार प्राप्त है। ऐसी अपील के लिए न तो कोई आवेदन पत्र निर्धारित है और न ही कोई शुल्क रखा गया है। प्रथम अपील अधिकारी को अपील पर 30 दिवस में निर्णय पारित करना चाहिए। अपवाद के मामलों में अपील अधिकारी इसके निपटान के लिए 45 दिन का समय ले सकता है किन्तु अपील अधिकारी को चाहिए कि वह विलम्ब के कारणों को लिखित रूप में दर्ज करे। (ख) यदि प्रथम अपील अधिकारी निर्धारित अवधि के भीतर अपील पर आदेश जारी करने में असफल रहता है या अपीलकर्ता प्रथम अपीलीय प्राधिकारी के आदेश से सन्तुष्ट नहीं है तो वह प्रथम अपीलीय अधिकारी के निर्णय की तारीख से जिस तारीख को अपीलकर्ता को निर्णय वास्तव में प्राप्त हुआ हो से 90 दिनों की अवधि के भीतर सूचना आयोग के पास दूसरी अपील कर सकता है। ऐसी अपील के लिए न तो कोई आवेदन पत्र निर्धारित है और न ही कोई शुल्क रखा गया है।

प्रश्न 13. राजस्थान सूचना आयोग के आदेशों को क्या किसी न्यायालय में चुनौती दी जा सकती है?

सूचना आयोग का निर्णय बाध्यकारी है। लोक प्राधिकरण को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आयोग द्वारा पारित आदेश कार्यान्वित हो। यदि लोक प्राधिकरण के मतानुसार आयोग का कोई आदेश अधिनियम के अनुरूप न हो, तो वह आदेश के विरुद्ध उच्च न्यायालय में रिट याचिका दाखिल कर सकता है। • ह., प्रमुख शासन सचिव।

9. अधिनियम के महत्वपूर्ण प्रावधानों की पूर्ण पालना की ओर ध्यानाकर्षण

• राजस्थान सरकार प्रशासनिक सुधार विभाग, सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ • क्रमांक : प.3(227)प्रसु/सूअप्र/2010 जयपुर, दिनांक : 16.12.2011 • परिपत्रादेश • सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 को लागू हुए 6 वर्ष पूरे हो चुके हैं। किन्तु 6 वर्ष से अधिक समय व्यतीत होने पर भी प्रायः देखा गया है कि अधिनियम के महत्वपूर्ण प्रावधानों की पूर्ण पालना लोक प्राधिकरणों द्वारा अक्षरशः नहीं हो रही है। आपका ध्यान विशेष रूप से अधिनियम के निम्न प्रावधानों की ओर आकर्षित किया जा रहा है–

धारा–4(1) प्रत्येक लोक प्राधिकारी– (क) अपने सभी अभिलेखों को सम्यक रूप से सूचीपत्रित और अनुक्रमणिकाबद्ध ऐसी रीति और रूप में रखेगा, जो इस अधिनियम के अधीन सूचना के अधिकार को सुकर बनाता है और सुनिश्चित करेगा कि ऐसे सभी अभिलेख, जो कंप्यूटरीकृत किए जाने के लिए समुचित है, युक्तियुक्त समय के भीतर और संसाधनों की उपलब्धता के अधीन रहते हुए कम्प्यूटरीकृत और विभिन्न प्रणालियों पर सम्पूर्ण देश में नेटवर्क के माध्यम से संबद्ध है, जिससे कि ऐसे अभिलेख तक पहुँच को सुकर बनाया जा सके;

धारा–4(1) (ख) के अनुरूप अधिनियम के अधिनियमन से एक सौ बीस दिन के भीतर प्रत्येक लोक प्राधिकरण 17 बिन्दुओं की सूचना को प्रकाशित करेगा/वेबसाईट पर उपलब्ध करवायेगा तथा इन प्रकाशनों को प्रत्येक वर्ष में अद्यतन रखेगा। विभाग द्वारा देखा गया है कि अधिनियम लागू होने के 6 वर्ष के बाद भी आदिनांक तक कुछ लोक प्राधिकरणों द्वारा अधिनियम के इस प्रावधान के अनुरूप 17 बिन्दुओं की सूचना को या तो प्रकाशित ही नहीं किया गया है या प्रकाशित किया भी गया है तो उसे अधिनियम के अनुरूप के अनुरूप पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं किया गया है या उसे अद्यतन नहीं किया जा रहा है।

आपसे अनुरोध है कि आपके लोक प्राधिकरण व आपके अधीन विभागाध्यक्ष/बोर्ड/निगम/संस्थाओं द्वारा उक्त प्रावधानों की अनुपालना के निर्देश प्रदान कर पालना अविलम्ब सुनिश्चित करावें। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि निकट भविष्य में माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा सूचना के अधिकार के सम्बन्ध में विभागों की समीक्षा किया जाना संभावित है। • ह., प्रमुख शासन सचिव।

10. सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 की धारा 7 व 19 की ओर ध्यानाकर्षण

• राजस्थान सरकार प्रशासनिक सुधार विभाग, सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ • क्रमांक : प.20(10)प्रसु/सूअप्र/2011 जयपुर, दिनांक : 16.12.2011 • परिपत्र • आपका ध्यान सूचना का अधिकार अधिनियम–2005 की धारा 7 व 19 की ओर आकर्षित किया जा रहा है–

'अधिनियम की धारा 7 के अनुरूप धारा 5 की उप-धारा(2) के परन्तुक या धारा 6 की उप-धारा(3) के परन्तुक के अधीन रहते हुए राज्य लोक सूचना अधिकारी, धारा 6 के अधीन अनुरोध प्राप्त होने पर, यथासंभव शीघ्र और किसी भी दशा में, अनुरोध की प्राप्ति के तीस दिन के भीतर सूचना देगा या धारा 8 और 9 में विनिर्दिष्ट किसी कारण से अनुरोध को नामंजूर करेगा।'

'अधिनियम की धारा 19 (अपील) में स्पष्ट प्रावधान है कि आवेदक को सूचना निर्धारित 30 दिवस में प्राप्त न होने अथवा प्राप्त सूचना से सन्तुष्ट न होने की जैसी भी स्थिति हो आवेदक को प्रथम अपीलीय अधिकारी के समक्ष अपील प्रस्तुत करने का अधिकार प्राप्त है। प्रथम अपील अधिकारी को अपील पर 30 दिवस में निर्णय पारित करना चाहिए। अपवाद के मामलों में अपील अधिकारी इसके निपटान के लिए 45 दिन का समय ले सकते हैं किन्तु अपील अधिकारी को चाहिए कि वह विलम्ब के कारणों को लिखित रूप में दर्ज करे।

अतः सभी लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथम अपीलीय अधिकारीगण से अनुरोध है कि आवेदक के अनुरोध का निपटारा व प्रथम अपील का निपटारा निश्चित समयावधि में किया जाना सुनिश्चित करावें। • ह., प्रमुख शासन सचिव।

11. नियमों में आवश्यक परिवर्तन हेतु सुझाव

• राजस्थान सरकार प्रशासनिक सुधार विभाग, सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ • क्रमांक : प.20(10)प्रसु/सूअप्र/2011 जयपुर, दिनांक : 16.12.2011 • परिपत्र • मुख्य सूचना आयुक्त, राजस्थान सूचना आयोग की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में विचार रखा गया है कि– 'सूचना के अधिकार अधिनियम के आवेदन को स्वीकार करने हेतु एकल खिड़की/टेलीफोन/इंटरनेट के माध्यम के उपयोग के लिए **नियमों में आवश्यक परिवर्तन** किया जाए, ताकि विभिन्न विभागों के

लोक सूचना अधिकारियों द्वारा एकल खिड़की इत्यादि के माध्यम से आवेदन स्वीकार किए जा सकें'। कृपया उक्त के विषय में आपके सुझाव/प्रस्ताव एक सप्ताह में भिजवाने की व्यवस्था करें। जिससे प्रस्ताव पर उपयुक्त निर्णय लिया जा सके। • ह., प्रमुख शासन सचिव।

12. कलैण्डर वर्ष 2012 में सार्वजनिक अवकाश/ ऐच्छिक अवकाशों की सूची

• राजस्थान सरकार, सामान्य प्रशासन (ग्रुप-6) विभाग • क्रमांक : प.6(2)साप्र/6/2011 जयपुर, दिनांक : 14 दिसम्बर, 2011 • विज्ञप्ति • कलैण्डर वर्ष 2012 (ग्रेगोरियन) ई. शक संवत 1933-34 के दौरान निम्नलिखित दिनों को सार्वजनिक अवकाश/ऐच्छिक अवकाश राज्य सरकार सम्पूर्ण राज्य में घोषित करती है–

सार्वजनिक अवकाश

क्र.सं.	अवकाश का नाम	राष्ट्रीय कलैण्डर	ग्रेगोरियन दिनांक	दिन का नाम
1.	गणतन्त्र दिवस	6 माघ, 1933	26.1.2012	गुरुवार
2.	बारावफात	16 माघ, 1933	05.2.2012	रविवार
3.	महाशिवरात्रि	1 फाल्गुन,1933	20.02.2012	सोमवार
4.	होलिका दहन	17 फाल्गुन,1933	07.03.2012	बुधवार
5.	धुलण्डी	18 फाल्गुन,1933	08.03.2012	गुरुवार
6.	चेटीचण्ड	4 चैत्र, 1934	24.03.2012	शनिवार
7.	रामनवमी	12 चैत्र,1934	01.04.2012	रविवार
8.	महावीर जयन्ती	16 चैत्र, 1934	05.04.2012	गुरुवार
9.	गुड फ्राइडे	17 चैत्र, 1934	06.04.2012	शुक्रवार
10.	डॉ. अम्बेडकर जयन्ती	25 चैत्र, 1934	14.04.2012	शनिवार
11.	प्रताप जयन्ती	3 ज्येष्ठ, 1934	24.05.2012	गुरुवार
12.	रक्षाबंधन	11श्रावण, 1934	02.08.2012	गुरुवार
13.	जन्माष्टमी	19 श्रावण,1934	10.08.2012	शुक्रवार
14.	स्वतंत्रता दिवस	24 श्रावण, 1934	15.08.2012	बुधवार
15.	ईदुलफितर	29श्रावण, 1934	20.08.2012	सोमवार
16.	रामदेव जयन्ती व तेजा दशमी	3 आश्विन, 1934	25.09.2012	मंगलवार
17.	महात्मा गाँधी जयन्ती	10 आश्विन,1934	02.10.2012	मंगलवार
18.	नवरात्र स्थापना	24 आश्विन,1934	16.10.2012	मंगलवार
19.	दुर्गाष्टमी	30 आश्विन,1934	22.10.2012	सोमवार
20.	विजयदशमी	2 कार्तिक, 1934	24.10.2012	बुधवार
21.	ईदुलजुहा	5 कार्तिक, 1934	27.10.2012	शनिवार
22.	दीपावली	22 कार्तिक,1934	10.11.2012	मंगलवार
23.	गोवर्धन पूजा	23 कार्तिक,1934	14.11.2012	बुधवार
24.	भैया दूज	24 कार्तिक,1934	15.11.2012	गुरुवार
25.	मोहर्रम(ताजिया)	4 अग्रहायण,1934	25.11.2012	रविवार
26.	गुरुनानक जयंती	7 अग्रहायण,1934	28.11.2012	बुधवार
27.	क्रिसमस डे	4 पौष, 1934	25.12.2012	मंगलवार

ऐच्छिक अवकाश

क्र.सं.	अवकाश का नाम	राष्ट्रीय कलैण्डर	ग्रेगोरियन दिनांक	दिन का नाम
1.	क्रिश्चियन नववर्ष दिवस	11 पौष, 1933	01.01.2012	रविवार
2.	देवनारायण जयन्ती	10 माघ, 1933	30.01.2012	सोमवार
3.	विश्वकर्मा जयन्ती	16 माघ, 1933	05.02.2012	रविवार
4.	स्वामी रामचरण जयन्ती	17 माघ, 1933	06.02.2012	सोमवार
5.	गुरु रविदास जयन्ती	18 माघ, 1933	07.02.2012	मंगलवार
6.	गाडगे महाराज जयन्ती	21 माघ, 1933	10.02.2012	शुक्रवार
7.	महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती	27 माघ, 1933	16.02.2012	गुरुवार
8.	बैशाखी	24 चैत्र, 1934	13.04.2012	शुक्रवार
9.	सैन जयन्ती	28 चैत्र, 1934	17.04.2012	मंगलवार
10.	परशुराम जयन्ती	4 बैशाख, 1934	24.04.2012	शुक्रवार
11.	बुद्ध पूर्णिमा	16 बैशाख, 1934	06.05.2012	रविवार
12.	गुरु पूर्णिमा	12 आषाढ़, 1934	03.07.2012	मंगलवार
13.	शब-ए-बारात	14 आषाढ़, 1934	05.07.2012	गुरुवार
14.	थदडी	18 श्रावण, 1934	09.08.2012	गुरुवार
15.	जुमातुलविदा	26 श्रावण, 1934	17.08.2012	शुक्रवार
16.	गणेश चतुर्थी	28 भाद्र, 1934	19.09.2012	बुधवार
17.	संवत्सरी	29 भाद्र, 1934	20.09.2012	गुरुवार
18.	अनन्त चतुर्दशी	7 आश्विन, 1934	29.09.2012	शनिवार
19.	महानवमी	1 कार्तिक, 1934	23.10.2012	मंगलवार
20.	करवा चौथ	11 कार्तिक,1934	02.11.2012	शुक्रवार

नोट :– 1. वर्ष में समस्त शनिवार व रविवार का सामान्य सार्वजनिक अवकाश रहेगा। 2. निगोशिएबल इन्स्ट्रूमेंट एक्ट 1881 की धाराओं के अन्तर्गत बैंक कर्मचारियों के लिए सार्वजनिक अवकाश वित्त (मार्गोपाय) विभाग द्वारा पृथक से प्रकाशित किया जाता है। 3. स्थानीय मेला/त्यौहार आदि के उपलक्ष्य में प्रत्येक जिले में सम्बन्धित जिला कलेक्टर एवं दिल्ली स्थित राजकीय कार्यालयों में प्रमुख निवासीय/निवासीय आयुक्त कार्यालय, नई दिल्ली दो स्थानीय अवकाश घोषित करेंगे। यदि बाद में इन तिथियों के दिन राज्य सरकार के द्वारा कोई राजपत्रित अवकाश घोषित किया जाता है तो भी यह अपरिवर्तनीय रहेगा। स्थानीय अवकाश घोषित कर आदेश की प्रति सम्बन्धित जिला कलेक्टर इस विभाग को तुरन्त भिजवाएंगे। 4. कोटा जिले में जन्माष्टमी के बाद आने वाला दिन स्वतः जन्माष्टमी के स्थान पर अवकाश के रूप में माना जावेगा। 5. ऐच्छिक अवकाश की सूची में से कोई भी दो अवकाश प्रत्येक कर्मचारी को चुनकर उपभोग करने की अनुज्ञा प्रदान की जावेगी। 6. मुस्लिम अवकाश चन्द्रमा दिखाई देने पर निर्भर करेंगे। 7. यह आदेश केवल राजकीय कार्यालयों पर लागू होंगे। • ह., प्रमुख शासन सचिव।

13. शिविरा पंचांग, 2011-12 में संशोधन

• कार्यालय आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • कार्यालय आदेश • राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित पंचांग (कलेण्डर) 2012 में घोषित राजकीय अवकाशों के क्रम में शिक्षा विभागीय पंचांग (शिविरा पंचांग) 2011-12 में निम्नानुसार संशोधन किया जाता है–

अवकाश–

क्र.सं.	शिविरा पंचांग 2011-12 में घोषित अवकाश	अवकाश का प्रकार	राजस्थान सरकार के कलेण्डर के अनुसार संशोधित अवकाश
1.	5 जनवरी,2012	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	निरस्त
2.	4 फरवरी,2012	बारावफात	5 फरवरी, 2012 (चन्द्र दर्शनानुसार)

• ह., आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा/स/22418/2010-11 दिनांक 2.01.2012

14. डा. आर.के. भवन बीकानेर में विभागीय कार्मिकों के ठहरने की व्यवस्था के सम्बन्ध में।

• कार्यालय आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा/आर.के. भवन/बीका/2011-12/48 दिनांक 23.01.2012 • विषय : डा. आर.के. भवन बीकानेर में विभागीय कार्मिकों के ठहरने की व्यवस्था के सम्बन्ध में। • डा. राधाकृष्णन शिक्षक सदन, बीकानेर में वर्तमान समय में मरम्मत कार्य प्रगति पर है। विभिन्न प्रकार का मरम्मत कार्य चलने के कारण इस समय इस भवन में विभागीय कार्मिकों के रहने की व्यवस्था नहीं है। इस सम्बन्ध में आप अपने अधीनस्थ कार्यालयों को सूचित करने का श्रम करें कि जब तक मरम्मत का कार्य पूर्ण नहीं हो जाता है तथा कार्मिकों के रहने की व्यवस्था नहीं हो जाती तब तक कार्मिकों के ठहरने हेतु सम्बन्धित कार्मिक अपने स्तर पर व्यवस्था करें। मरम्मत कार्य पूर्ण होने पर तथा ठहरने की व्यवस्था प्रारम्भ होने पर तदनुसार आपको सूचित कर दिया जायेगा। • ह., संयुक्त निदेशक (प्रशासन), माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

माह : फरवरी, 2012

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.10 से 2.30 तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
6.02.2012	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		हमारी लोक संस्कृति
7.02.2012	मंगलवार	उदयपुर	11	परीक्षामाला		जीव विज्ञान
8.02.2012	बुधवार	बीकानेर	11	परीक्षामाला		गृह विज्ञान
9.02.2012	गुरुवार	उदयपुर	9	Foundation of Information Technology	Unit-II	Information Prosessing Tools-Oprating System
10.02.2012	शुक्रवार	बीकानेर	9	Foundation of Information Technology	Unit-II	Office Tools-Word Processing Tool
11.02.2012	शनिवार	जयपुर	9	Foundation of Information Technology	Unit-II	Office Tools-Word Processing Tool
13.02.2012	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		बाल विवाह एक अभिशाप
14.02.2012	मंगलवार	जोधपुर	9	Foundation of Information Technology	Unit-I	Basic of Information Technology
15.02.2012	बुधवार	उदयपुर	6	सामाजिक विज्ञान	16	आर्य सभ्यता एवं संस्कृति
16.02.2012	गुरुवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		स्वामी दयानन्द जयन्ती
17.02.2012	शुक्रवार	बीकानेर	4	विज्ञान	17	वन में रहते जीव
18.02.2012	शनिवार	जयपुर	8	हिन्दी	11	जब सिनेमा ने बोलना सीखा
21.02.2012	मंगलवार	जोधपुर	9	हिन्दी	17	बच्चें काम पर जा रहे हैं
22.02.2012	बुधवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		जल संरक्षण कितना जरूरी
23.02.2012	गुरुवार	उदयपुर	8	हिन्दी	16	पानी की कहानी
24.02.2012	शुक्रवार	बीकानेर	9	विज्ञान	13	हम बीमार क्यों होते हैं
25.02.2012	शनिवार	जयपुर	7	संस्कृत (तृतीय भाषा)	13	जलम् एवं जीवनम्
27.02.2012	सोमवार	जोधपुर	6	संस्कृत (तृतीय भाषा)	15	हिमालय :
28.02.2012	मंगलवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
29.02.2012	बुधवार	उदयपुर	6	हिन्दी	17	विनम्रता

• ह. निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर

प्रार्थना सभा कैसी हो ?

❑ अलका डॉली पाठक

यदि समाज की तुलना किसी उद्यान से की जाये तो युवा उस उद्यान का सुगन्धित पुष्प होता है। विद्यालय एक ऐसा दर्पण है जिसमें हम एक साथ एक ही स्थान पर किसी समाज के अतीत, वर्तमान और भविष्य को साकार देख सकते हैं। हम बच्चों से क्या चाहते हैं? हमारी उनसे क्या अपेक्षाएँ हैं? सीधा सा उत्तर है कि इस देश के भावी कर्णधार, हमारा सुनहरा भविष्य ये बच्चे एक अच्छे इन्सान, सच्चे नागरिक, आज्ञाकारी, विनम्र, सुसंस्कारित एवं सदाचारी बनें। सदाचार मानव को देवत्व प्रदान करता है। सदाचरण से युक्त पृथ्वी स्वर्ग है।

असतो मा सद्गमय् तमसो मा ज्योतिर्गमय्

वेदों की इस वाणी में सदाचार की सम्पूर्ण परिभाषा निहित है। तो क्यों न हम विद्यालयों में दिन की शुरुआत उत्तम ढंग से करें, क्योंकि अंग्रेजी की एक कहावत है कि Well begun is half done अर्थात यदि दिन की शुरुआत अच्छी होगी तो समझ लो कि आधा काम हो गया। इसलिए प्रातःकालीन सभा में ही हम विद्यार्थियों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं।

विद्यार्थी जीवन वह सुनहली अवस्था है जब जीवन नितान्त सरल, मन निष्कपट, मधुर और उत्साहभरी आशाओं से पूर्ण होता है। इस काल में विद्यार्थी अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के स्वप्न देखता है। इस काल की दो मुख्य विशेषताएँ हैं। प्रथम यह कि इस काल में शिशु की ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ नया-नया विकास आरम्भ करती है। एक ओर तो वे शुद्ध गीली मिट्टी या साफ कागज की भाँति निर्मल और शुद्ध-पवित्र होती हैं, अतः उन पर जो भी प्रभाव अंकित किए जाएँ वे शीघ्र ही पत्थर की लकीर बन जाते हैं। दूसरी ओर इस काल में विद्यार्थी के शरीर, मन और बुद्धि में ग्रहणशीलता अधिक होती है और जो भी ज्ञान या अनुभव उसके सामने प्रस्तुत किए जाएँ, वह उन्हें शीघ्र ही आत्मसात कर लेता है। इसलिए इस काल में उसकी निरीक्षण-शक्ति अधिक सक्रिय होती है। यही वह समय है जब भले या बुरे प्रभावों की जड़ें जमाई जा सकती है।

विद्यार्थी जीवन को जीवन की मधुर

अवस्था कहा जा सकता है यह जीवन की प्रसन्नता एवं आनन्द की अवस्था है। इस अवस्था में दुःख व चिन्ताएँ क्षणिक होती हैं जो पानी के बुलबुले की तरह उठती हैं और समाप्त हो जाती हैं इस समय व्यक्ति उछलते, कूदते, खेलते जीवन का भरपूर आनन्द लेता है।

यह सत्य है एवं सभी को मान्य है कि विद्यार्थी जीवन समस्त मानव जीवन की आधारशिला है और उसके आदर्श गुण इसकी ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ। आज हम सभी को अपने प्रयासों से एकलव्य, युधिष्ठिर, शिवाजी, शहीद भगत सिंह, चन्द्रगुप्त, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, सरोजनी नायडू, सुभाषचन्द्र बोस, शकुन्तला देवी (गणितज्ञ) एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आजाद पैदा करने हैं। विद्यार्थी जीवन मानव जीवन की स्वर्णिम वेला है। ध्यान रहे कि गया समय फिर कभी हाथ नहीं आता। प्रमादी छात्र समय के सदुपयोग को नहीं समझते। समय बहुत मूल्यवान है इसलिए हम काम को टालें नहीं। विद्यार्थियों को यह उक्ति याद रखनी चाहिए कि .....

काल करें सो आज कर आज करें सो अब
पल में प्रलय होएगी बहुरि करेगो कब

जिन विद्यार्थियों ने इसे अपना ध्येय वाक्य बना लिया वे जीवन में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते जाते हैं। कुछ विद्यार्थी किसी कार्य को करने से पहले ही घबरा जाते हैं एवं स्पष्ट शब्दों में कह देते हैं 'मैं यह काम नहीं कर सकूँगा'। हमें उनको इस प्रकार की नकारात्मक सोच से बचाना है कि वो हमेशा सकारात्मक सोचें एवं इतना नैतिक बल का विकास करें कि उनकी नींव इतनी प्रबल हो कि वो No को No कह सकें। "Say No to No".

बचपन का समय उस नन्हें पौधे के समान होता है जिसे माली सींचकर एक बड़ा वृक्ष बनाता है, ऐसा वृक्ष जो अपनी छत्रछाया में न जाने कितने लोगों को आश्रय देने के योग्य बन जाता है। विद्यार्थी जीवन ऐसा ही जीवन है विद्यार्थी ही पौधे के रूप में गुरु के सम्पर्क में आता है और गुरु रूपी माली उसे सींचकर मजबूत वृक्ष बना देता है।

वैसे तो सीखने की कोई उम्र नहीं होती। व्यक्ति, विशेष तौर पर जिज्ञासु व्यक्ति जीवन के अंतिम क्षण तक भी कुछ सीखता रहता है। यूँ तो विद्यालय में हर कालांश में बच्चे अपने विषय सम्बन्धी ज्ञान अध्यापक से एवं अध्ययन से प्रतिदिन लेते हैं परन्तु विषय से हटकर कुछ सीखने सिखाने के लिए प्रार्थना सभा का समय अति उत्तम है। अध्यापक के पास भी इतना समय नहीं होता है कि वो कक्षा में अपने विषय के अतिरिक्त कुछ विशेष सिखा सके। हाँ इतना अवश्य है कि शिक्षक को ज्ञानवान और जिज्ञासु होना चाहिए तभी विद्यार्थियों का ज्ञान बढ़ेगा एवं वे भी जिज्ञासु प्रवृत्ति के होंगे।

प्रतिदिन प्रार्थना सभा में ही बहुत कुछ अच्छी गतिविधियाँ कर लें तो कैसा रहेगा? आइये हम विचार करें कि प्रार्थना सभा कैसी हो? उसमें किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए? सर्वप्रथम हम अपने संस्कार न भूलें। सुबह-सुबह अध्यापक-अध्यापिकाओं के चरण स्पर्श करना कभी न भूलें। घंटी बजते ही प्रार्थना सभा में पंक्तिबद्ध खड़े हों, अनुशासन में रहें क्योंकि अनुशासन सफलता की कुंजी है। विद्यार्थी जीवन सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं अनुशासन के सूत्रपात का जीवन होता है। किसी भी मनुष्य का भविष्य कैसा होगा यह उसके विद्यार्थी जीवन से ही ज्ञात होता है। यह वह समय है जब उसके भविष्य की सुन्दर इमारत की पहली ईंट रखी जाती है। नींव की वह ईंट इतनी महत्वपूर्ण है, यह प्रत्येक को समझ लेना चाहिए क्योंकि नींव दृढ़ होती है तो उस पर बनने वाली इमारत भी बहुत सशक्त एवं मजबूत बनती है। वह इमारत इतनी मजबूत होती है कि परिस्थिति रूपी आँधियों के थपेड़े और तूफानों का भी

सामना सरलता से कर पाती है। अगर इमारत ही कमजोर होती है तो जरा-सा झटका लगने पर धराशायी हो जाती है। छात्र जीवन परिश्रम, अनुशासन, संयम एवं नियम का जीवन होता है। वास्तव में अनुशासन वह मूल धरातल है जिस पर खड़े हो और शिक्षा प्राप्त कर प्रत्येक विद्यार्थी अपनी भावी सफलता के द्वार खोल लेता है। 'योग भगाये रोग' इसलिए थोड़ा सा योगाभ्यास अथवा पी.टी. प्रतिदिन अवश्य करनी चाहिए। क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का विकास होता है। तत्पश्चात् जो भी मंत्र अथवा प्रार्थना विद्यालय की डायरी में लिखी हो वो तन्मय होकर गाई जाये। आज का विचार एवं एक आश्चर्यजनक तथ्य भी विद्यार्थियों द्वारा मंच पर बोला जाए। समाचार पढ़ना अति आवश्यक है। प्रार्थना सभा नीरस न हो इसलिए थोड़ा सा हँसी का वातावरण बनाया जाये।

इस बात का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए कि प्रार्थना सभा एक ही तरह की न हो। उसमें विविधता अति आवश्यक है क्योंकि कोई भी कार्य एक ही प्रकार से करने से नीरसता आती है एवं बच्चों की रुचि कम हो जाती है। जैसे कि स्थिर पानी के तालाब में कंकड़ डालो, हिलता पानी कितना अच्छा लगता है। कहने का अभिप्राय यह कि थोड़ी सी आत्मविश्वास की बात, थोड़ी सी देश प्रेम की बात, सकारात्मक सोच की बात, कभी समय के सदुपयोग की बात, कभी विनम्रता की बात, कुछ दृढ़ विश्वास की बात, कभी पर्यावरण की बात, कभी पौष्टिक आहार की बात तो कभी सद्भावना की बात। सामूहिक प्रतिज्ञा की जाये तो इससे आत्मविश्वास बढ़ता है। विनम्रता व्यक्ति को परोपकारी बनाती है। विनम्र व्यक्ति ज्ञानवान और गुणवान होता है और जानता है कि वास्तव में ज्ञान का और गुणों का क्या महत्व है। ज्ञान की कोई सीमा भी नहीं है, इस सत्य से परिचित गुणी विद्यार्थी एक आदर्श विद्यार्थी के रूप में विकसित होता है, और दूसरों से राग-द्वेष करने की अपेक्षा वह हमेशा दूसरों की मदद करता है। तुलसीदास ने कहा है– *'वृक्ष कबहुँ नहि फल भखै, नदी न संचै नीर,/परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर।'*

साधु व्यक्ति परमार्थ के लिए ही शरीर धारण करता है और आदर्श विद्यार्थी भी अपने भविष्य में एक सज्जन और साधु व्यक्ति के रूप में परिणत होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात कि विद्यार्थी पूर्ण गणवेश में आयें क्योंकि 'Uniform shows Uniformity" किसी विद्यार्थी एवं अध्यापक का जन्म दिवस हो तो वो प्रातःकालीन सभा में ही सामूहिक रूप से मनाया जाये एवं स्वयं हाथ से बनाये हुए कार्ड उनको दिये जाएँ। देखिए कितना अच्छा लगेगा, उसे जिसका जन्मदिन हो ! इसी तरह महापुरुषों के जन्मदिवस एवं विशेष दिवसों का आयोजन भी किया जाये। कभी राष्ट्रगान तो कभी राष्ट्रीय गीत गाया जाये इन्हें राष्ट्रगान एवं राष्ट्रीय गीत के अंतर का ज्ञान होना चाहिए उनके लेखकों के बारे में मालूम होना चाहिए क्योंकि बच्चे तो क्या बड़े-बड़े लोग कई बार ये भूल कर जाते हैं राष्ट्रगान को वंदेमातरम से जोड़ देते हैं तो राष्ट्रीय गीत को जन-गण-मन से। यदि "तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो" प्रार्थना गायें तो इसमें भी एक पंक्ति आती है– 'जो खिल सकें न वो फूल हम हैं' यदि सकारात्मक सोचें तो हम इस पंक्ति को इस प्रकार गा सकते हैं 'जो खिल रहे हैं वो फूल हम हैं' यदि सकारात्मक सोचें तो हम इस पंक्ति को इस प्रकार गा सकते हैं 'जो खिल रहे हैं वो फूल हम हैं' तो कैसा रहेगा? यह सब छात्र-छात्राओं द्वारा ही मंच पर किया जाना चाहिए। जितनी विद्यार्थियों की सहभागिता होगी वे उतनी अधिक रुचि लेंगे। यदि हम ऐसा करें तो हम प्रतिदिन अनुमानतः 12 विद्यार्थियों को मंच पर आने का अवसर दे सकते हैं, इससे एक तो उनमें आत्मविश्वास बढ़ेगा एवं बड़े होकर मंच पर जाने की हिचकिचाहट नहीं रहेगी।

विशेष तौर से विद्यार्थियों को बाल सभा के लिए तैयार किया जाना चाहिए। बाल सभा में कुछ विविधता को महत्व देते हुए कभी पेड़-पौधे लगवाये जायें, कभी लघु नाटिका, तो कभी नृत्य, कभी प्रेरक प्रसंग तो कभी स्थानीय विद्वानों को आमंत्रित किया जाये। परन्तु हमें ये अवश्य कभी-कभी देखना चाहिए कि बच्चे जो सुन रहे हैं उसे समझकर स्मरण भी करते हैं या नहीं इसलिए समय-समय पर प्रधानाध्यापिका अथवा प्राचार्या द्वारा प्रार्थना सभा में उनसे इससे सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाने चाहिए एवं सही बताने वालों को कुछ पुरस्कार भी मिलना चाहिए। क्योंकि पुरस्कार में भी बहुत शक्ति निहित है। कभी-कभी कुछ विशेष उपलब्धि अर्जित करने वाले अध्यापक, अध्यापिकाओं एवं विद्यार्थियों की प्रशंसा भी की जानी चाहिए। हम जो विद्यालय में सीखते हैं वो जीवन में हमेशा याद रहता है ये मेरा स्वयं का अनुभव है। अतः .....

नई पीढ़ी में नए संस्कार चाहिए,
देश के प्रति हृदय में प्यार चाहिए,
छोड़ सुख-सुविधा कठिन व्रत लें बढ़ें आगे
क्योंकि परस्पर सौहार्द्र का संसार चाहिए।

आप शायद ऐसा सोच रहे होंगे कि इतनी लम्बी प्रार्थना सभा में तो दिन बीत जायेगा, बच्चे कब पढ़ेंगे। नहीं नहीं ऐसा कदापि नहीं है आप प्रयास करके देखिए ये सारा कार्य हम 15 मिनट में कर सकते हैं।

वास्तव में विद्यार्थी जीवन तो झरने का वेग है, सागर का विस्तार है, समाज का ऐसा क्षितिज है, जो आगे ही आगे चलता है जब तक कि उसके पैरों में ताकत है। क्योंकि–

चलते रहने को मंज़िल कहते हैं,
हर रास्ते के बाद भी रास्ता होता है।

–प्राचार्या
दयानन्द पब्लिक सी.सै. स्कूल, बीकानेर

कैसे बनाएँ प्रार्थना सभा को प्रभावी

❑ मनीष कुमार गहलोत

विद्यालय में प्रार्थना सभा कार्यक्रम का अपना महत्व होता है। प्रार्थना सभा कार्यक्रम किसी भी विद्यालय का दर्पण होता है क्योंकि प्रार्थना सभा कार्यक्रम के द्वारा यह मालूम किया जा सकता है कि विद्यालय का शैक्षणिक स्तर कैसा है? अनुशासन कैसा है? जहाँ तक अनुशासन की बात है यह देखा गया है कि जिस विद्यालय में प्रार्थना सभा कार्यक्रम संचालन सही ढंग से नहीं होता है उस विद्यालय के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति मिलती है। विद्यार्थियों में अनुशासन का पाठ पढ़ाने व उनके सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि प्रार्थना सभा कार्यक्रम को प्रभावी बनाया जाए। चूँकि विद्यार्थी विद्यालय में प्रवेश करने के बाद अध्ययन की शुरुआत प्रार्थना सभा से ही करता है। अतः यहीं से ही उसके सर्वांगीण विकास की नींव रखनी चाहिए। शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित 30 मिनट के कार्यक्रम में बिना किसी बड़े फेरबदल के इसको प्रभावी बनाया जा सकता है इसके लिए इसके संचालन व निर्धारित कुछ हिस्से में परिवर्तन करके प्रभावी बनाया जा सकता है। निम्न उपाय के द्वारा प्रार्थना सभा को रुचिकर व ज्ञानवर्धक बनाया जा सकता है–

– प्रार्थना सभा कार्यक्रम के संचालन में महत्वपूर्ण परिवर्तन करते हुए इसका दायित्व विद्यार्थियों को सौंपा जाए। इसके लिए चार विद्यार्थियों का चयन किया जाए। इन विद्यार्थियों का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखें कि इसमें दो विद्यार्थियों में नेतृत्व करने की क्षमता हो तथा दो ऐसे विद्यार्थियों का चयन किया जाए जो अनुशासित व पढ़ाई में होनहार हो। यदि विद्यालय में सहशिक्षा हो तो चयनित चार प्रार्थना मॉनीटर में दो लड़कियों का चयन किया जाए। निश्चित समयान्तराल बाद अन्य विद्यार्थियों को यह दायित्व सौंपा जाए।

– प्रार्थना मॉनीटर ही प्रार्थना का सम्पूर्ण संचालन करें। जैसे कि प्रार्थना के लिए घण्टी लगाना, प्रार्थना के लिए छात्रों की लाइन बनाना, प्रार्थना कार्यक्रम के अनुसार छात्रों को बुलाना तथा कक्षा में छात्रों को कक्षावार भेजने आदि कार्य वही करें।

– प्रार्थना सभा में सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कक्षावार कार्यक्रम निश्चित कर देना चाहिए। जैसे कक्षा 6 के एक विद्यार्थी रोल नम्बर के अनुसार प्रत्येक दिन अनमोल वचन बोलेगा, कक्षा 7 से एक विद्यार्थी प्रेरक प्रसंग बोलेगा, कक्षा 8 का एक विद्यार्थी प्रतिज्ञा बोलेगा इसी प्रकार कक्षा 9 से एक विद्यार्थी दैनिक समाचार सुनायेगा।

– प्रार्थना सभा में सप्ताह में एक बार छात्रों के नाखून, दाँत तथा ड्रेस आदि का निरीक्षण करना चाहिए। यह कार्य चारों प्रार्थना मॉनीटर की देखरेख में होना चाहिए।

– प्रार्थना सभा में शिक्षकों की भूमिका मार्गदर्शक की होनी चाहिए। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि सभी शिक्षक प्रार्थना सभा में सक्रिय रूप से भाग लें। प्रत्येक शिक्षक का यह दायित्व बने कि वह समय-समय पर ज्ञानवर्धक जानकारी दें। यह जानकारी उसके स्वयं के विषय से सम्बन्धित या अन्य जानकारी भी हो सकती है।

– प्रार्थना कार्यक्रम की रोचकता बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि इसके कुछ हिस्से में समय-समय पर परिवर्तन किया जाए। जैसे सामान्य ज्ञान-विज्ञान की जानकारी, अंग्रेजी के शब्दों की जानकारी, रोचक तथ्य तथा प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आदि को एक समय अन्तराल के बाद शामिल करना चाहिए।

– अगर विद्यालय में बीते दिन अगर किसी कक्षा या किसी छात्र ने प्रशंसनीय कार्य किया है तो प्रार्थना सभा के मंच पर उस छात्र या कक्षा को आगे बुलाकर प्रोत्साहित किया जाए। प्रोत्साहन के रूप में पुरस्कार देना चाहिए। जिससे अन्य छात्रों को भी कुछ अच्छा करने की प्रेरणा मिले।

– अगर विद्यालय में बीते दिन किसी छात्र या कक्षा द्वारा अगर कोई अप्रिय घटना हुई है तो प्रधानाध्यापक का यह दायित्व है कि उस घटना के सभी पहलुओं को बताते हुए उसकी आलोचना करनी चाहिए। छात्रों के सामने इस प्रकार प्रस्तुतीकरण करना चाहिए कि जिससे वे कभी भी इस प्रकार की पुनरावृत्ति ना करें।

– कोई छात्र अगर किसी दिन विद्यालय में अनुपस्थित रहे तो वह इसकी सूचना अपने साथी या किसी अन्य माध्यम से प्रार्थना मॉनीटर को देवें तथा प्रार्थना मॉनीटर सम्बन्धित छात्र की सूचना कक्षाध्यापक को देवें।

– महीने में एक बार प्रार्थना सभा के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम को रद्द करके इसकी जगह कुछ नया करना चाहिए जैसे– प्रार्थना सभा में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की जानी चाहिए। शिविरा पंचांग द्वारा निर्धारित प्रार्थना के लिए आधे घण्टे के समय में पूरे विद्यालय की लिखित परीक्षा संभव नहीं है। अतः इसके लिए चुने हुए विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाना चाहिए। चुने हुए पाँच से छः विद्यार्थियों के मध्य यह प्रतियोगिता आयोजित करनी चाहिए। यह प्रतियोगिता मौखिक होनी चाहिए जिससे कि शेष विद्यार्थी भी सक्रिय रहे। इसी प्रकार यही प्रतियोगिता अंग्रेजी मीनिंग की भी आयोजित की जा सकती है। कुछ प्रतियोगिता ऐसी आयोजित करनी चाहिए कि प्रार्थना सभा में बैठे सभी विद्यार्थी एक साथ भाग ले सकें।

– वर्ष में एक बार गणतंत्र दिवस या स्वतंत्र दिवस पर बेस्ट प्रार्थना मॉनीटर का पुरस्कार देना चाहिए। जिससे कि दूसरे विद्यार्थी भी प्रार्थना मॉनीटर बनने के लिए प्रेरित हो।

– प्रार्थना कार्यक्रम को प्रभावी बनाने में सबसे प्रमुख भूमिका प्रार्थना मॉनीटर की होगी। प्रार्थना मॉनीटर इस महत्वपूर्ण भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन तभी कर सकेगा जब कक्षाओं में कक्षा मॉनीटर प्रभावी ढंग से अपना कार्य कर रहे हों।

– कक्षा मॉनीटर का मनोनयन प्रार्थना सभा में करना चाहिए। यह कार्य कभी-कभी प्रार्थना मॉनीटर से करवाना चाहिए।

– महीने में कम से कम एक बार प्रार्थना

1. हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ
अज्ञानता से हमें तार दे माँ
तू स्वर की देवी, है संगीत तुझसे
हर साज तेरा, हर गीत तुझसे
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे
तेरी शरण हम, हमें प्यार दे माँ। हे शारदे माँ ...

ऋषियों ने समझी, मुनियों ने जानी
वेदों की भाषा, पुराणों की वाणी
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें
विद्या का हम को तू वरदान दे माँ। हे शारदे माँ ...

तू श्वेतवर्णी कमल पर विराजै
हाथों में वीणा मुकुट सर पै साजै
मन से हमारे मिटा दे अंधेरा
हमको उजाले का संसार दे माँ। हे शारदे माँ ...

2. तू ही राम है, तू रहीम है

तू ही राम है, तू रहीम है
तू करीम, कृष्ण, खुदा हुआ।
तू ही वाहे गुरु, तू यीशु मसीह
प्रति नाम में तू समा रहा।
तेरी जोत पाक कुरान में
तेरा दरस वेद-पुराण में
गुरु-ग्रन्थ जी के बखान में
तू प्रकाश अपना दिखा रहा। तू ही राम है ...

अरदास है, कहीं कीरतन
कहीं रामधुन, कहीं आवाहन
विधि-भेद का यह सब रचन
तेरा भक्त तुझ को बुला रहा।
तू ही राम है, तू रहीम है
तू करीम, कृष्ण, खुदा हुआ।

3. मन विजय करें

हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें,
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।
भेद भाव अपने दिल से साफ कर सकें,
दोस्तों से भूल हो तो मुआफ कर सकें।
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें, दूसरों की जय ...

मुश्किलें पड़ें तो हम पर इतना करम कर,
साथ दें तो धर्म का, चलें तो धर्म पर।
खुद पे हौंसला रहे, बदी से ना डरें, दूसरों की जय ...

4. हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं।
बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे-प्यारे फूल गुंथे माला में एक हैं।
कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक हैं।
गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी
जाके मिल गई सागर में हुई सब एक हैं।
हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं।
रंग-रूप, वेश-भाषा, चाहे अनेक हैं।

सभा का सम्पूर्ण संचालन अध्यापकों की अनुपस्थिति में विद्यार्थियों के द्वारा किया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और नेतृत्व की भावना विकसित होगी तथा प्रधानाध्यापक को प्रार्थना कार्यक्रम के संचालन में विद्यार्थियों की कुशलता का मूल्यांकन हो सकेगा।

– प्रार्थना मॉनीटर के संचालन का फीडबेक लेने के लिए समय-समय पर प्रार्थना में शामिल विद्यार्थियों से यह पूछना चाहिए कि प्रार्थना मॉनीटर के संचालन को और प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है। जिससे दोनों पक्ष सक्रिय रहेंगे।

– ऐसे विद्यार्थी जो प्रार्थना कार्यक्रम में अपनी संकोची प्रवृत्ति के कारण ज्यादा सक्रिय रूप से भाग नहीं लेते ऐसे विद्यार्थियों की इस प्रवृत्ति को खत्म करने के लिए कक्षाध्यापक का यह दायित्व बनता है कि वह एक दिन पूर्व कक्षा को सूचित करे कि फला विषय से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर प्रार्थना में पूछे जाएँगे। प्रार्थना सभा में पूरी कक्षा से प्रश्न ना पूछकर केवल 3 से 5 बच्चों से ही पूछा जाए। ऐसा केवल महीने में 2 से 3 बार ही किया जाए।

उपर्युक्त बिन्दुओं के अनुसार प्रार्थना कार्यक्रम का संचालन करके प्रार्थना सभा को रुचिकर व अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। इसके प्रतिफल के रूप में विद्यार्थियों में अनुशासन व नेतृत्व गुण विकसित होगा तथा विद्यार्थियों को जिम्मेदारी का एहसास होगा। इस तरह विद्यालयों में अनुशासनहीनता की समस्या काफी हद तक हल हो जायेगी। इसकी सफलता पूर्णतः प्रधानाध्यापक व उनके सहयोगी अध्यापकों पर निर्भर करेगी। विद्यार्थियों को सही दिशा में आगे बढ़ाया जा सकता है।

–शिव मन्दिर, किसमीदेसर
भीनासर, बीकानेर (राज.)

विद्यालयी अनुशासन व शिक्षक की भूमिका

❑ रामवीर सिंह सोलंकी

विद्यालय में अनुशासन का होना एक महत्वपूर्ण बिन्दु है जो कि बालक का सर्वांगीण विकास करने में अपनी महती भूमिका अदा करता है। वैसे तो बालक में परिवार से ही संस्कार दिये जाते हैं इसलिए हमारे मनीषियों ने कहा है कि परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला है। (Family is the First School of the Child)

यदि किसी भी कारण से बालक में अच्छे संस्कार परिवार नहीं दे पाता है तो इसके बाद विद्यालयी वातावरण में शिक्षकों के सान्निध्य में इसका सुअवसर बालक को मिलता है। विद्यालय में अध्यापक का दायित्व बन जाता है कि उसको वह अच्छे संस्कार दे उसको ऐसी प्रवृत्तियों से रोके जो कि उसका शारीरिक मानसिक तथा सामाजिक रूप से पतन का कारण बनता हो बालक में जो आदत पड़ जाती है वह धीरे-धीरे उसमें एक कर्म का रूप धारण कर लेती है तथा वह स्थाई रूप से उसका अभिन्न अंग बन जाती है। इस प्रकार अच्छे कर्म तथा बुरे कर्म के रूप में मान्यता प्रदान की जाती है तथा इसी प्रकार उसको अच्छा बालक तथा खराब बालक की संज्ञा दे दी जाती है।

शिक्षक बनें प्रेरणा के स्रोत– एक आदर्श शिक्षक का दायित्व बन जाता है कि उसको अच्छी आदतों के लिए प्रेरित करे। जैसा कि ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करना, मांस, मदिरा, धूम्रपान का सेवन न करना, झूठ न बोलना, चोरी न करना, किसी की निन्दा न करना आदि बुरे व्यसनों से दूर रहने की जानकारी देकर उनसे बचने के लिए उन्हें प्रेरित किया जाना चाहिए। क्योंकि यदि बालक ब्रह्मचर्य का पालन करेगा तो उसमें स्वाभाविक रूप से सद्गुण आएँगे। अर्थात् ब्रह्मचर्य में सभी सद्गुणों का वास होता है जैसे कि गन्ने में सभी मिठाइयों का वास होता है। इसके साथ ही यदि उसमें बुरे व्यसन मांस, मदिरा, धूम्रपान, झूठ बोलना, चोरी करना, किसी की निन्दा करने से उसका पतन तो निश्चित होता ही है तथा साथ ही वह सभी का घृणा का पात्र बन जाता है। तो इस प्रकार की अच्छी आदतों की प्रेरणा प्रार्थना सभा में बालक व बालिकाओं को दी जानी चाहिए। यह उनके जीवन का सर्वोत्तम अनुशासन होगा। जो उसके जीवन को सुखदायी बनायेगा। अनुशासन डराने, धमकाने व दण्डित करने से नहीं होता है। जिससे कि वे भय के कारण अपनी पढ़ाई ही छोड़ दें तथा विद्यालय छोड़ने के बाद उनसे यह सुना जाये कि मैंने पढ़ाई अमुक अध्यापक के कारण छोड़ दी ऐसा कई बार छात्रों से सुना जाता है तो इस प्रकार उनके जीवन से खिलवाड़ हो जाती है।

प्रेम के द्वारा शिक्षा (Education by Love)– समय के साथ-साथ शिक्षा को प्रेम के द्वारा ही उचित मानते हुए हमारी सरकार ने दण्ड की शिक्षा को भय की शिक्षा मानते हुए इसमें बदलाव किया है। क्योंकि भय के कारण ही अक्सर शिक्षार्थी विद्यालय छोड़ दिया करते हैं। बालक को प्रेम के द्वारा दी गई शिक्षा विद्यालय आने के लिए आकर्षित करेगी तथा विद्यालय में नामांकन वृद्धि भी इसी विधि के द्वारा सम्भव हो सकेगी। इसलिए एक आदर्श शिक्षक वही है जो कि शिक्षार्थी को इस प्रकार की शिक्षा दे कि वह शिक्षार्थी अपने को आनन्दित करता हुआ अन्यों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बने इसलिए इस तकनीकी युग में शिक्षा, शिक्षक व शिक्षार्थी का वास्तविक समन्वय ही आज के समय का सही सन्तुलन होगा।

कथनी व करनी में एकरूपता– विद्यालय में आदर्श शिक्षक की भूमिका तभी सार्थक कही जा सकती है जब वह अपनी कथनी और करनी में एकरूपता रखेगा। उसी के शब्दों का शिक्षार्थी अनुकरण करेगा तथा वही आचरण शिक्षार्थी को प्रभावित कर सकेगा। यदि इसके विपरीत कथनी व करनी के महत्व को नकारते हुए शिक्षक अपना प्रदर्शन करेगा तो उसका शिक्षार्थी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा न वह उसका अनुकरण ही करेगा क्योंकि छात्र शिक्षक की प्रत्येक गतिविधि को बारीकी से अवलोकन करते रहते हैं। आदर्श शिक्षक की भूमिका को सही अर्थ में शिक्षार्थी तथा संरक्षक के द्वारा ही व्यक्त किया जा सकता है। यदि शिक्षार्थी व संरक्षक शिक्षक के व्यवहार से संतुष्ट होंगे तो निश्चित रूप से उस शिक्षक को आदर्श शिक्षक की मान्यता प्रदान की जा सकेगी। इस प्रकार का शिक्षक का व्यवहार शैक्षिक जगत में तो प्रेरणास्पद तो होगा ही तथा साथ-साथ समाज में भी अनुकरणीय होगा। (Example is better than precept)

शैक्षिक गतिविधि एवं शिक्षक दृष्टिकोण– शैक्षिक जगत में शिक्षक का योगदान महत्वपूर्ण होता ही है। लेकिन उसके साथ-साथ विद्यालयी वातावरण में अनुकरणीय तभी सम्भव हो सकेगा जब वह निम्नलिखित बिन्दुओं का पालन करेगा। (According to the experienced persons who say the teacher is a lamp which gives light to the society).

1. शिक्षक का विद्यालय में समय पर आना। 2. विद्यालय में आने के बाद अपने प्रत्येक कालांश में छात्र व छात्राओं को उनके स्तर के अनुरूप अपनी प्रस्तुति देना। 3. परीक्षार्थियों को परीक्षा के दौरान नकल प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना ही एक आदर्श शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जो शिक्षक बन्धु छात्र/छात्राओं को नकल करने के लिए प्रेरित करते हैं उनको प्रत्यक्ष रूप से अंधकार में ढकेलते हैं तथा उनके विकास को अवरुद्ध कर गर्त में ढकेल कर समाज में पतित बना देते हैं इस

प्रकार के शिक्षक अपनी प्रतिष्ठा को दाँव पर लगाने के साथ-साथ बालकों के दुश्मन के रूप में जाने जाते हैं। 4. छात्र व छात्राओं को भिन्न-भिन्न प्रकार के अनावश्यक शब्दों से नामकरण न करना। जैसे– भौंदू, बुद्धू, मूर्ख, बेवकूफ, गधा, उल्लू, बदतमीज आदि क्योंकि इस प्रकार सम्बोधित करने से छात्र/छात्राओं के अन्दर जो छिपी हुई प्रतिभा होती है उसका पतन हो जाता है तथा वे अपनी भावनाओं को शिक्षक के सामने प्रकट करने में संकोच करते हैं। 5. शिक्षक को उनके मनोबल बढ़ाने के लिए प्रयत्न करने चाहिए। समय-समय पर उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए ताकि उनमें शिक्षक के प्रति आकर्षण होगा तथा उनकी इच्छा शक्ति में भी वृद्धि होगी। 6. शिक्षक का शिक्षा देने का माध्यम सरल स्पष्ट संक्षिप्त व सुग्राह्य होना चाहिए। 7. बालकों को नैतिक रूप से मजबूती प्रदान करने के लिए समय-समय पर यानि प्रार्थना सभा में या विशेष उत्सवों पर अधोलिखित सम्बन्धों के विषय में समझाया जाना चाहिए। जैसा कि हमारे शास्त्रों में लिखा हुआ है माता-पिता, गुरु, अतिथि व अपने से बड़े जो हमारे पूजनीय हैं, उनके प्रति आचरण किस प्रकार किया जाये तथा स्वस्थ समाज का निर्माण करने में एक बालक की क्या भूमिका हो सकती है। उसको विधिवत रूप से समझाया जाना चाहिए।

इस प्रकार के शिक्षक के आचरण से स्वस्थ समाज तथा स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करने में वे अपना योगदान दे सकते हैं।

–शारीरिक शिक्षक, डी.पी.एड एन.आई.एस.
रा.उ.प्रा.वि., जाटौली घना सेवर (भरतपुर)

प्रारब्ध प्रधान या पुरुषार्थ

❑ किशन कुमार लखाणी

जीवन के पथ पर हमें नित्य नये-नये अनुभवों का अहसास होता रहता है, जिन्दगी के सफर में हम कभी सफल होते हैं और कभी असफल। कठोर परिश्रम, मेहनत और लगन के बावजूद भी कई बार ऐसा होता है कि हमारे वांछित उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाती या उसमें कुछ रुकावट उत्पन्न हो जाती है। इसके विपरीत कई बार बिना मेहनत किए ही अनचाही सफलता हमारी झोली में आ जाती है अथवा थोड़े से परिश्रम से ही मनोकामना की पूर्ति हो जाती है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ जीवन का कटु सत्य है, परन्तु विचारणीय बिन्दु यह है कि अनुकूल परिस्थितियों में परिस्थितिजन विरोधाभास के बावजूद हमारी सोचने की स्थिति में भी परिवर्तन आ जाता है। अनुकूल-प्रतिकूल दोनों ही परिस्थितियाँ सांसारिक है और शरीर का सम्बन्ध भी संसार के साथ है, अतः इन परिस्थितियों का सामना हमें अवश्य ही करना पड़ता है। लेकिन कोई भी परिस्थिति हमारे समक्ष स्थिर नहीं रहती। फिर भी अक्सर हम अनुकूलता का श्रेय स्वयं के पुरुषार्थ को देते हैं और प्रतिकूलता को प्रारब्ध पर थोप देते हैं जैसे व्यापार किया परन्तु भरपूर कोशिश के बाद भी नुकसान हो गया अथवा मन बहलाव के उद्देश्य से किसी क्षेत्र में थोड़ा सा निवेश किया और आशा के अनुरूप अधिक लाभ की प्राप्ति हो गई या किसी को कोई गम्भीर बीमारी है उसे डॉक्टर को दिखाया, इलाज करवाया जिसके कारण रोग से छुटकारा मिल गया। इसके विपरीत कई बार कुशल डॉक्टर के उपचार और महत्वपूर्ण इलाज के बाद भी अनुकूल स्वास्थ्य लाभ नहीं मिल पाया अथवा कहीं कुछ अनचाही आर्थिक हानि हो गई। इस तरह अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही परिस्थितियाँ हमारे जीवन आती ही रहती हैं। सफल होने पर अनुकूल स्थिति में हमारा कथन होता है कि हमने अमुक प्रयास किया जिसके कारण हमें यह सफलता मिली और अनेक प्रकार की उपलब्धियों को हमने हासिल कर लिया। तथा अपने ही प्रयासों में असफल होने पर और प्रतिकूल परिस्थिति के आने पर तुरन्त हमारी सोच में परिवर्तन आ जाता है, सफलता की स्थिति में हमारा जो उत्साह भरा कथन होता है वहीं असफल होने पर प्रतिकूल परिस्थिति में निराशा के शब्दों में बदल जाता है। सफलता का श्रेय हम पुरुषार्थ को देते हैं कि हमने अमुक तरह से प्रयास किया तो यह सफलता मिली और असफल होने पर हम अपनी निराशा को प्रारब्ध पर थोप कर दोषारोपण करते हैं कि हमारी तकदीर में यही लिखा था, ईश्वर को ऐसा ही मंजूर था।

यहाँ सोच का विषय यह है कि अनुकूल परिस्थिति में सफलता का श्रेय अगर पुरुषार्थ को देते हैं तो प्रतिकूल परिस्थिति में असफलता का दोषारोपण प्रारब्ध पर क्यों किया जाये। यानि जीवन में अगर प्रारब्ध प्रधान है तो अनुकूल स्थिति और सफलता में भी हमारा प्रारब्ध ही कारण है तथा जीवन में अगर पुरुषार्थ प्रधान है तो प्रतिकूल परिस्थिति व असफलता के लिए भी हम स्वयं जिम्मेदार हैं। परन्तु अक्सर देखा जाता है कि सफलता का श्रेय हम स्वयं लेते हैं और असफलता को प्रारब्ध पर थोप देते हैं।

कुछ विचारशील चिन्तक महानुभावों से विचार-विमर्श तथा थोड़ा-बहुत अपने अनुभव के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि 'जिन्दगी मिली है' यह प्रारब्ध है। जो मनुष्य जन्म हमें मिला है वह ईश्वर के विशेष अनुग्रह से मिला है अन्यथा पशु, पक्षी आदि किसी भी योनि में हमारा जन्म हो सकता था। अगर जिन्दगी पुरुषार्थ साध्य होती तो कोई भी जीव गधा, कुत्ता, बिल्ली आदि किसी निकृष्ट योनि में नहीं जाता और जो जिन्दगी मिली है उसे 'जीना है', यह पुरुषार्थ है यानि वर्तमान जीवन को सुन्दर तरीके से जीना है तथा दूसरों के हित में जीवन को समर्पित कर देना पुरुषार्थ है। अनुकूल-प्रतिकूल जो भी हमारे सामने आता है वह सांसारिक है और संसार प्रारब्ध का प्रतिफल है, परन्तु फिर भी हम अपने कर्म से विमुख नहीं हो सकते। भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽत्स्वकर्मणि॥

(गीता 2/47)

'मनुष्य का कर्तव्य करने में ही अधिकार है, उसके फल में कभी नहीं। अतः मनुष्य को कर्मफल का हेतु नहीं बनना चाहिए और अकर्मण्यता में भी आसक्ति नहीं होनी चाहिए।' अर्थात् कर्तव्य कर्म करते हुए इस भौतिक शरीर के विलीन होने के बाद कीर्ति व यादों के जो अवशेष रह जाते हैं वह हमारा पुरुषार्थ है। कर्म क्रियमाण और संचित दो तरह के बताये जाते हैं क्रियमाण कर्म वह होते हैं जो वर्तमान में कर रहे हैं, इन कर्मों का जो संचय है वह आगे चलकर जो प्रतिफल के रूप में हमारे सामने आता है। उसी संचित कर्म को प्रारब्ध का स्वरूप बताते हुए कुछ विद्वान लोगों का मत पुरुषार्थ को प्रधान मानता है जबकि जीवन-मरण, हानि-लाभ, यश-अपयश को विधि के हाथ मानते हुए कुछ लोग भगवान श्रीराम का उदाहरण देकर प्रारब्ध को प्रधान बताते हैं। लेकिन प्रारब्ध और पुरुषार्थ यह दोनों एक ही कार्यालय में अलग-अलग दो विभागों में वरिष्ठ पद पर आसीन अपने-अपने विभाग के प्रधान हैं। जैसे अपराधी को पकड़ना तथा साम, दाम, दण्ड, भेद नीति से अपराध का पता लगाना पुलिस का काम है, परन्तु सजा देना, दंडित करना अथवा छोड़ देना यह पुलिस के अधिकार में नहीं है। अपराधी के अपराध को सुनकर उसका विश्लेषण करके उपयुक्त सजा देने का काम न्यायालय का है। न्यायालय और पुलिस दोनों अपने-अपने कार्यों को करने में स्वतंत्र होते हुए भी कानून की सीमाओं में बँधे हैं, इसी प्रकार प्रारब्ध और पुरुषार्थ दोनों अपने विभाग के प्रधान हैं तथा दोनों अपने कार्य में स्वतंत्र होते हुए भी ईश्वरीय कानून की सीमाओं में बँधे हुए हैं। जैसे पुलिस अपराधी को गिरफ्तार करके न्यायालय में पेश कर देती हैं और अपना कर्तव्य पालन करते हुए खुद भी न्याय की एक कड़ी बन जाती है, उसी प्रकार प्रारब्ध हमारे वर्तमान से जुड़कर आने वाले कल का पुरुषार्थ हो जाता है तथा वर्तमान का पुरुषार्थ हमारे आने वाले कल का भविष्य निर्माण करता है। अतएव प्रारब्ध और पुरुषार्थ दोनों का ही जीवन में पूर्ण महत्व है लेकिन मनुष्य का दायित्व है कि वह प्रारब्ध के सहारे निष्क्रिय होकर नहीं रहे और पुरुषार्थ के भरोसे फल की कामना भी नहीं करें। प्रारब्ध और पुरुषार्थ को हम शरीर के दाएँ-बाएँ अंग की तरह मान सकते हैं। संसार के साथ शरीर का सम्बन्ध होने के कारण शरीर निर्वाह के निमित्त सांसारिक जीवन में प्रारब्ध की प्रधानता है। कर्म भी संसार को लेकर संसार के लिए किया जाता है। अतएव हम जो कर्म करते हैं उनका सेतु भी प्रारब्ध है। परमार्थिक उन्नति के लिए तथा जीवन-मृत्यु के बन्धन से मुक्त होकर परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला प्रयास व संसार बन्धनों से विरक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर लेना पुरुषार्थ है तात्पर्य यह है कि जीवात्मा और परमात्मा की एकता के लिए परमार्थ पथ पर पुरुषार्थ प्रधान है तथा सांसारिक प्राप्ति के लिए प्रारब्ध की प्रधानता है।

प्रारब्ध और पुरुषार्थ के विषय में थोड़ा सा गहराई से कुछ विचार करें तो प्रत्येक जीव का कहीं न कहीं कोई अस्तित्व अवश्य रहा है। अगर जीव का कोई अस्तित्व नहीं होता तो जीव संज्ञा का होना भी असम्भव था। जीवात्मा को परमात्मा का ही अंश माना जाता है 'ममैवांशो जीवलोके जीव भूतः सनातनः' अतः जीवात्मा भी परमात्मा का अंश होने के कारण परमात्मा की तरह ही अनादि और अविनाशी है। शरीर की रचना संसार में हुई है, संसार, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पाँच तत्वों से बना है इसलिए यह पंचभौतिक शरीर भी नाशवान है। जबकि जीवात्मा इन पाँचों तत्वों से परे अविनाशी है। शरीर के साथ संसार का संयोग होने के कारण जो अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति हमारे सामने आती है वह केवल सांसारिक विकार है, इन विकारों को मानकर हम अपने बदलते हुए व्यक्तव्य को प्रकट करते हैं, यह हमारी भूल है।

जीवन मुक्त महात्माओं व महापुरुषों के सन्सर्ग और सत्संग से यह स्पष्टीकरण मिलता है कि मनुष्य शरीर में दो बातें प्रमुख हैं– पुराने कर्मों का फलभोग तथा नया पुरुषार्थ। दूसरी योनियों में केवल पुराने कर्मों का फलभोग ही है। कीट-पतंग, पशु-पक्षी, देवता तथा ब्रह्मलोक तक की योनियाँ भी भोग-योनियाँ हैं। इसलिए उनके लिए 'ऐसा करो और ऐसा मत करो'– यह विधान नहीं है। पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि जो कुछ भी कर्म करते हैं, उनका वह कर्म भी फलभोग में है। कारण कि उनके द्वारा किया जाने वाला कर्म उनके प्रारब्ध के अनुसार पहले से ही तय होता है। उनके जीवन में अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति का जो कुछ भोग होता है, वह भोग भी फलभोग ही होता है। परन्तु मनुष्य शरीर तो केवल नये पुरुषार्थ के लिए ही मिला है, जिससे जीवात्मा सांसारिक चक्रव्यूह से अपना उद्धार कर ले। इस मनुष्य शरीर के लिए दो विशेष अधिकार हैं– एक तो इसके सामने पुराने कर्मों के फलस्वरूप में अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति आती है उनका उपभोग करना और दूसरा यह नया पुरुषार्थ (नये कर्म) करता है। नये कर्मों के अनुसार ही इसके भविष्य का निर्माण होता है। इसलिए शास्त्र, सन्त-महापुरुषों का विधि-निषेध, राज्य आदि का शासन केवल मनुष्यों के लिए ही होता है, क्योंकि मनुष्य के लिए पुरुषार्थ की प्रधानता है, नये कर्मों को करने की स्वतंत्रता है। परन्तु पिछले कर्मों के फलस्वरूप मिलने वाली अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों को बदलने में यह परतंत्र है। जबकि अन्य योनियों में केवल भोग योनि होने के कारण उनके लिए प्रारब्ध की प्रधानता रहती है।

–प्लाट नं. 22-बी, हेमन्त कुंज
तिलक नगर, बीकानेर

बालकों को दें, जीवन कौशल शिक्षा

❑ सरदार सिंह चारण

बालकों को विद्यालयों में शैशवावस्था में यही सिखाया जाता है कि उसे बड़े होकर आई.ए.एस., आर.ए.एस., डॉक्टर, इन्जीनियर, अफसर, शिक्षक आदि बनना है और इसी लक्ष्य के लिए हमारी स्कूलों में उन्हें शिक्षकगण व हमारी शिक्षा-प्रणाली उन्हें तैयार भी कर रही है। किन्तु कोई यह नहीं बताता कि जीवन का क्षेत्र कितना बड़ा और कितना गहरा है उसे ठीक तरह समझने और उससे लाभान्वित होने के लिए सोचने समझने का और कुछ करने का सही तरीका क्या होने चाहिए, वर्तमान स्कूली वातावरण बालकों को पाठ्यक्रम पूरा कराने व परीक्षाओं को पास कराने में व्यस्त है, न केवल बालक की मस्तिष्कीय कुशलता के आधार पर उन्हें श्रेणी प्रदान की जा रही है व प्राप्तांकों के आधार पर उनके स्तरों का वर्गीकरण किया जाता है जिन्हें कम अंक मिले उन्हें हमारा शिक्षा जगत व समाज, परिवार, अभिभावक, निम्न दृष्टि से देखता है, तथा उच्च प्राप्तांक लाने वाले बालकों को हम व हमारा समाज व हमारा शिक्षा जगत सर आँखों पर बिठा देता है।

बालकों के मस्तिष्क का एक अंश प्रकृति प्रदत्त ढंग से विकसित होने के कारण कोई छात्र अच्छी श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ हो, किन्तु जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उसकी पहुँच बहुत ही थोड़ी व कमजोर हो, क्या छात्रों की श्रेष्ठता का श्रेय या मापदण्ड परीक्षा के अंकों के आधार पर ही निर्धारित होना चाहिए, जिन्हें कम अंक मिले क्या उन्हें बुद्धू, निकम्मा, निम्न स्तर का समझना चाहिए। शिक्षा का प्रयोजन छात्रों को कमाऊ बना देना भर नहीं होना चाहिए, यदि इतनी सी ही बात है, तो उन्हें इतना श्रम कराने और जीवन के महत्वपूर्ण पलों को इतने लम्बे समय तक अध्ययन में गँवाने की क्या आवश्यकता है, पारम्परिक धन्धों में कुशलता तो बिना पढ़े भी या कम पढ़े होने पर भी प्राप्त की जा सकती है। तथा राजकीय नौकरियों से मिलने वाले वेतन से भी अधिक राशि कमाकर प्राप्त की जा सकती है।

शिक्षा का उद्देश्य इससे अधिक और विस्तृत होना चाहिए यदि जानकारियाँ मस्तिष्क में ठूँसने का नाम ही शिक्षा है। तो बहुत ही जल्दी शिक्षक का स्थान कम्प्यूटर ले लेगा और छात्र कम्प्यूटर पर विश्व में उपलब्ध सभी विषयों का विस्तृत ज्ञान व जानकारियाँ प्राप्त कर लेगा, फिर वह इतनी सी बात के लिए इतनी कष्टसाध्य पढ़ाई में सिर क्यों खपायेगा। क्यों समय गवायेगा, शिक्षा का तो उद्देश्य होना चाहिए यथार्थता का ज्ञान, यथार्थ के तल तक पहुँचने के लिए किस प्रकार की जीवन में अनुभव या गोताखोरी की आवश्यकता रहेगी, इसी कला को सीखना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा का लक्ष्य बालकों में वह साहस विकसित करना होगा जिसके बल पर वह विवेक और तथ्य का सहारा लेकर यथार्थता की तह तक पहुँच सके। लोग क्या कहेंगे, समाज क्या कहेगा, पुस्तकों में क्या लिखा है। शिक्षकों ने क्या समझाया है? इन सब जंजालों के आवरण को चीरकर जो बालक सत्य को समझने और स्वीकार करने को तत्पर हो सके यही जीवन कौशल शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य है।

यदि हमारे बालकों को ऐसा कुछ सीखने को नहीं मिलता तो शिक्षा कैसे पूरी हुई, विद्यालयों में नन्हें बालकों को मिलने वाले ज्ञान, कौशल, प्रशिक्षण, सांसारिक अनुभवों व शिक्षा का आधार एक ही होना चाहिए। आज हम शिक्षकों को बालकों की स्वतंत्र चेतना को पुरातन मूर्छना से अलग करना होगा। उसे इस योग्य बनाना होगा कि वह जीवन के स्वरूप को समझ सके, सोच सके, बोल सके, समस्याओं की तह तक पहुँच सके व यथार्थ निर्णय कर सके और औचित्य को अपनाने के लिए साहसपूर्वक अड़ सके, सच्ची शिक्षा वही है, जो विवेक को जागृत कर सके, बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को उभारने के अवसर दे सके व ढर्रे में घुसे हुए अनौचित्य को हिम्मत और निर्भयता के साथ अस्वीकार कर सके।

सच्चे शिक्षक, सच्चे अभिभावक और सच्चे हितैषी वे हैं जो अपने प्रभाव और ज्ञान का उपयोग अपने प्रभाव क्षेत्र में बालकों में स्वतंत्र चेतना विकसित करने के लिए करते हैं। यदि कहीं कोई सच्चे अर्थ में विद्यालय जीवित है, तो उसका लक्ष्य भी शिक्षार्थियों में स्वतंत्र चेतना का विकास करना ही होगा, नई दुनिया के निर्माण से पूर्व जीर्ण-शीर्ण खण्डहरों को धराशायी करना पड़ेगा इसके लिए प्रचण्ड विद्रोह की अग्नि व क्रान्ति की आवश्यकता है, वह तब तक नहीं उभर सकती, जब तक स्वतंत्र चिन्तन की गरिमा स्वीकार न की जाय और जो अवाँछनीय है उसे इंकार करने का साहस उत्पन्न किया जाय, जीवन उसी का नाम है। जो यथार्थ की तह तक पहुँच सके उचित और अनुचित का सही निर्णय कर सके, स्वतंत्र चिन्तन की जिसमें क्षमता हो और हर प्रकार के अवाँछनीय दबावों को निर्भयतापूर्वक अस्वीकार कर सके, ऐसा जीवन ही उस विस्तार और आनन्द का उपयोग कर सकता है, जो उसे सहज सम्पदा के रूप में उपलब्ध हुआ है। जीवन की गरिमा को समझ सकने वाली और उसे परिष्कृत कर सकने वाली समग्र शिक्षा की हमें व्यवस्था करनी ही होगी इसके बिना प्रगति की समस्त सम्भावनाएँ अवरुद्ध ही पड़ी रहेगी। आओ इस ज्वलन्त मुद्दे पर बैठकर कुछ सोचें, विचारें, अपने कार्य व सोच को सही दिशा समय रहते देवें अन्यथा अमूल्य समय व्यर्थ चला जायेगा हम चेतेंगे तब तक बहुत देर हो जाएगी, हम समय रहते नहीं चेते तो भावी पीढ़ी दिशाहीन व दिग्भ्रमित हो जाएगी जिसके लिए हम पूर्णरूप से दोषी होंगे व आने वाला समय व भावी पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करेगी, आओ मिलकर भावी पीढ़ी के भविष्य व सुन्दर समाज के निर्माण के प्रति अपने दायित्व का पूर्ण ईमानदारी से हम पालन करने हेतु उच्च मापदण्ड तयकर भावी पीढ़ी को आगे बढ़ने के मार्ग को रोशन करें।

–व्याख्याता, डाईट, जालोर

मानव, ऐसी भी क्या विरक्ति इस जीवन के प्रति? - पंत

❑ अमरसिंह पाण्डेय

प्रसिद्ध छायावादी कवि 'पंत' का यह संदेश और जयशंकर प्रसाद रचित 'कामायनी' का प्रथम सर्ग का विलासिता का चित्रण, जो महाप्रलय का संवाहक रहा, अनेक पाठकों के स्मृति-पटल पर अंकित है। अच्छा हो, अभी समाचार-पत्रों में प्रकाशित समाचार सच को प्रखर न करे कि 'मैक्सिको में' 'प्रलय के दिन की तैयारी ' हो रही है। समाचारों के अनुसार वहाँ माया सभ्यता का अंत 19वीं सदी में हुआ था जिसमें समय का आकलन 394 वर्षों के हिसाब से होता था। माया सभ्या के विशाल मंदिरों में से एक पर प्रलय की तारीख खुदी है। वैसे आज का जमाना चरम बुद्धिमत्ता और चरम मूर्खता का संगम कुछ लोग मानते हैं क्योंकि 'कामायनी' का प्रथम सर्ग 'प्रलयंकर' विनाश और पुनर्निर्माण बताता है कि सृष्टि का विनाश मानव की अदूरदर्शितापूर्ण विलासिता के कारण ही होता है। संसार में जिस रूप में क्षणों का भोग करने की प्रवृत्ति व्याप्त है, पर्यावरण प्रदूषण के माध्यम से आज का मानव वह सब कुछ कर रहा है और प्रबोधक दूर-दूर तक गायब है। और, यदि कोई संकेत करता है तो पिटता है। बालकों को विद्यालय में भरती के लिए उम्र की उपेक्षा इस सीमा तक कि विशेष स्कूलों में भरती पर भारत के शिक्षामंत्री को 3 वर्ष की अवस्था की अनिवार्यता की घोषणा करनी पड़ी।

यहाँ बच्चों को ध्वस्त करने वाली डिवाइस वीडियो गेम्स का एक प्रसंग अंकित है। साथ ही और भी बहुत कुछ।

'मोहलत के कुछ पल मिलते ही लोग मोबाइल टेबलेट, लैपटॉप या दूसरे किसी कम्प्यूटर तंत्र पर वीडियो गेम्स खेलने में जुट जाते हैं, इनमें से बहुत से खेल राइफल शूटिंग अपने प्रतिद्वंद्वियों को कुचलने, उनसे घमासान करने, युद्ध के काल्पनिक मैदान में, गोला-बारूद छोड़ने, फाइटर जेट वायुयानों से बमबारी करने जैसे हिंसात्मक तेवरों पर केन्द्रित होते हैं। आदमी के दिमाग पर चाहे वे बच्चे हों या बड़े, इन वीडियोगेम्स का क्या असर होता है यह गहन बहस का विषय बना हुआ है। बीते साल अमरीका के उच्चतम न्यायालय में भी इस पर खूब गहमागहमी और बहस हुई।

'अब इंडियाना पोलिस के इंडियाना यूनिवर्सिटी स्कूल आव् मेडिसिन के रेडियोलॉजी एंड इमेजिंग विभाग के शोध-प्राध्यापक यांग वांग और उनके साथियों ने इन हिंसक वीडियोगेम्स के दिमाग पर होने वाले असर पर दिलचस्प शोध किया है। 18 से 29 साल की उम्र के 22 छैल-छबीले तंदुरुस्त नौजवानों को 11-11 के दो समूहों में बाँट दिया गया। एक समूह के 11 सदस्यों को दो हफ्तों तक हिंसक वीडियोगेम्स खेलने के लिए कहा गया जबकि दूसरे समूह के 11 सदस्य वीडियो गेम्स से दूर रहे। पहले और दूसरे सप्ताह के अंत में दोनों समूहों के हर सदस्य के मस्तिष्क की जीती जागती फंक्शनल एमआरआई तस्वीरें उतारी गईं।

नतीजे सनसनी खेज रहे। ऐसे नौजवान, जिन्होंने उग्र खेल खेले थे उनके मस्तिष्क के उन खास-खास हिस्सों में खास परिवर्तन देखने को मिले जिनका सम्बन्ध इमोशनल कंट्रोल या संज्ञानात्मक क्रियाओं से होता है, हिंसक खेल खेलने वालों के ये हिस्से पहले हफ्ते के अंत से सुन्न होते हुए दिखाई दिये। इसके विपरीत, जिन नौजवानों को वीडियो गेम्स से दूर रखा गया, उनके मस्तिष्क पहले की तरह साफ सुथरे ढंग से काम करते रहे। मायने साफ हैं कि यदि आप अपने बच्चों को हिंसक बनते नहीं देखना चाहते तो उनके सभी ऐसे वीडियो गेम्स पर ताला लगावें और बेहतर होगा कि उन्हें इस प्रकार के वीडियोगेम्स और डब्ल्यू डब्ल्यू सरीखे नृशंस खेलों की लत पड़ने ही न दें। बल्कि उन्हें दूसरे दिमागी कसरत वाले खेल खेलने हेतु प्रोत्साहित करें। इसी में उनकी और समाज की भलाई निहित है। (दैनिक भास्कर, अलवर 31.10.11) लेकिन विश्व को संस्कृति का ज्ञान देने वाले भारत में ऐसी कोई महत्वाकांक्षा शायद ही मिले।

यातायात के नियमों का व्याख्यान : युग की आवश्यकता– तब संसार में जनसंख्या सीमित थी और आवागमन के नियमों की इतनी भरमार नहीं थी फिर भी राम वनवास-काल में लक्ष्मण पीछे चलते हुए आध्यात्मिक रूप से 'सीय-रामपद अंक बराये। लखन चलहिं मग दाहिन लाये' के माध्यम से 'बायें चलो' के आज के प्रखर नियम 'बायें चलो' या 'कीप लेफ्ट' का पालन करते हुए तुलसीदास नहीं भूले। आज यातायात या सड़क के नियम जीवन की अनिवार्यता ही नहीं दुर्निवार्यता भी बन गए हैं। आज तो 'नाना वाहन नाना रूपा' का जोर है और मनुष्य धरती ही नहीं अंतरिक्ष के कतिपय लोको (1) में बस्तियाँ बसाने को आतुर है, इतना प्रगल्भ है नर।

ऐसे में राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री व्रजकिशोर शर्मा ने केंद्र सरकार से, दिल्ली में यह आग्रह किया है, सड़क सुरक्षा और इससे संबद्ध नियमों का राष्ट्रीय शैक्षिक और प्रशिक्षण-परिषद् के पाठ्यक्रम अतएव पाठ्यपुस्तकों में समाविष्ट करके राज्य सरकारों की पाठ्यपुस्तकों का एक आदर्श उपस्थित करना उचित है। अनेक राज्यों की पाठ्य-पुस्तकें चूँकि केन्द्र के अनुसार ही पढ़ाई जा रही हैं, इसकी लय पर सड़क पर चलने के नियमों का समावेश पाठ्यक्रम का अंग स्वतः ही बन जाएगा। अखिल भारतीय स्तर पर एक नई यातायात झनझनाहट आरम्भ होगी, वैसे राजस्थान में सड़कों का नवीकरण हो रहा है, मल्टीलेन का चलन उनकी विशिष्टता है फिर भी सड़क पर चलने के नियमों का ज्ञान छात्रों को और उनके माध्यम से जनसाधारण तक सहज भाव से हो जाएगा, इसके भाव या अभाव में 'माना कि तगाफुल न करोगे, लेकिन। खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक' का खतरा तो है ही।

एनसीईआरटी की बैठक में, राजस्थान का प्रतिनिधित्व कर शर्मा जी का यह संदेश और आग्रह अखिल भारतीय रूप से संप्रेषित होकर

संपादित होगा, ऐसी आशा भविष्य के पाठ्यक्रम निर्माण का आगाज करेगी, ऐसी आशा है। आज सड़कें, रेल, बसें, कारें, मोटर साइकिलें ही मनुष्यों का भाग्य-निर्माण कर रही हैं और इस प्रश्न पर ज्योतिषियों से पूछ-ताछ भी प्रायः अनपेक्षित है अतः मंत्रीजी का यह कथन कि सड़कों पर लगभग सवा लाख लोग कालकवलित हो रहे हैं 'सरकार और जनता और पाठ्यक्रम निर्माताओं को कुछ न कुछ तो करना ही चाहिए अतः भविष्यत् का नागरिक कही जाने वाली बाल पीढ़ी जो आगे प्रौढ़ नागरिक बनेगी, नियमों, कानून-कायदों, बचावों से परिचित होनी चाहिए। प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च स्तर पर पाठ्यपुस्तकों के नाम चिह्न प्रसंगों में/अध्यायों में चलो सड़क की 'बायीं पटरी आना हो जाना तो एक नारा', एक घोष बन जाना चाहिए। गाओ रणगान, रंग के फिर गा लेना। नगरपालिका इत्यादि स्वायत्त संस्थाओं को भी इस यज्ञ में समिधा दानकर हर गली, मोहल्ले, नुक्कड़ों पर इस विषयक सूक्तियाँ और संदेश लिखा देना चाहिए कि हर तरफ एक ही स्वर सुनाई पड़े। पाठ्यक्रम में उल्लेख और परीक्षा में प्रश्न भी पूछे जाएँ और साक्षात्कार में भी उलझे-सुलझे प्रश्न।

यदि विद्यालय के पास अतिरिक्त भूमि उपलब्ध हो तो विद्यालय में भी एक यातायात संकुल प्रतीक रूप में स्मरण शक्ति पर जोर देने के लिए हो।

यातायात पुलिस की संहिता का संकेत भी प्रार्थना सभा में हो सकता है। और भी बहुत कुछ। शिक्षक प्रशिक्षण सहित। आमुखीकरण।

–से.नि. प्रा. भुसावर, भरतपुर

स्मृति शेष श्री कन्हैयालाल भाटी

नहीं रहा जीवट और जोश का साथी

❑ ओमप्रकाश सारस्वत

श्री कन्हैयालाल भाटी 'कलजी' नहीं रहे। मकर संक्रान्ति 2012 के दिन वे ब्रह्मलीन हो गए। कोई एक पखवाड़े पूर्व 27 दिसम्बर, 2011 को उनके राजस्थानी कहानी संग्रह 'कन्हैयालाल भाटी री कहाणियाँ' का लोकार्पण हुआ था। साहित्यकार मित्र इस अवसर पर उपस्थित हुए थे कलजी को बधाई एवं शुभकामनाएँ देने। पन्द्रह-बीस दिन बाद वे हमारे बीच नहीं रहेंगे, ऐसा तो किसी ने नहीं सोचा होगा।

कलजी शिविरा के प्रारम्भिक दौर के साथियों में एक थे। कैसे डाक्टर छगन मोहता की अनुशंसा पर अनिल बोर्दिया साहब ने इन्हें शिविरा में लगाया था, की कहानी बड़े फख्र के साथ वे सुनाया करते थे। उन्हें इस बात का गुमान एवं अन्तःप्रेरित मीठा दबाव था कि बोर्दियाजी ने उन्हें चुना है, तो उनसे कहीं कोई चूक न हो जाए। उन्होंने कर्म को व्रत रूप में लिया और उसे जीवन भर निभाया। वे कर्मयोगी थे।

अब से 20 वर्ष पूर्व जब मेरा शिविरा में पदस्थापन हुआ, तब इस खुशनसीब-हरदिल अजीज इंसान से साक्षात्कार हुआ जो मेरे अलग-अलग पदस्थापन एवं उनके सेवानिवृत्त हो जाने के बावजूद जस का तस बना रहा। मेरा सौभाग्य था कि कलजी मुझे

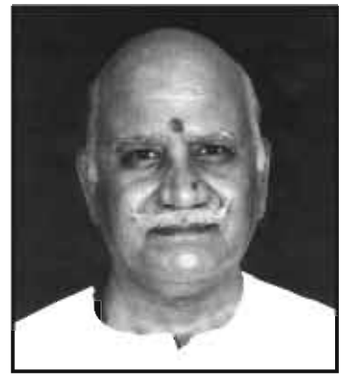

अपना छोटा भाई समझते थे।

कलजी शिविरा संदर्भ कक्ष के प्रभारी थे। प्रभारी क्या, दरअसल वे ही इसके स्थापक व संधारक थे। संदर्भ कक्ष के तब के वैभव को समझने के लिए इतना ही कहना काफी होगा कि उस दौर में दूर-दूर से शोधार्थी वहाँ आते थे। कलजी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं को इतना करीने से सज्जित रखते थे कि वे आँखें बंद कर उन्हें ला देते। विभिन्न विषयों पर पत्र/पत्रिकाओं में छपे आलेखों एवं समाचार कतरनों की फाइलें देखकर अचम्भा होता था। कलजी दिन भर ब्लेड से कतरनों को काटकर कागजों पर पेस्ट करते रहते। मगर उनके पास कोई पहुँचता तो काम रोककर उसे अटेण्ड करते। उन्हें दोस्ती करने और निभाने में आनन्द आता था।

किसी विषय पर आलेख लिखने के लिए तथ्य एवं जानकारी कलजी संधारित फाइलों में मिलती। वे इस प्रकार इन फाइलों को लाकर सम्पादकों को परोसते जैसे कपड़े का दुकानदार अलग-अलग रंग एवं डिजायन के थान अपने ग्राहक के सामने बिखेरता है। हिम्मत लिखने वाले में चाहिए, कलजी सहायक सामग्री उपलब्ध करवाने में कोई कसर नहीं रखते।

कलजी का जीवट व जोश देखने लायक था। समर्पण व प्रतिबद्धता का तो कहना ही क्या था। उनका संदर्भ कक्ष बेसमेंट में था और वर्षा के समय उसमें पानी भर जाता। कलजी मजदूर बन अपने ग्रंथों को पानी से बचाते। आस पड़ौस से नौजवानों को लाते, उन्हें चाय पिलाते और अपना शब्दधन सुरक्षित रख पाने में उनकी मदद लेते। शिविरा का नया अंक आता तो उनके संदर्भ कक्ष का सदस्य बनने से पहले सेलिब्रेट किया जाता है।

आज, कलजी हमारे बीच नहीं है, मगर उनकी स्मृतियाँ कभी नहीं भुलाई जा सकती। शिविरा की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि एवं नमन्।

–वरिष्ठ सम्पादक

शिक्षक बने अग्रणी

❑ बालकृष्ण शर्मा

शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक बदलाव इन दिनों दृष्टिगत हो रहे हैं, पर एक बात तो शाश्वत है कि गुरु शिष्य परम्परा वही है जो पूर्व में थी। आज भी सैकड़ों शिष्य भरे बाजार में चरणों में धोक लगाते नजर आते हैं तो एक गर्वानुभूति होती है। परन्तु मीडिया में जो प्रगति हुई है उसकी वजह से कहीं न कहीं थोड़ा शिक्षा के क्षेत्र में करणीय है। कहीं अच्छा हो रहा है वो मीडिया में चर्चित होता तो है परन्तु हल्के तौर पर, इसके विपरीत शिक्षा से जुड़ी मसालेदार खबरें अखबार का हिस्सा जरूर बनते जा रहे हैं। चिन्तन कौन करे? शिक्षक का व्यक्तित्व बहुआयामी है उसे आभास रहता है कि वह समाज का मार्गदर्शक है तो सदैव कहीं भी अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होगा।

ग्रामीण परिवेश में जहाँ माता-पिता छात्रों के मार्गदर्शन में अपनी भूमिका कुछ वैसी नहीं निभाते अपेक्षाकृत शहरी परिवेश के माता-पिता के। सिंह में स्वयं ही मृगेन्द्रता आती है उसे बताया नहीं जाता परन्तु खेद है कि समाज के मार्गदर्शक ने कछुए की भाँति डरकर अपने अंगों को समेट लिया है। एक अभिभावक ने जिम्मेदारी छात्र का प्रवेश विद्यालय में दिलाकर इतिश्री समझ ली परन्तु शिक्षक विद्यालयी समय सीमा में आबद्ध होकर ही रह जाए तो बेजा बात है।

आज जिस विद्यालय में मैं हूँ विगत दस वर्षों में कई उतार-चढ़ाव देख चुका हूँ। जो बालक अपनी अस्मिता को जताने के लिए कभी मुँहजोरी पर उतर जाते थे वे ही बालक आज नतमस्तक होते हैं, क्यों? शिक्षक का मातृहृदय ! हम कर्म से विमुख क्यों हों, जो दायित्व बोध है उसे पुनः जागृत करने की बेला है। रामचरित मानस में कहा है–

'सचिव बैद गुरु तीनि जौ प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास॥'

इस कथन पर गुरु शब्द को रेखांकित कर गौर करें, शिक्षक यदि निष्ठावान है तो किसी काल्पनिक भय से वह प्रिय नहीं बोलेगा। मेरा निजी अनुभव है कि हर प्राणी का अपना अहं होता है उसकी तुष्टि में वह क्या हथकण्डे अपनाता है वह तो समय ही जतला देता है, परन्तु आज भी कई गुरु-शिष्य समाज में अपनी मिसाल कायम कर रहे हैं। गुरु, शिक्षक, टीचर के फेर में न उलझ कर जो दायित्व परमात्मा ने समाज के माध्यम से दिया है उसे निर्भीक व सतत रूप से करने में जो आनन्दानुभूति होती है वह अवर्णनीय है।

जितना भी करणीय है वह सकारात्मकता से किया जाए। विद्यालय-समाज दोनों में पारस्परिक समन्वय बना रहे इस हेतु शिक्षक अहं भूमिका में है। धीर-गम्भीर व्यक्तित्व वाले शिक्षक आज भी हैं परन्तु समय का प्रभाव जरूर परिलक्षित होगा ही फिर दायित्वबोध के लिए सतत अध्ययनशील रहकर बालकों को सन्मार्ग पर लाने वाले गुरुजन आज भी पूजनीय है। सम्मान की अपेक्षा न रख निष्काम सेवा करने वाले शिक्षक सदैव सम्मानित रहेंगे।

–प्रधानाचार्य
'प्रकाश-दीप', शिक्षक कॉलोनी, कलिंजरी गेट,
मु.पो. शाहपुरा, भीलवाड़ा (राज.)

मूल्य शिक्षा

❑ कमल कुमार जाँगिड़ 'शिक्षक'

युवावर्ग आज भटकाव की दहलीज पर खड़े हैं, जहाँ से भावी मार्ग धुंधला सा प्रतीत होने लगा। सामाजिक विखण्डन ने इसे और संस्कृतिच्युत कर दिया है। शिक्षा का उद्देश्य जीवन निर्माण न होकर केवल डिग्रियाँ प्राप्त करने के साथ तथाकथित रोजगार (नौकरी) तक सीमित हो गया है। आज हम अपनी पहचान खो रहे हैं तो केवल मूल्य प्रतिमानों के अभाव में। अतः केवल नीतियों की अनुपालना के स्थान पर दृष्टिकोणों में परिवर्तन की आवश्यकता है। माता-पिता एवं शिक्षक यदि चाहें तो परिवर्तन संभव है। शिक्षकों को प्रशिक्षित करने एवं सच्चरित्रता का विकास ही सही मूल्य-शिक्षा का विकास है। 'Do as I do' का भाव बालकों में स्वतः ही अभिप्रेरण का कार्य करेगा। यदि हमारा चरित्र, व्यवहार एवं आदर्श उज्ज्वल हैं तो आधा कार्य स्वतः ही निष्पादित हो जायेगा। निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 की बात करें तो विद्यार्थी प्रत्यक्ष व परोक्ष विद्यालय में कुछ-न-कुछ सीखता है। अतः परोक्ष सीखना मूल्यशिक्षा का अंग ही माना जायेगा। पाठ्यक्रम के दृष्टिकोण से सामाजिक अध्ययन, सामाजिक परिवेश की उन समस्त गतिविधियों को समाहित किए हुए हैं, जो 'व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण' की संकल्पना से सम्बन्ध रखती हो। नैतिक मूल्यों के पतन, ह्रास एवं अवमूल्यन के परिणामस्वरूप ही आज हिंसा, अभद्रता एवं दुष्चरित्रता आम बात हो गई है। हमारी सांस्कृतिक विरासत, भाषा, इतिहास, त्यौहार, धार्मिक सहिष्णुता एवं जीवनपद्धति मूल्य शिक्षा से फलित एवं संरक्षित रह सकती है। हमारा दृष्टिकोण विभेदकारी के स्थान पर समरसता एवं समरूपता के भावों से भरा हो। सद्साहित्य अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित करना, सामाजिक सेवा कार्यों में भागीदारी निभाना, उनकी प्रति रुझान पैदा करना, वृक्षारोपण एवं जीव दया मंडलों का गठन, पर्यावरणीय संचेतना, शारीरिक व मानसिक शुद्धता जैसे नवीन सोच पैदा करने वाले कार्यों व मूल्यों से ही सच्ची मूल्य शिक्षा संभव है। राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता व्यक्ति के निर्माण से एवं सकारात्मक दृष्टिकोण की अवधारणा, इदम् मम राष्ट्रयः को प्रत्येक हृदय में उदय होना आवश्यक है।

–रा.मा.वि. कूकड़ोद (मकराना), नागौर

रपट

39वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता

❑ देवराज जोशी

उनतालीसवीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आगाज श्रीगंगानगर के महाराजा गंगासिंह स्टेडियम के प्रांगण में दिनांक 26 दिसम्बर को प्रातः 11.25 पर मुख्य अतिथि श्री रूपिन्दरसिंह पुलिस अधीक्षक द्वारा ध्वजारोहण एवं शांति के प्रतीक कपोत आकाश में उड़ाकर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीगंगानगर के विधायक श्री राधेश्याम ने की तथा विशिष्ठ अतिथि श्री राजकुमार गौर यूआईटी के पूर्व अध्यक्ष थे। कार्यक्रम की शुरुआत रंगारंग कार्यक्रम के साथ श्रीगुरुनानक बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय श्री गंगानगर की बालिकाओं ने पंजाबी ख्याति प्राप्त लोकगीत गिद्धा पेशकर कर्मचारी खिलाड़ियों एवं दर्शकों की वाहवाही लूटी। इसके अलावा गुप्ता बाल भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं ने राजस्थानी लोकगीत मोरियो पर भावपूर्ण नृत्य कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्यअतिथि श्री रूपिन्दरसिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैंने अपने जीवन में मात्र पुलिस कर्मियों की प्रतियोगिता एवं परेड देखी है परन्तु इतने मनोयोग तथा पंजिकाओं से जूझने वाले कार्मिक इतनी अच्छी परेड कर सकते हैं मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा है, इसके लिए मैं अपनी ओर से विभाग एवं राज्य सरकार को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूँ कि कार्मिकों के स्वास्थ्य की ओर भी राज्य सरकार कितनी संवेदनशील है इसकी मिसाल इन खेलकूद प्रतियोगिता से मिल रही है साथ ही मैं खिलाड़ी के रूप में भाग लेने वाले कार्मिकों को भी यही कहना चाहूँगा कि वे खेल को खेल की भावना के साथ खेलें इससे आपसी प्रेम व भाईचारा बढ़ता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राधेश्याम विधायक श्री गंगानगर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि मंत्रालयिक कर्मचारी अपने विभाग के कर्तव्य के प्रति सदैव तत्पर रहते हुए अपने कार्य को सही समय पर अंजाम देने के बाद खेल का समय निकाल रहे हैं इसे देखकर मेरा मन प्रफुल्लित हो गया है कि आज आम आदमी अपने स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक हो गया है। मैं जिस स्टेडियम पर आज खड़ा हूँ उसकी देन बीकानेर के महाराजा श्रीगंगासिंह जी की है जिनके द्वारा गंगानहर की योजना तैयार कर उसे प्रदेश में लागू करवाया आज उसी स्टेडियम की दुर्दशा देखकर मेरा मन विचलित हो रहा है, मैं विधायक कोटे से कुछ राशि देना भी चाहता हूँ, परन्तु राज्य सरकार की पाबंदी होने की वजह से उक्त राशि स्वीकृत नहीं हो पा रही है इसका मुझे खेद है। इस पूरी प्रतियोगिता का संयोजन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरिजनबस्ती श्रीगंगानगर के प्रधानाचार्य श्री सतपाल चराया जिनकी सेवानिवृत्ति निकट ही होनी है उसके बावजूद उन्होंने व उनकी पूरी टीम जिसमें श्री राजेश बाबू जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक एवं श्री महेन्द्र खुराना, कनिष्ट लिपिक, जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक श्रीगंगानगर ने दिनांक 26.12.2011 से 30.11.2012 जब तक टीमें अपने गंतव्य की ओर रवाना नहीं हुई तब तक उनकी सेवा में लगे रहे तथा आने वाले दलों को अपने निर्धारित स्थान पर पहुँचाने का कार्य करते रहे। श्री चराया ने बताया कि 8 दलों के 1008 खिलाड़ी इसमें भाग ले रहे हैं।

प्रतियोगिता के दौरान सबसे बड़ी समस्या यह रही कि टीमों के मैच का आयोजन अलग-अलग मैदानों पर होने के कारण कर्मचारी पूरे खेलों का आनंद नहीं ले पाये इसके साथ ही आयोजकों द्वारा बार-बार खेलों के समय व स्थान पर परिवर्तन किये जाने के कारण भी खिलाड़ी कर्मचारियों को असुविधा हुई इसके कारण समय पर खिलाड़ी उक्त मैदानों पर नहीं पहुँच पाये। पूरी प्रतियोगिता के दौरान अजमेर मंडल, बीकानेर चूरू मंडल एवं निदेशालय तथा जयपुर के खिलाड़ी कुछ न कुछ हासिल कर पाये। वहीं जोधपुर मंडल, उदयपुर मंडल, कोटा मंडल, भरतपुर मंडल ने एकाध स्पर्धा में ही जोश दिखाया। मैंने पूरी प्रतियोगिता में वो जोश नहीं देखा जो आज से 8 वर्ष पूर्व तक एथलीटों और प्रमुख खेलों में देखने को मिलता था। आज 40 वर्ष से कम आयुवर्ग के एथलीटों के स्थान पर 40 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के एथलीट काफी सफल रहे, यहाँ यह उल्लेखनीय है कि निदेशालय के **नत्थूसिंह** वैटरन एथलीट प्रतियोगिता के लिए बैंकाक हेतु चयनित किये गये। यह एक बड़ी उपलब्धि है। फुटबाल का खिताब बीकानेर-चूरू मंडल ने जीता तो द्वितीय स्थान कोटा मंडल ने हासिल किया इसी प्रकार कैरम में बीकानेर-चूरू मंडल विजेता रही तो द्वितीय स्थान अजमेर मंडल ने हासिल किया। बास्केट बाल में बीकानेर चूरू मंडल विजेता रही तो द्वितीय स्थान अजमेर मंडल को मिला। इसी प्रकार कबड्डी में अजमेर मंडल विजेता रही तो द्वितीय स्थान बीकानेर-चूरू मंडल का रहा। वॉलीबाल में जयपुर मंडल विजेता रही तो द्वितीय स्थान बीकानेर चूरू मंडल का रहा।

प्रतियोगिता को सफल बनाने हेतु प्रतियोगिता के संयोजक श्री सतपाल चराया प्राचार्य राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरिजनबस्ती श्रीगंगानगर एवं उसकी टीम को पूरा श्रेय दिया जाना चाहिए क्योंकि मेहमानों की आवभगत इस तरह से की गई जैसे किसी बारात का स्वागत किया जा रहा हो। पूरे 1008 खिलाड़ी एवं व्यवस्था में लगे कार्मिकों के दिन के भोजन की व्यवस्था भी प्रतियोगिता संयोजक ने एक भामाशाह तैयार कर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मटका चौक में की गई जिसमें मीनू के रूप में गंगानगर की प्रसिद्ध तंदूर की रोटी, दाल व सब्जी तथा सलाद रखी गई जिसे सभी मेहमानों ने ग्रहण कर मेजबानों एवं भामाशाहों का सहयोग किया।

प्रतियोगिता समाप्ति से पूर्व एक दुःख भरा समाचार सुनने को मिला जिले के जिला शिक्षा

अधिकारी श्रीमती मंजीत भाटिया के पिता का बीमारी के कारण स्वर्गवास हो जाने से कार्मिकों एवं आयोजकों में थोड़ी निराशा हुई परन्तु प्रतियोगिता संयोजक ने बखूबी इससे उबारते हुए प्रतियोगिता के समापन हेतु पंजाब नेशनल बैंक के प्रबन्धक श्री डोकनियाजी एवं गमग्वार फैक्ट्री के संचालक श्री डागाजी को मुख्यअतिथि एवं अध्यक्षता के लिए थोड़े समय में ही हाँ करवाकर प्रतियोगिता के समापन की कार्यवाही करवाकर भरपूर सहयोग प्रदान किया। पंजाब नेशनल बैंक के संचालक श्री डोकनियां जी ने अपने बैंक प्रबन्धन को हमेशा समाज एवं कमजोर वर्गों के प्रति जागरूक रहने तथा गरीब तबके के विद्यार्थियों हेतु प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति प्रदान कर राष्ट्रीय कार्य में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु आश्वासित किया साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि प्रतियोगिता संयोजक ने बताया कि कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु सहायता की आवश्यकता है तो मैं दंग रह गया कि अभी कार्मिक भी खेलकूद प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे हैं, जो कि अपनी दिनभर पंजिकाओं में व्यस्त रहने के बावजूद इतनी अच्छी प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे हैं जो कि एक बहुत अच्छी भविष्य में भी जब भी पंजाब नेशनल बैंक के सहयोग की आवश्यकता हो तो उन्होंने सहयोग का आश्वासन दिया।

प्रतियोगिता के अध्यक्ष श्री डागाजी जो कि गमग्वार फैक्ट्री के प्रबंध संचालक हैं उन्होंने बताया कि खेलकूद जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है यह शायद सभी को विदित है। मैं भी चाहता हूँ कि पूरे वर्ष भर पंजिकाओं में व्यस्त रहने वाले कार्मिक खेलकूद के लिए साल में एक बार समय निकाल कर इसमें हिस्सा ले रहे हैं यह बहुत ही अच्छी बात है। उन्होंने अपनी फैक्ट्री के बारे में बताया कि हमारे यहाँ से 102 देशों को ग्वार का निर्यात किया जा रहा है। जो कि एक राजस्थान के लिए उपलब्धि है। उन्होंने भी कमजोर तबके के बच्चों के लिए करोड़ों की राशि छात्रवृत्ति हेतु प्रदान की है ताकि कमजोर तबके के बच्चों के लिए करोड़ों की राशि छात्रवृत्ति हेतु प्रदान की है ताकि कमजोर तबके के बच्चे आगे बढ़कर राष्ट्रीय कार्य में अपना योगदान दे सकें।

अंत में प्रतियोगिता के विजेता रहे खिलाड़ी कार्मिकों को पुरस्कार वितरित किये गये। प्रतियोगिता में 39वर्ष तक अपना योगदान देने वाले जो कि हाल ही में सेवानिवृत्त हो रहे हैं उन्हें भी कम्बल देकर सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता में वॉलीबाल एवं फुटबाल में अपने दम पर टीम को विजय दिलाने वाले श्री प्रहलाद सोनी, वरिष्ठ लिपिक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चनाना जिला झुंझुनूं एवं श्री गिरधर पारीक, कार्यालय सहायक, निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा को भी सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में मंडल अध्यक्षों को भी प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता आरम्भ स्थल से ध्वज को हटाकर प्रतियोगिता समापन स्थल पर ध्वजारोहण करने हेतु प्रतियोगिता का समापन करने को मजबूर होना पड़ा। क्योंकि श्री मंजीत भाटिया, जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, श्रीगंगानगर के पिता का देहावसान होने के कारण ऐसा करना पड़ा।

पारितोषिक वितरण के तुरन्त पश्चात् ध्वजावतरण कर आगामी प्रतियोगिता हेतु अजमेर मंडल के अध्यक्ष सुमेरसिंह एवं दलनायक को ध्वज प्रदान किया गया। पूरी प्रतियोगिता के दौरान प्रतियोगिता संयोजक श्री सतपाल चराया एवं उनके साथी श्री राजेश बाबू एवं श्री महेन्द्र खुराना, कनिष्ठ लिपिक ने पूर्ण मनोयोग के साथ प्रतियोगिता को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया, पूरा जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय तथा व्यवस्था में लगे सभी शिक्षक, लिपिक तथा सहायक कर्मचारी सम्पूर्ण रूप से बधाई के पात्र हैं।

–सहायक कर्मचारी, बजट अनुभाग
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर

राजकीय माध्यमिक विद्यालय गण्डाल जिला सवाई माधोपुर में 12 नवम्बर, 2011 को सरस्वती माता की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गई। विद्यालय में स्टाफ एवं जनसहयोग से विद्यालय प्रांगण में सरस्वती माता के मंदिर का निर्माण करवाया गया। जिसमें सरस्वती माँ की संगमरमर की प्रतिमा संस्था प्रधान गोविन्द प्रसाद दीक्षित द्वारा भेंट की गई। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पूर्व गाँव में कलश यात्रा निकाली गई जिसमें सरपंच सुशीला देवी पूर्विया सहित दर्जनों महिलाओं एवं बालिकाओं ने कलश रखे, इस मौके पर यज्ञ एवं हवन के कार्यक्रम भी किये गये, कार्यक्रम पंडित शिवचरण तिवारी द्वारा सम्पन्न कराये गये। विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये। इससे पूर्व विद्यालय प्रांगण में शुक्रवार रात भजन संध्या रखी गई। प्रतिष्ठा कार्यक्रम के बाद विद्यालय परिसर में सभी छात्र-छात्राओं को प्रसादी वितरित की गई। दो दिन तक चले इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीण महिला, पुरुषों ने एवं गणवेश में बच्चों ने अनुशासन के साथ पूरे कार्यक्रम में भाग लिया।

इस मौके पर प्रधानाध्यापक दीक्षित ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्या मंदिर में सरस्वती का वास रहता है। प्रतिमा स्थापित होने से अब उनको रोजाना विद्याध्ययन की नई प्रेरणा मिल सकेगी।

–प्रधानाध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय गण्डाल, तह. बामनवास, जि. सवाई माधोपुर

... तो सार्थक होगा शिक्षामंत्री बनना

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान 2011-12 तथा भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रान्तीय पुरस्कार समारोह 18 जनवरी, को आंचलिक कार्यालय गायत्री शक्तिपीठ, ब्रह्मपुरी, जयपुर में श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट शांतिकुञ्ज हरिद्वार के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।

राज्य के 31 जिलों से पधारे उत्कृष्ट सेवा करने वाले 158 शिक्षकों को पं. श्रीराम शर्मा आचार्य उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान 2011-12 माननीय शिक्षामंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा और शांतिकुञ्ज से पधारे वरिष्ठ प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा के कर-कमलों से प्रदान किया गया। राजस्थान के जोन प्रभारी श्री अम्बिका प्रसाद श्रीवास्तव ने बताया कि इस अवसर पर एक दिवसीय शिक्षक गरिमा शिविर का आयोजन भी किया गया। प्रान्त के सम्माननीय शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए शांतिकुञ्ज प्रतिनिधि डा. ओ.पी. शर्मा ने शिक्षा और विद्या से संस्कारित विद्यार्थियों से सुदृढ़ राष्ट्रनिर्माण की आवश्यकता में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रेखांकित की।

माननीय शिक्षामंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा ने राष्ट्र निर्माण और श्रेष्ठ चिंतन विकसित करने, समाज को उत्कृष्ट दिशा देने तथा युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति के गौरवानुसार संस्कारित करने के प्रयासों हेतु पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के योगदान और गायत्री परिवार की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

उन्होंने कहा– 'भारत आज विश्व की तीसरी ताकत बन रहा है तो इसके पीछे शिक्षकों की शक्ति है। शिक्षक अपने विद्यार्थी को जीवनभर रोटी रोजी कमाने लायक ही नहीं बनाता अपितु उसे संस्कारित भी करता है। गुरुकुल में गुरुजन अपने शिष्यों से जैसा व्यवहार करते थे वैसा आचरण आज के शिक्षकों का हो जाए तो न केवल विद्यार्थियों का जीवन सफल होगा अपितु मेरा शिक्षामंत्री बनना भी सार्थक होगा।'

इस अवसर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2011 में प्रान्तीय स्तर पर मेरिट में आये कक्षा 5 से 12 तक के विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया। इस परीक्षा में जयपुर जिले से एक लाख पैंतीस हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया, पूरे देश में सर्वाधिक विद्यार्थियों के भाग लेने से जयपुर को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इस हेतु माननीय शिक्षामंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा ने आयोजकों को बधाई दी।

उप निदेशक (मा.शि.) जयपुर श्री ज्ञानचन्द मौर्य एवं जिला शिक्षा अधिकारी (प्रथम) श्री बद्री नारायण शर्मा ने भी समारोह को सम्बोधित किया। सम्मानित शिक्षकों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

–व.प्र.स., शिविरा

पाठक लिखते हैं.....

शिविरा पत्रिका का जनवरी, 2012 का शिक्षा का अधिकार विशेषांक पढ़ने को मिला। पूरी शिविरा टीम को इतने अच्छे व संग्रहणीय अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई यह अंक अपने आप में शिक्षा अधिकार अधिनियम, राज्य सरकार द्वारा जारी नियमों तथा समय-समय पर जारी आदेशों परिपत्रों एवं विद्वजनों के सुविचारों को संजोए सचमुच में गागर में सागर कहा जा सकता है।

डाइट हनुमानगढ़ में दिनांक 23 से 25 जनवरी 2012 के प्रधानाध्यापक प्रा.वि./उ.प्रा.वि. प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस विशेषांक पर चर्चा सत्र रखा गया। जिसमें उपस्थित सभी संभागियों ने अपने विचार रखते हुए इसे प्रधानाध्यापकों व शिक्षकों के लिए सम्पूर्ण जानकारी एक ही अंक में उपलब्ध कराने वाला तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण अंक बताया प्रशिक्षण कार्यक्रम में संदर्भ शिक्षक श्री जितेन्द्र कुमार बठला प्र.अ. रा.मा.वि. बहलोल नगर तथा श्री महेन्द्र शर्मा, प्र.अ., रा.मा.वि., श्रीनगर तथा श्री घनश्याम दास शर्मा व.व्या. डाइट हनुमानगढ़ ने इस प्रकार के विशेषांकों का समय-समय पर प्रकाशित होना जरूरी बताते हुए कहा कि इससे आम शिक्षक शिक्षा के अधिकार कानून की बारीकियों आदेशों निर्देशों को समझेगा तथा शिक्षकों के लिए यह मील का पत्थर साबित होगा। समस्त संभागी शिक्षकों ने इस अंक के प्रकाशन पर शिविरा स्टाफ को बधाई दी।

शिविरा का प्रत्येक अंक बदला हुआ एवं नवीनता लिए हुए प्रकाशित हो रहा है। शिविरा में प्रकाशित लेखों, आदेशों निर्देशों, सारगर्भित लेखों और विचारों से शिक्षक वर्ग का रुझान शिविरा पत्रिका में दिखाई देने लगा है। नये कलेवर की इस शिविरा के प्रत्येक अंक को देखकर अब हर शिक्षक का मन करता है कि वह इसे पढ़े, आत्मसात करें एवं मनन करें। शिविरा के इस नये रूप ने सभी को आकर्षित किया है।

साथ ही चंदे हेतु एक सुझाव है कि चंदे को द्विवार्षिक, त्रैवार्षिक, पंचवर्षीय आधार पर स्वीकार करना अथवा किसी भी बैंक से ऑनलाईन स्वीकार करना भी उचित रहेगा, जिससे शिविरा के ग्राहक प्रदेश में कहीं भी चालान जिसमें ग्राहक संख्या प्रिन्ट हो के द्वारा ऑनलाईन चंदा जमा करा सकें, इस प्रकार अन्य प्रक्रियाओं में लगने वाली देरी से भी बचा जा सकेगा। यदि ऐसा हो जाता है तो डाइट जैसे संस्थान इस कार्य में सहयोग हेतु तत्पर हैं। डाइट हनुमानगढ़ द्वारा 100 से अधिक शिक्षकों को सामूहिक चन्दा भेजकर उन्हें शिविरा से जोड़ा गया है।

भविष्य में शिक्षा विभाग की विभिन्न योजनाओं, प्रधानाध्यापकों के लिए विभिन्न विभागीय नियमों के विशेषांक यदि प्रकाशित हो सकें तो शिक्षक वर्ग अत्यधिक लाभान्वित होगा। यदि विशेषांक प्रकाशन संभव नहीं हो तो इन्हें एक नियमित शृंखला के रूप में प्रकाशित करने का प्रयास करें तो बहुत ही अच्छा रहेगा।

ऐसे अंक शिक्षकों अभिभावकों एवं प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले युवाओं के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय होंगे। श्रीमान् भास्कर ए. सावन्त साहब व माननीय आलोक जी गुप्ता आयुक्त महोदय के प्रयास व भावनानुरूप शिविरा के अंकों को नये कलेवर में प्रस्तुत करने पर वरिष्ठ संपादक महोदय एवं उनकी शिविरा टीम को हार्दिक बधाई।

–तुलीचन्द शर्मा
उपप्रधानाचार्य एवं समस्त स्टाफ, डाइट हनुमानगढ़

पुस्तक परिचय

कन्हैयालाल भाटी री कहाणियाँ : *सम्पादन नीरज दइया; बोधि प्रकाशन, जयपुर; प्रथम संस्करण 2011; पृष्ठ 80; मूल्य : 60 रुपये।*

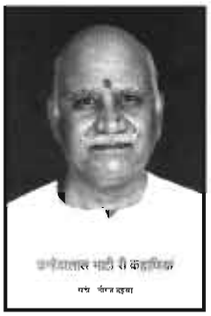

डॉ. नीरज दइया द्वारा संपादित सद्य प्रकाशित राजस्थानी कहानी संग्रह 'कन्हैया लाल भाटी री कहाणियाँ' में ख्याति प्राप्त अनुवादक कन्हैया लाल भाटी की दस राजस्थानी कहानियाँ संगृहीत हैं। जीवण रौ जथारथ, संजोग, छळावौ, मुखड़ा अर दरपण, मन रो सळ, लाडेसर, ममता री पीड़, अभाग्यौ, सांकळ एवं पगफेरो। प्रायः सभी कहानियाँ राजस्थानी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। ये कथ्य, शिल्प, भाषा एवं संवेदन के स्तर पर सशक्त कही जा सकती हैं। यथार्थ बोध कराती इन कहानियों में जीवन के विभिन्न राग-रंग, दुःख-पीड़ा, अवसाद, अंतर्पीड़ा है तो पात्रानुकूल छोटे-छोटे असरदार संवाद पात्रों के साथ न्याय करते प्रतीत होते हैं। वहीं ये कहानियाँ अन्तर्मन के आलोक को प्रकाशित करती समाज को एक नई दृष्टि प्रदत्त करती हैं।

'अभाग्यौ' व पगफेरो का आधार भाग्यवाद है। अभाग्यौ का नायक स्वयं को अभागा समझता है अतः किसी भी निर्दोष लड़की को अपने दुर्भाग्य का शिकार होने से बचाने हेतु विवाह नहीं करता। उसे संदेह है कि भावी पत्नी के साथ कुछ भी अघटित घट सकता है। 'पगफेरो' भाग्यवाद को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत करता है। नायिका के पगफेरे से घर में दिन-दूनी श्रीवृद्धि होती है परन्तु उसका पति भीमराज उसकी कुरूपता के कारण उसे कहीं भी अपने साथ नहीं ले जाता। अतः वह घुटन महसूस करती है अतः एक दिन वह रूठकर कहीं चली जाती है वहीं श्रीवृद्धि के जाने का संकेत करती है। व्यंग्य का झीना सुर बेजोड़ है।

जीवण रो जथारथ, संजोग एवं लाडेसर सामाजिक सरोकारों की कहानियाँ हैं। जीवण रो जथारथ में अनाथ सरला अपने बीते समय से इस प्रकार सामना करती है मानो दर्द का दरिया साकार होकर उसके अन्तर्मन को झकझोर देता है। जतन मासी के दुर्व्यवहार एवं अत्याचारों से पीड़ित होकर अपने सहपाठी के साथ भाग जाने की घटना आ जाती है। 'संजोग' में संतानहीन नायिका रतनी अपनी छोटी बहिन मनोहरी के बच्चे बबलू से अथाह स्नेह रखती है जिसे मनोहरी लोगों के बहकाने से अन्यथा ले लेती है। टूणे-टमकों का बहम पाल लेती है। अचानक बबलू का देहांत हो गया। संयोगवश उसी रतनी की कोख से बबलू का पुनर्जन्म 'सूरज' के रूप में होता है। मनोहरी के आँसू आ जाते हैं। रतनी कहती है 'मनोहरी औ कांई मूरख पणौ करै... औ थारौ ई तो है, इयां समझै जणै तो तूं इणनै थारै कनै ई राख पण उण बबलूड़ै नै भेजती जियांई थूं इणनै कदेई-कदेई म्हारै घरै खेलण नै भेजती रैईजै। औ सूरज बबलूड़े रो रूप ई तो है।' उदात्त भाव दर्शनीय है। लाडेसर में मां की पीड़ा अभिव्यक्त हुई है। मां तो बस मां होती है वह चाहे जन्म देने वाली मां हो या धाय मां।

'छळावो' एवं 'मनरो सळ' दोनों प्रेम कहानियाँ हैं छळावो में सपना एवं त्रिलोक दोनों सच्चा प्यार करते हुए भी अपनी वास्तविकता को छिपाते हुए अनजाने में ही प्रेम के उस सुख को खो देते हैं प्रेम के मध्य पसरते अंतराल को सशक्त रूप से प्रकट करती है, कहानी 'मन रौ सळ' में भी ऐसा ही देखने को मिलता है। फ्लैश बैक में चलती कहानी में कस्तूरी और माणक का 30 वर्षों बाद मिलना होता है। माणक कहता है, 'किस्तूरी, म्हारै में कई कमी हैं? म्हारै प्रेम री परीक्षा मत लै।' प्रेम की गर्मी महसूसते हुए भी किस्तूरी का ये कहना, आ थांरी नीं म्हारी परीक्षा है। थे पाछा जावोपरा।' अर टप-टप आँख्याँ सूँ आँसू ढळकावण लागी। पाठकीय संवेदना को झकझोर देने में सक्षम है। परम्परा में बँधी औरत के दर्द को उजागर करती एक सशक्त एवं बेजोड़ प्रेम कहानी है। 'मन री पीड़ा' स्नेहसिक्त ग्राम्य बाला खखड़ी की एक सफल अपणायत गाथा कही जा सकती है।

इस संग्रह की 'सांकळ' एवं 'मुखड़ा अर दरपण' सराहनीय कहानियाँ हैं। सांकळ की असली नायिका तो घर की नौकरानी मधुड़ी है जिस पर संयोग से सांकळ गुम जाने पर चोरी का लांछन लगा दिया जाता है जिससे उसकी जिन्दगी बर्बाद हो जाती है। माँ-बेटी के रिश्तों के कई रंग दृष्टव्य हैं। 'मुखड़ा अर दरपण' एक मनोवैज्ञानिक प्रेम कहानी है। ढळती आयु में भी पति-पत्नी की जोरदार प्रेम कहानी है जिसके मार्मिक अंश दृष्टव्य हैं, दूजी कानी दरपण है। उण मांय बा बिना बतीसी वाळौ लुगाई अर बिना बालां रै माथै आळै मिनख रौ पड़चंदौ दीख रैयो है। बै दोनूँ ई देख्यौ अर उणी नै निरखता रैया। नए शिल्प एवं संवेदना की सशक्त कहानी है।

अंत में कह सकते हैं कि भाटी की ये अंतर्मन को आलोकित करती कहानियाँ राजस्थानी कथा जगत में उचित स्थान पाएँगी। ये कथासंग्रह स्वागत योग्य है। यह कहानी संग्रह भाटी के मूर्धन्य कहानीकार कहलाने में सक्षम है। डॉ. दइया एवं भाटी, दोनों को हार्दिक बधाई !

–भंवरलाल 'भ्रमर'
रामजी की कुटिया, एम.एम. ग्राउण्ड के पीछे,
जवाहर नगर, बीकानेर

सबके साथ मिल जाएगा : *राजेन्द्र जोशी; प्रकाशक : ऋचा इण्डिया पब्लिशर्स, बिस्सों का चौक, बीकानेर; प्रकाशन वर्ष : 2011; पृष्ठ 80; मूल्य : 125 रुपये।*

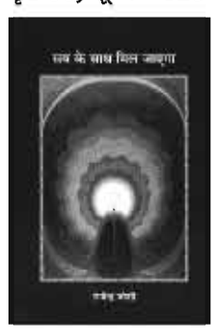

राजेन्द्र जोशी की अस्सी पृष्ठों की कविताओं का संग्रह 'सबके साथ मिल जाएगा' निश्चय ही उनकी अनुभूतियों का प्रकटीकरण है जो संग्रह के शीर्षक की भाँति ही लगता है कि 'सबके साथ मिल जाएगा।' कविता के स्थापित मानदण्डों और शैलियों से परे इन कविताओं में प्रस्तुत भाव कवि की अपनी वैयक्तिक यात्रा है जो 'नजर' से प्रारम्भ हो 'गाता है प्रभु' पर ठिठकती है, विसंगतियों से रूबरू होती हुई 'घर', 'गाँव', 'शहर के पाटों पर' श्वाँस लेती 'उजड़ते खेत', 'उधार', 'लाल बारिश', 'पानी' और 'मण्डी' से आक्रोशित हो दर्द के 'मुस्कराते चेहरे' को लिए अपनी 'तन्हाई', 'स्वप्न' और 'बचपन' की स्मृतियों के सहारे अपने गाँव-शहर तक जाकर पूर्ण होती है। सचमुच जोशी जी की कविताओं के इस

संग्रह को पढ़ना पाठक को एक अलग अनुभव प्रदान करता है, जैसे यह लगता है कि यह 'सब के साथ मिल जाएगा'।

लोकतंत्र में उपजी वर्तमान अव्यवस्थाओं, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अकर्मण्यता, चुनाव प्रक्रिया पर क्षोभ व्यक्त करते हुए कवि ने 'अखबार', 'तीसरी स्थिति', 'लोकतंत्र के मसीहा', 'फाइल की नीयति', 'कुर्सी', 'गांधीवादी', 'घोषणा पत्र', 'उधार' आदि कविताओं में अपना आक्रोश और विरोध प्रकट किया है। कहीं-कहीं कवि का व्यंग्य बड़ा मारक है जो पाठक को उद्वेलित भी करता है। सोच और कहने का एक विशिष्ट अंदाज इन रचनाओं में दृष्टिगत होता है जो मौलिकता की खुशबू से ओतप्रोत है। 'कब होंगे फुर्सत में', 'समय', 'चाँद', इस दृष्टि से पठनीय हैं। कविताओं के वैविध्य में कवि की आध्यात्मिकता और जज्बात के तेवर 'गाता है प्रभु', 'तेरा ठिकाना चाहिए', 'रेत की मंझधार आओ प्रभु', और 'तपसी' कविताओं में दिल को छूते हैं। गरीब, सर्वहारा, किसान और आम आदमी के दर्द की अभिव्यक्ति 'सरणाटा', 'पानी', 'मुस्कराता चेहरा', 'उजड़ते खेत' कविताओं में कवि ने पूरी आत्मीयता से की है।

रिश्तों का बेगानापन, आदमी की आदमीयत और संस्कारों से हो रहे अलगाव एवं मानवता आदि सामाजिक सम्बन्धों के वर्तमान स्वरूप को भी कवि ने कई कविताओं यथा– 'आदमी', 'संस्कार', 'तन्हाई', 'दर्पण', 'स्वप्न', 'आस्था', 'घर-1' आदि में प्रकट किया है। देश की राजनीति, बढ़ते आतंक के प्रति कवि की भावनाओं के कई तेवर-'एक स्कूल', 'आतंक का गाँव', पड़ौसी, 'लाल बारिश', 'मण्डी' आदि कविताओं में पूरी ताकत से उभरते हैं। शिक्षा विभाग व साक्षरता कार्यक्रम से जुड़े होने के कारण कवि ने 'युवा', 'गाँव शहर', 'झण्डा फहराया' आदि के माध्यम से कुछ संकेत और संदेश भी दिए हैं। मरु प्रदेश के निवासी होने के कारण कवि की कविताओं में धोरों की खुशबू 'धोरों का दर्द और धरती के प्रति अगाध स्नेह 'रेत की मँझधार आओ प्रभु', 'रेत का समंदर', 'आत्मा बिकती है' में उभर कर आता है वहीं 'मेरे शहर के पाटे' शृंखला शहर के भीतर के संस्कारों विशेषकर बीकानेर जैसे संस्कारित शहर की मानवीय संवेदनाओं और खुलेपन को बेबाकी से प्रदर्शित करती है।

कविताओं के इस लोक में कवि कहीं आध्यात्मिक है तो कहीं दार्शनिक, कहीं उपदेशक है तो कहीं प्रकृति प्रेमी कहीं कुंठित है तो कहीं आक्रोशित और उदार। श्री जोशी के रचना संसार की यह व्यापकता पाठक को रोमांचित करती है। वस्तुतः ये कविताएँ किसी संग्रह या काव्य के उच्च मानदण्डों की स्थापना हेतु सप्रयास रची हुई नहीं प्रतीत होती वरन् कवि की अपनी मौज और अनुभूत संवेदनाओं का परिणाम है। इसीलिए कवि का वैचारिक प्रवाह कहाँ से प्रारम्भ होकर कहाँ खत्म होगा यह प्रकृतिस्थ है, इस पर स्वयं कवि भी मौन है। शायद इसीलिए उन्होंने अपना प्राक्कथन या वक्तव्य पुस्तक में कहीं भी नहीं लिखा है। राजेन्द्रजी और उनकी रचनाधर्मिता के बारे में श्री अनिरुद्ध उमट ने सही लिखा है कि 'इस कर्मक्षेत्र में निरंतरता उन्हें और वयस्क बनाएगी क्योंकि कविता का रियाज केवल कविता लिखने में ही निहित है।' प्रकाशन और मुद्रण की दृष्टि से पुस्तक सुन्दर बन पड़ी है। भावों के विविध रंगों में रची-बसी ये अनुभूतियाँ कविता के स्वरूप में पठनीय हैं। जोशी जी के प्रथम काव्य संग्रह हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

–डॉ. कैलाश मण्डेला, वरिष्ठ व्याख्याता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
शाहपुरा, भीलवाड़ा (राज.)

सुनहरा उपवन मेरा : *रामजीलाल घोड़ेला 'भारती'; चन्द्र साहित्य प्रकाशन, लूणकरणसर-334603, जिला बीकानेर; प्रकाशन संस्करण 2009; पृष्ठ सं. 32; मूल्य : 25.00 रुपये।*

'सुनहरा उपवन मेरा' शीर्षक से समीक्ष्य बाल कविता संग्रह में तेरह बाल कविताएँ प्रस्तुत की गई हैं। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षा के बालक-बालिकाओं की समझ एवं अभिव्यक्ति कौशल को दृष्टि में रखते हुए इन बाल कविताओं को सरल शब्दों एवं सुग्राह्य बालोचित तुकबंदी के साथ रचने में रचनाकार सफल रहे हैं। इन कविताओं के रचयिता कवि श्री रामजीलाल घोड़ेला 'भारती' शिक्षक होने के कारण बाल मनोविज्ञान व उनके भीतर के दर्शन को अहसासने में समर्थ हैं मगर छोटे बच्चों के लिए लिखना बड़ा मुश्किल होता है। चार साल से आठ नौ साल के बच्चे कैसी कविताएँ पसन्द करते हैं, इस तथ्य से बच्चों से सरोकार रखने वाला हर व्यक्ति परिचित होता है। हम चाहे शिक्षक हों और चाहे कुछ और, मगर सामाजिक प्राणी होने के कारण बच्चों से जरूर वास्ता रखते हैं। उनकी बालोचित चंचलताओं को देखते हैं और मन मोद मनाते हैं। भारती जी शिक्षक होने के कारण इसमें विशेष योग्यता रखते हैं और इसी विशेष योग्यता के कारण वे इतनी सुन्दर कविताएँ रच पाये हैं।

पहली कविता मेरा प्यारा देश में भारत की भव्यता, सुन्दरता एकता का सांगोपांग चित्रण है तो वीर बालक कविता भारतीय बालक को स्वाभिमान, विद्वान, श्रमवान, समर्थवान और सेवावान बनाने का अद्भुत संदेश देती है। विश्वशांति का संदेश देती कविता मेरा घर प्रेम और सद्भावना का पाठ भी पढ़ाती है। इस बीच छुक-छुक करती बच्चों की रेल मनोरंजन के साथ मेल-मुलाकात का पाठ भी पढ़ाती हैं। गर्मी के तेवर और सुनहरा उपवन मेरा कविताएँ ऋतु और पर्यावरण को स्पष्ट करती हैं। मेरी पुस्तक कविता में ईशवंदना से लेकर महापुरुष, पेड़-पौधे, कविता-कहानी सब कुछ है। गाय कविता गौमाता का महत्त्व बताती है। बच्चों की अभिलाषा 'धरा को स्वर्ग बनाएँ' कविता में प्रकट होती है। तो उसकी राष्ट्रभक्ति 'मेरा प्यारा झण्डा' में सामने आती है। इसी प्रकार मेरी अभिलाषा और पेड़ कविताएँ भी सुन्दर भावभूमि लिए है।

सभी कविताएँ बाल मन को उद्वेलित करने और नन्हें-मुन्नों को कंठ देने वाली है। वस्तुतः बाल बनकर बाल कविताएँ ही बालकों को भाती हैं और इसमें रचनाकार सफल रहे हैं।

–बजरंग सारस्वत
पुरानी लाइन, गंगाशहर, बीकानेर

विमान जो उड़ेगा, तैरेगा और दौड़ेगा

मन करे तो गैरेज में रखा लो

कैलिफोर्निया स्थित आईकॉन कंपनी ने आईकॉन ए-5 नाम का एक फोल्डिंग प्लेन बनाया है। यह प्लेन पानी में तैर सकता है। हवा में उड़ सकता है। जमीन पर चल सकता है। दो सीट वाले इस विमान के पंख फोल्ड भी हो सकते हैं। इसे गैरेज में भी रखा जा सकता है। 2012 के मध्य में इसका उत्पादन शुरू हो जाएगा। इसे उड़ाने के लिए अलग लाइसेंस लेना होगा। हालांकि इसके लिए विशेष ट्रेनिंग की जरूरत नहीं है। 10 हजार फीट की ऊँचाई पर उड़ने वाले इस विमान की गति 192 किमी. प्रति घंटे की है। कीमत 73.67 लाख रुपए है।

10 सेकंड में जान जाएँगे सिर की चोट कितनी गहरी

सिर पर लगी चोट कितनी गहरी है, इसका पता लगाने के लिए अब सीटी स्कैन का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ और ऑफिस ऑफ नेवल रिसर्च आर्मी के लिए ऐसा गैजेट तैयार कर रही है, जो सिर्फ 10 सैकंड में बता देगा कि सिर पर चोट कितनी गहरी है।

कैसे करेगा काम ? मरीज के सिर पर फेरना होगा। 10 सेकंड के बाद ये इन्फ्रारेड इमेजिंग तकनीक की मदद से दिमाग की तस्वीरें मॉनिटर पर दिखाई देंगी।

हमारे लिए फायदा : सिर की चोट जानने के लिए अब तक सीटी स्कैन की जरूरत होती है, लेकिन ये सुविधा हर जगह मौजूद नहीं होती। जब तक चोट का सही पता लगता है, देर हो चुकी होती है। अब ऐसा नहीं होगा। चोट का पता लगते ही सही प्राथमिक उपचार दिया जा सकेगा।

कैंसर मरीजों को गंजेपन से मिलेगी मुक्ति

अब कैंसर से मरीजों को गंजेपन से छुटकारा मिल सकेगा। कीमोथैरेपी ट्रीटमेंट के दौरान मरीजों के सिर के बाल झड़ने लगते हैं, लेकिन एक विशेष प्रकार की कैप पहनने से इससे निजात पाई जा सकती है। यह टोपी अभी अमेरिका में मिलती है। संभावना है कि ये इस साल तक हमारे देश में भी उपलब्ध होगी।

यह टोपी क्रायोजेल की मदद से सिर की त्वचा का तापमान कम कर देती (लगभग 50 डिग्री कम) है। इससे सिर में मौजूद रक्त धमनियों में कीमोथैरेपी की ड्रग की वजह से कोई रुकावट नहीं आती। इस वजह से बाल नहीं झड़ते।

विक्रमादित्य करेगा नौसेना को मजबूत

नौसेना के बेड़े में इस साल जहाज आईएनएस विक्रमादित्य शामिल हो जाएगा। इसे रूस से खरीदा गया है। रूसी नौसेना में इसका नाम एडमिरल गोर्शकोव था। दिसम्बर 2012 में शामिल होने वाला आईएनएस विक्रमादित्य दूसरा भारतीय एयरक्राफ्ट कॅरियर होगा। यह आईएनएस विराट की जगह लेगा। इस पर 16 से 24 मिग 29 विमान और 10 हेलिकॉप्टर होंगे।

भारतीय नौसेना के बेड़े में इसके शामिल होने से मजबूती मिलेगी। इसकी ऊँचाई 20 फ्लोर की बिल्डिंग के बराबर है। लम्बाई तीन फुटबॉल ग्राउण्ड के बराबर है। विमान रखने के लिए बना हैंगर 130 मीटर लम्बा है। जहाज में 2600 कमरे हैं, जिसमें 2000 क्रू मेंबर रह सकते हैं। इसका अपना एयरपोर्ट, हॉस्पिटल, एंटरटेन्मेंट सेंटर और वर्कशॉप है।

बिना वायर चार्ज होगी कार

अब इलेक्ट्रिक कार भी वायरलेस चार्जर से चार्ज की जा सकेगी। बी-क्लास मर्सडीज और निसान की नई कारें-लीफ और शेवी वोल्ट 2012 में वायरलेस चार्जिंग सिस्टम की सुविधा लेकर आएँगी। यह तकनीक वायरलेस चार्जिंग कंपनी इवाट्रॉन ने इजाद की है। कार को चार्ज करने के लिए सिर्फ उसे इंडक्टिव चार्जिंग मैट पर पार्क करना है। सेंसर की मदद से गाड़ी के पिछले पहिए मैट पर चार्ज करने वाली जगह पर जम जाते हैं। चार्ज शुरू और बंद करने के लिए टचस्क्रीन बटन दबाना होता है। इसी तकनीक का इस्तेमाल अब और भी ऑटोमोबाइल कंपनियाँ करेंगी। रोल्स रॉयस 102 इएक्स फेंटम भी अब वायरलेस चार्जिंग सिस्टम का इस्तेमाल करने वाली है।

लेपटॉप स्टार्ट होगा 8 सैकंड में

विंडोज 7 के बाद माइक्रोसॉफ्ट का नया ऑपरेटिंग सिस्टम विंडोज-8 आने वाला है। विंडोज का यह पहला ऑपरेटिंग सिस्टम है जो पर्सनल कम्प्यूटर, लेपटॉप और टेबलेट तीनों को सपोर्ट करेगा। इसकी स्पीड इतनी तेज है कि लेपटॉप को शुरू होने में सिर्फ 8 सेकंड का समय लगेगा। इसमें पहली बार मेट्रो इंटरफेस है, जो अब तक विंडोज फोन में इस्तेमाल किया जाता था। इससे एप्लीकेशन्स भी काफी तेजी से रन होंगे। लॉगिन करने के लिए पासवर्ड टाइप करने की जगह स्क्रीन पर इमेज को टच करके लॉगिन किया जाएगा। अच्छी बात ये है कि जिस कंफिगरेशन पर विंडो-7 चल रहा है, उसी पर विंडोज-8 चलेगा।

कहीं भी टच करो मोबाइल चलेगा

नोकिया अपना नया फोन जैम लाने वाला है। खासियत यह है कि इसकी पूरी बॉडी टचस्क्रीन है। यानी इसे कहीं से भी टच कर चलाया जा सकता है। चार्जर सॉकेट भी टचस्क्रीन है। फोन का हर भाग यूजर-इंटरेक्टिव है। इसमें जीएसएम और 3 जी सुविधा भी है। फोन के जल्द बाजार में आने की संभावना है। सब कुछ एक टच से नियंत्रित किया जा सकता है, इसीलिए इसे आप एक टच फोन कह सकते हैं।

अब स्कैन भी करेगा माउस

जल्द ही आपको डॉक्यूमेंट स्कैन करने के लिए स्कैनिंग मशीन पर निर्भर नहीं रहना होगा। एलजी का एलएसएम-100 स्मार्टस्कैन माउस अब स्कैनर की भूमिका भी निभाएगा।

कैसे करेगा काम? माउस के साइड में दो बटन होते हैं, जिन्हें दबाकर स्कैनर चालू कर सकते हैं। स्कैन करने के लिए पेपर पर माउस फेरना होगा। कुछ पलों में कम्प्यूटर पर स्कैन किया हिस्सा दिखने लगेगा, जो हिस्सा स्कैन नहीं हुआ हो उसे आप स्क्रीन पर देखकर फिर से स्कैन कर सकते हैं। अगले साल से यह बाजार में लगभग 3500 रुपये में मिलेगा।

डीआरडीओ बनाएगा अब रोबोटिक जवानों की सेना

डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीआरडीओ) 2012 में रोबोटिक जवान और खच्चर तैयार कर लेगा।

इसे भारतीय सेना में मानवरहित लडाकू सिस्टम में शामिल किया जाएगा। ये रोबोट आम सैनिकों की तरह काम करेंगे। खासतौर पर इनका इस्तेमाल गहरी खाई, पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में किया जाएगा। जिन रास्तों पर सैनिकों का चढ़ना खतरनाक हो सकता है, वहाँ ये रोबोट आसानी से पहुँच सकेंगे। डीआरडीओ इन रोबोट्स के लिए विशेष आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर काम कर रहा है। इन रोबोट्स को डीआरडीओ के फ्यूचीरिस्टिक सोल्जर एज ए सिस्टम फिनसास के तहत तैयार किया जा रहा है।

एक टीका करेगा हर फ्लू की छुट्टी

मौसम बदला नहीं कि नाक बहनी शुरू हो गई, इस समस्या से हर कोई कभी न कभी पीड़ित रहता है। लेकिन अब वैज्ञानिक एक ऐसा टीका बनाने में कामयाब रहे हैं जो हर तरह के फ्लू पर रामबाण की तरह असर करेगा। सेंट बार्ट एंड रॉयल लंदन हॉस्पिटल के वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि इस नए टीके से व्यक्ति जीवन भर फ्लू की मार से बचा रह सकता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि बस उन्हें अब प्रशासनिक मंजूरी का इंतजार है।

वैज्ञानिकों ने प्रयोग के दौरान पाया कि फ्लू से लड़ने के लिए विकसित किया गया उनका टीका सामान्य सर्दी जुकाम से लेकर घातक एवियन फ्लू और स्वाइन फ्लू पर भी जबरदस्त असर करता है। वैज्ञानिकों ने बताया कि फ्लू के विषाणु सबसे ज्यादा परिवर्तनशील होते हैं। बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं पर यह बीमारी सबसे ज्यादा असर डालती है ऐसे में उन्हें इस टीके से सुरक्षित रखा जा सकता है। हाल ही में वैज्ञानिकों ने फ्लू वी नामक इस नए टीके का चिकित्सीय परीक्षण किया है और पाया कि यह आश्चर्यजनक रूप से फ्लू के लक्षणों को काबू करने में कामयाब रहा है। अब इन नतीजों को मंगलवार को वाशिंगटन में आयोजित इनफ्लूएंजा कांग्रेस के अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में रखा जाएगा। दवा निर्माता कंपनी ने बताया कि अगर बड़े पैमाने पर चिकित्सीय परीक्षण करने के बाद सकारात्मक नतीजे आते हैं तो टीके को अगले पाँच साल के भीतर बाजार में उपलब्ध करा दिया जाएगा।

इस टीके को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले व विषाणु रोग विशेषज्ञ जॉन ऑक्सफोर्ड कहते हैं, 'यह टीका निश्चित रूप से असरदार है। हम इस पर और अध्ययन कर रहे हैं ताकि उसकी उपयोगिता का और विस्तार किया जा सके।

अल्जाइमर्स का पता देगी नाक

अल्जाइमर्स का पता लगाने के लिए अब आपको किसी और टेस्ट पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं होगी। आपकी नाक ही यह बता देगी कि आपमें अल्जाइमर्स का खतरा है या नहीं। जर्मन वैज्ञानिकों की एक टीम ने अपने नए परीक्षण के आधार पर यह दावा किया है।

उन्होंने इस खोज को बेहद महत्वपूर्ण बताते हुए कहा है कि पहले अल्जाइमर्स का पता लगाने में काफी वक्त लगता था। ज्यादातर मामलों में जब तक इस बीमारी की पोल खुलती है, तब तक यह मस्तिष्क को बहुत ज्यादा नुकसान पहुँचा चुकी होती है। लेकिन अब अल्जाइमर्स के लक्षण दिखने से पहले ही इसके बारे में पता लगाया जा सकेगा। जर्मनी के टेक्निशि यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञों ने बताया कि अल्जाइमर्स के मरीजों के दिमाग में 'टॉ' नामक एक जहरीला प्रोटीन पाया जाता है। यह प्रोटीन धीरे-धीरे याददाश्त को कम करता है।

पर्किंसन के इलाज की जगी आस

दुनियाभर में लाखों लोग पर्किंसन से पीड़ित हैं और इलाज के अभाव में उनकी जिंदगी किसी अभिशाप से कम नहीं होती। लेकिन एक नई शोध में इस बीमारी के इलाज की आस जगाई है। शोध के बाद न्यूयॉर्क के सोलन केटेरिंग इंस्टीट्यूट ने दावा किया है कि मनुष्य के स्टेम सेल में परिवर्तन करके पर्किंसन की बीमारी को दूर किया जा सकता है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि चूहों पर किए गए शोध में इस बीमारी से लड़ने के सकारात्मक परिणाम मिले हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक पहले तो उन्होंने मनुष्य की एम्ब्रोयिक स्टेम सेल को नर्व कोशिका में परिवर्तित कर दिया। इसके बाद इन कोशिकाओं को चूहों में प्रतिरोपित किया गया। चूहों के दिमाग से डोपामाइन का स्राव हुआ जिससे पर्किंसन के लक्षणों में गिरावट देखी गई। मालूम हो कि नर्व कोशिका से ही मस्तिष्क में डोपामाइन बनता है जो पर्किंसन को कम करने में कारगर है।

चूहों के अलावा वैज्ञानिकों ने यह शोध हेसस बंदरों पर भी किया। इस प्रजाति के बंदरों की बायोलॉजिकल संरचना मनुष्यों से काफी मिलती है, इसलिए इंसान पर इसे आजमाने से पहले वैज्ञानिकों ने इन पर यह अध्ययन किया। हालांकि इसके परिणामों का अब तक अध्ययन नहीं किया गया है। शोधकर्ताओं का दावा है कि इसी आधार पर मनुष्य के स्टेम सेल में भी परिवर्तन कर इस बीमारी के लक्षणों को पनपने से रोका जा सकेगा। उन्होंने कहा कि इस दिशा में शोध की तैयारी भी की जा रही है। गौरतलब है कि वर्तमान में इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। इस अध्ययन के प्रमुख शोधकर्ता डॉक्टर स्टडर और उनकी टीम एक नए कोशिका के निर्माण में लगी है। स्टडर ने कहा, 'हम इस तकनीक को नई कोशिकाओं के इस्तेमाल पर आधारित थेरेपी के रूप में विकसित करने की कोशिश में लगे हैं जो इंसानों को इस बीमारी से निजात दिलाएगी।' अनुमान है कि एक साल में यह कोशिका बनाने में कामयाबी मिल जाएगी। यूनिवर्सिटी ऑफ एडिनबर्ग के स्टेम सेल वैज्ञानिक टिलो कुनाथ ने कहा कि पर्किंसन के इलाज में यह शोध एक लंबी छलांग है।

पेसमेकर बोलेगा, पेट भर गया भाई !

आंखों के सामने पसंदीदा पकवान देखकर मन पर काबू नहीं रख पाते ? अगर हाँ तो अमेरिकी कंपनी ने खास आप जैसे लोगों के लिए 'एबिलिटी' नामक ऐसा गैस्ट्रिक पेसमेकर बनाया है, जो दिमाग तक पेट भरा होने का संदेश पहुँचाता है। इससे इनसान कम खाता है और उसे वजन नियंत्रित रखने में मदद मिलती है। निर्माताओं के मुताबिक क्रेडिट कार्ड के आकार का 'एबिलिटी' अत्याधुनिक फूड सेंसर और इलेक्ट्रोड से लैस है। इसे एक मामूली सर्जरी के जरिए पेट में तैनात किया जाता है। खाना मिलने पर इसमें लगे सेंसर सक्रिय हो जाते हैं और इलेक्ट्रोड को विद्युतीय सिग्नल जारी करते हैं। सिग्नल मिलने पर पास की एक तंत्रिका हारमोन में बदलाव करने लगती है, जिससे दिमाग को भूख शांत होने का संदेश जाता है।

'डेली मेल' की मानें तो 'एबिलिटी' मोटापे के अलावा डायबिटीज और हृदयरोगों को दूर रखने में भी मददगार साबित होगा। इससे लोग सामान्य मात्रा में डाइट लेने का प्रशिक्षण हासिल कर सकेंगे। अखबार के अनुसार 'एबिलिटी' परीक्षण की कसौटी पर खरा उतरा है। यंत्र लगवाने के बाद प्रतिभागियों ने 45 फीसदी तक कम खाना खाया। इससे उन्हें पाँच किलो वजन घटाने में मदद मिली। 10,000 पौंड कीमत वाले इस यंत्र को जल्द चिकित्सा जगत को उपलब्ध करा दिया जाएगा।

भामाशाह

उदयपुर

रा.मा.वि., गिरिवर पोल, भीण्डर को सेक्रेट्री महोदय राजस्थान एज्युकेशन प्रोस्पेरेटी सोसायटी भीण्डर से 25 सेट लोहे के स्टूल एवं टेबल सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि., कानपुर** को श्री एल.एल. कनेरिया से छात्र-छात्रा ड्रेस नग-4 लागत 1000 रुपये, श्रीमती कौशल्या राजेश सोलंकी से स्टेशनरी पेन, रजिस्टर 50 नग लागत, 1000 रुपये, श्री नारायण डांगी से मल्टी मीडिया स्पीकर लागत 1000 रुपये, श्री मोतीलाल डांगी से कम्प्यूटर कक्ष में रंग-रोगन लागत 1000 रुपये, सर्वश्री देवीलाल खटीक, घनश्याम सुथार से प्रत्येक से कम्प्यूटर कक्ष में विद्युत फिटिंग विस्तार हेतु 1000 रुपये, सर्वश्री पन्नालाल शर्मा, खेमराज मेनारिया, श्रीमती चन्द्रकान्ता सेठ से प्रत्येक से अमृत कलश हेतु 1000 रुपये, श्री गेहरी लाल डांगी से कास्या पत्थर 8×2 के चार नग लागत 1000 रुपये, श्री सुरेश सेरावत (उप सरपंच) से माइक सैट (स्पीकर 2 नग), एम्प्लीफायर-1, माउथ-1 लागत 9000 रुपये, श्री मदनलाल डांगी (पूर्व उप सरपंच) से छात्र शिक्षक पुरस्कार हेतु 3000 रुपये, मेवाड़ शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय से जाजम 12×8 के 2 नग लागत 1000 रुपये, महारानी बी.एड. कालेज, देबारी तथा अरावली बी.एड. कालेज कालका माता रोड प्रत्येक से जाजम 12×8 के दो-दो नग लागत 1500 रुपये। श्री राम बी.एड. कालेज आमड उदयपुर से अमृत कलश लागत 3500 रुपये, श्री मदनलाल डांगी से कक्षा दसवीं की विदाई पर मूमेन्टो हेतु 2000 रुपये, कक्षा दसवीं छात्र-छात्राओं द्वारा भेंट दो आराम कुर्सी संस्था प्रधान कक्ष हेतु लागत 1200 रुपये, श्री नारायण डांगी द्वारा पानी की टंकी हेतु 5000 रुपये, श्री मांगीलाल चंदेल से 5 सिलिंग फेन 'चेतक' लागत 4000 रुपये, श्री अनिल कुमार, मदनलाल द्वारा 36,500 रुपये की लागत से छात्र-छात्राओं हेतु पीने के पानी की टंकी का निर्माण करवाया गया।

श्रीगंगानगर

रा.मा.वि., 65 जी.बी. पं.स. अनूपगढ़ को जगपाल सिंह भिंड से वाटर कूलर लागत 17,200 रुपये पानी की टंकी लागत 1500 रुपये, पानी सप्लाई की मोटर लागत 3500 रुपये, पाइप व अन्य सामान लागत 1350 रुपये तथा फिटिंग व लेबर लागत 1000 रुपये प्राप्त हुए। श्री हरदेव सिंह मान से विद्यार्थियों के बैठने के लिए फर्नीचर लागत 17,000 रुपये प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., 10 एल.एम. तहसील अनूपगढ़** को बहादर राम श्योराण से वाटर कूलर लागत 20,000 रुपये, सहीराम जाखड़ से पानी की टंकी लागत 3,800 रुपये, ग्रामीणों के जन सहयोग से मेज-स्टूल लागत 50,700 रुपये प्राप्त हुए।

चित्तौड़गढ़

रा.उ.प्रा.वि., मानसिंह जी का खेड़ा में श्रीमती मधुमति वैष्णव द्वारा 1,11,000 रुपये की लागत से सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया गया।

चूरू

रा.मा.वि., बूंटिया को श्री बहादुर राम मीणा से लोहे की दो बड़ी अलमारी (6.5'×3'×19'') लागत 11,000 रुपये। **रा.मा.वि., खुडेरा बड़ा** में विद्यार्थियों एवं जनसहयोग से 21,000 रुपये की लागत से सरस्वती मंच का निर्माण करवाया गया, श्री औंकारमल खीचड़ से छः पंखे, छः दीवार पंखे (फिटिंग सहित) लागत 21000 रुपये, श्री चन्द्राराम प्रजापत से एक छत पंखा प्राप्त हुआ। **रा.मा.वि., काकलासर** को विशिष्ठ अतिथि श्री बोहरा से छात्र-छात्राओं को पुरस्कार स्वरूप 1100 रुपये प्राप्त हुए, श्री जितेन्द्र सिंह से टेबल-स्टूल 40 सैट लागत 32,000 रुपये, श्री रामकरण से कम्प्यूटर सैट लागत 10,000 रुपये श्री दयाराम से लैक्चर स्टैण्ड लागत 5000 रुपये, श्री सागरनाथ से माइक सैट लागत 8100 रुपये, श्री रामसिंह से एक अलमारी लागत 5000 रुपये, श्री पेपूराम नाई से टेबल-स्टूल 4 सैट लागत 3200 रुपये, सर्वश्री हरखाराम सहू, सुगनाराम भंवरिया, हरलाल भंवरिया, श्योलाराम सारण, गोपालराम कड़वासरा से प्रत्येक से एक-एक छत पंखा लागत 5500 रुपये प्राप्त हुआ। **रा. रतन लाल मोहता उ.प्रा.वि., राजगढ़** को श्री हरिसिंह चाहर से राजस्थान फुटबाल टीम के 18 खिलाड़ियों को गणवेश (ट्रैक सूट, टी शर्ट, कच्छा व मोजे) व प्रशिक्षकों व अन्य सदस्यों को केवल ट्रैक सूट भेंट। **रा.प्रा.बा. विद्यालय, छापर** को श्री नरेन्द्र कुमार नाहटा द्वारा 74 बालिकाओं को पोशाकें लागत 10,730 रुपये तथा गैस चूल्हा लागत 820 रुपये। **रा. पेड़ीवाल उ.प्रा.वि., छापर** में स्व. कन्हैयालाल दुधोड़िया परिवार द्वारा रेक 5 (दर 2500 रुपये प्रति रेक) लागत 12500 रुपये, स्वेटर 255 (दर 125 रुपये प्रति स्वेटर) लागत 31,875 रुपये, नाली निर्माण एवं टायलट निर्माण लागत 12,500 रुपये।

जयपुर

रा.बा.उ.मा.वि., साँभर लेक में साँभर क्लब सेवा ट्रस्ट कलकत्ता के आर्थिक सहयोग से छः कक्षा-कक्षों का निर्माण करवाया गया है तथा सद संस्कार समिति रमणनाथ जी महाराज के द्वारा 32 छात्राओं को शाला पोशाक वितरित की। **रा.मा.वि., जयचन्दपुरा** को श्री भैरूलाल जी एवं जगदीश प्रसाद दीदरवाल द्वारा 1,21,000 रुपये की लागत से 155 सैट स्टील के फर्नीचर (टेबल+स्टूल) प्राप्त हुए। **रा.आदर्श उ.प्रा.वि., मण्ढा** को श्री धनसिंह शेखावत (सरपंच) से एक रेकदार बड़ी लोहे की अलमारी - 5,000 रुपये, एक बड़ी ऑफिस टेबिल - 1700 रुपये, गद्दीदार 5 कुर्सियाँ - 4000 रुपये, दो कमरों में बिजली फिटिंग - 3000 रुपये। **रा.प्रा.वि., लोहरवाड़ा** में श्रीमती रुकमणी देवी अग्रवाल द्वारा 1,98,000 रुपये की लागत से माँ सरस्वती का मंदिर निर्माण व प्रतिष्ठा कराई। सर्वश्री सूणीलाल यादव, नारायण व हनुमान जी मेहता, राम सहाय व मदनलाल कुड़ावत, शिव भगवान व मोहनलाल यादव, जगदीश प्रसाद यादव, कमल व जगदीश प्रसाद, महादेव जी व नवल जी, कुड़ावत, किशनलाल (पूर्व उप सरपंच) व कैलाश यादव, श्रीमती गुटली देवी, मंगल चन्द, मुक्तिलाल एवं हरिनारायण अग्रवाल तथा प्रभुदयाल अग्रवाल (सरपंच पति) प्रत्येक से एक-एक पखा तथा प्रत्येक की लागत 1280 रुपये प्राप्त हुए।

जोधपुर

रा.उ.मा.वि., जालम सिंह का हत्था को सर्वश्री बाबूलाल साखला मेवालाल सारण से 10-10 हजार रुपये तथा विद्यालय के समस्त स्टाफ व छात्रों के सहयोग से सीढ़ियाँ बनवाई लागत 60,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., डोली** को श्री पुखराज गौड़ से एक ऑफिस टेबल, श्री दुर्गाराम मेघवाल से एक अलमारी, श्री त्रिलोकराम पटेल से लोहे की फाटक, श्री पुरखाराम पटेल से बिजली फिटिंग व मरम्मत। **रा.मा.वि., बाँवरला** को ग्रामवासी से 14 छत पंखा लागत 11,200 रुपये, अनाज भंडारण की 03 कोठी लागत 2300 रुपये, श्री गंगासिंह (व.अ.) से पानी की मोटर एक लागत 2900 रुपये। **रा.मा.वि., सरेचाँ** को एसबीआई (एनएलयू शाखा) से पाँच छत पंखे प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., बासनी हरिसिंह** में श्री रामस्वरूप राव द्वारा 1,40,000 रुपये की लागत से शीतल जल मंदिर का निर्माण करवाया गया। श्री शिवराम खोजा से एक लोहे की अलमारी (डबल लॉक) लागत 8500 रुपये, श्री राकेश भार्गव से एक अलमारी लागत 4000 रुपये। **रा.उ.प्रा. वि., जाटी-सींव, डांवरा** को श्री राजूराम एवं नैनाराम माचरा से 6,000 रुपये नकद प्राप्त हुए।

प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक आलोक गुप्ता द्वारा डिपार्टमेंट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित एवं कोटावाला ऑफसेट, 82, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : आलोक गुप्ता

जयपुर : पं. श्रीराम शर्मा आचार्य उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान एवं भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रान्तीय पुरस्कार समारोह में माननीय शिक्षा मंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा के साथ सम्मानित शिक्षक।

बाड़मेर : जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, बाड़मेर डॉ. वीना प्रधान राष्ट्रीय उपभोक्ता संरक्षण दिवस पर राजकीय मु.भी.छा. उ.मा.वि., गाँधी चौक के छात्र दिलीप सिंह को नकद पुरस्कार प्रदान करते हुए।

बीकानेर : राजस्थानी कृति 'कन्हैयालाल भाटी री कहाणियां' का लोकार्पण 27 दिसम्बर, 2011 को महापौर श्री भवानीशंकर शर्मा, ने किया। श्री कन्हैयालाल भाटी को सम्मान-पत्र भेंट करते अतिथिगण।

कोटा : 14वीं राजस्थान बटालियन एन.सी.सी. कोटा के कमान अधिकारी कर्नल डी.आर.एस. शक्तावत रा.मा.वि., आवासन मण्डल केशवपुरा के वार्षिकोत्सव में बालिका को सम्मानित करते हुए।

श्रीगंगानगर : सेठ रामदयाल राठी राजकीय उ.मा. विद्यालय, सूरतगढ़ में राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के अवसर पर उपस्थित अतिथि एवं स्वयंसेवक।

भीलवाड़ा : राजकीय उ.मा.वि., सूठेपा, भीलवाड़ा में कैरियर सम्बन्धी प्रश्नोत्तरी – बालिकाएँ प्रश्न-मंजूषा में अपनी जिज्ञासा प्रश्न स्लिप डालते हुए, शिक्षकगण के साथ में हैं प्रधानाचार्य ओ.पी. झँवर।

डाक पंजीयन संख्या
RJ/JPC/M-29/2011-13

शिविरा पत्रिका (मासिक) फरवरी, 2012
प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2012 पृष्ठ 52
प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

समाचार-पत्र पंजीयन संख्या
10350/66

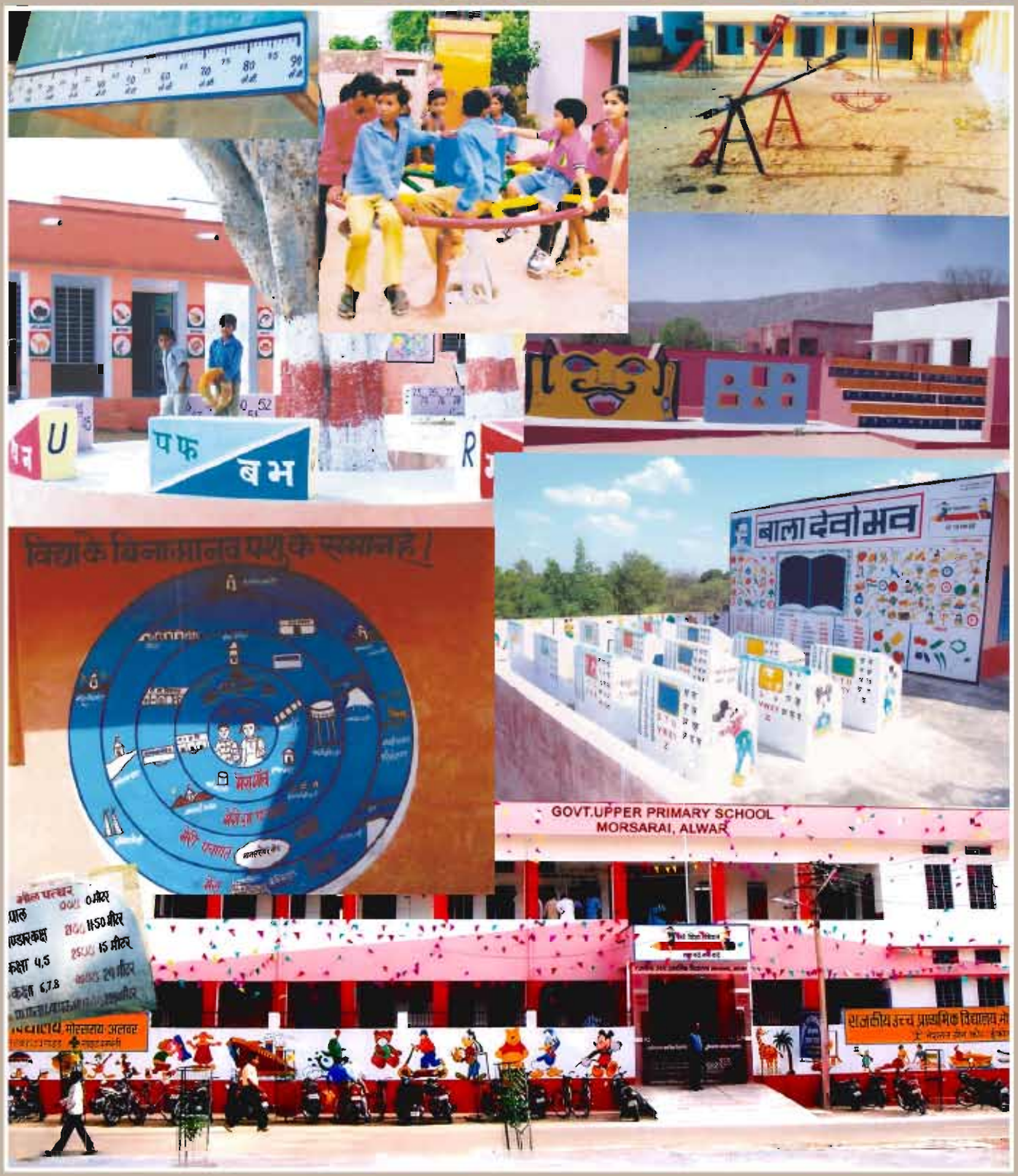

अंतिमावरण फोटो सौजन्य : श्री राजेन्द्र कुमार, शै.प्र.अ., कार्यालय उप निदेशक मा. शिक्षा, जयपुर